सामाजिक अध्ययन

कक्षा - छः

मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम

सामाजिक अध्ययन

कक्षा छः

(प्रायोगिक संस्करण)

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल

2001

आपस की बात

मध्य प्रदेश की माध्यमिक शालाओं में विज्ञान शिक्षण में नवाचार करने का एक प्रयास 1972 में दो स्वयं-सेवी संस्थाओं (किशोर भारती, बनखेड़ी व मित्र मंडल केंद्र, रसूलिया) द्वारा शुरू हुआ था। यह था 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम'। शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए 1982 में एकलव्य संस्था बनी। शालाओं में नए परिप्रेक्ष्य से सामाजिक अध्ययन, भाषा व गणित सीखने-सिखाने की तैयारी एकलव्य ने शुरू की।

वर्ष 1986-87 में, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से माध्यमिक शालाओं के लिए सामाजिक अध्ययन विषय में एक नवाचार कार्यक्रम शुरू किया गया। इसके अन्तर्गत प्रति वर्ष कक्षा 6,7 व कक्षा 8 की प्रायोगिक पाठ्य सामग्री एकलव्य द्वारा विकसित की गई व 3 ज़िलों की 9 माध्यमिक शालाओं में लागू की गई। छात्रों व शिक्षकों की भागीदारी से प्रायोगिक पाठों की कमियां व खूबियां उभरकर आईं। विषय के विशेषज्ञों व शिक्षा में रुचि रखनेवाले कई लोगों ने भी इन पाठों की समीक्षा की। इन विवेचनाओं के आधार पर प्रायोगिक पाठ्य सामग्री का संशोधन किया गया व प्रति वर्ष एक-एक कक्षा की पाठ्यपुस्तक का संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया।

पाठ्य सामग्री के अलावा परीक्षा प्रणाली में भी संशोधन किए गए। इसमें सबसे महत्वूपर्ण है "खुली पुस्तक परीक्षा" जिसमें परीक्षा में पुस्तक ले जाने की अनुमति है। सामाजिक अध्ययन में ऐसा प्रयोग स्कूली स्तर पर पहली बार किया गया है। अतः ऐसी परीक्षा के उद्देश्य और स्वरूप के बारे में भी कुछ कहना ज़रूरी है।

सामाजिक अध्ययन के संदर्भ में खुली पुस्तक परीक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं - पुस्तक से जानकारियां ढूंढने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता व सोच समझ के आधार पर अपने विचार अभिव्यक्त करने की क्षमता का मूल्यांकन करना। आशा है कि ऐसी परीक्षा से बहुत सारी जानकारी याद करने का बोझ बच्चों पर से हट जाएगा।

वर्ष 1989 से प्रायोगिक पाठ्यक्रम से पढ़े हुए छात्र माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा देते आ रहे हैं। उनके मूल्यांकन के दौरान बहुत सी ऐसी बातें समझ में आईं जिनसे पाठों को और सुधारने में मदद मिली है। इन्हीं प्रक्रियाओं से सुधारा हुआ कक्षा छः का यह नवीन संस्करण

प्रस्तुत है। इस बात में कोई शक नहीं है कि इस पें भी आगे और सुधार व संशोधन की संभावनाएं हैं। हमारा मानना है कि पाठ्यसामग्री में नए अनुभवों व विचारों के आधार पर निरन्तर बदलाव होते रहना चाहिए।

शिक्षा में नवाचार केवल पुस्तक छापने तक ही सीमित नहीं है। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण, अनुवर्तन, फीडबैक, मूल्यांकन, परीक्षा तथा प्रशासन, इन सबका इकट्ठा बदलना ज़रूरी है। गह प्रायोगिक पुस्तक तो इस पूरी प्रक्रिया का अंशमात्र है। सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का यह पूरा विषम काम अब ज़ोर पकड़ने लगा है। निस्संदेह यह काम आप सब के सहयोग से आगे बढ़ पाएगा।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा एवं एकलव्य के सहयोग से यह कार्यक्रम प्रयोग के रूप में मध्य प्रदेश की 8 शालाओं में चलाया जा रहा है। पुस्तक के प्रकाशन का दायित्व मध्य-प्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम ने उठाया है।

आज सारे देश में शिक्षा को एक नया मोड़ देने की गहन चर्चा हो रही है। हमें आशा है कि सामाजिक अध्यगन की शिक्षा में नवाचार का प्रयास करने की ये पहल उस दिशा में एक ठोस कदम साबित होगी।

पाठ्य सामग्री तैयार करने में इन संस्थाओं में कार्यरत अनेक विशेषज्ञों ने मदद की है - डा. अम्बेडकर शोध संस्थान, महु, सागर विश्वविद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय, चडीगढ़, इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एंटरप्राईज़, हैदराबाद, इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल मेनेजमेंट, आणंद, क्षेत्रिय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल; स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खंडवा।

चित्रांकन में सहयोग दिया है राजेश यादव (इटारसी), कैरन हेडाक (चंडीगढ़), सतीश चौहान, आशा शर्मा, चीनू पटेल (भोपाल), ए.आर. शेख (देवास)। मानचित्र बनाने में यमुना सन्नी ने मदद की। फोटोग्राफ हमने कई पुस्तकों और स्रोतों से लिए हैं। इनमें से हर एक का उल्लेख करना संभव नहीं है। इन सभी के हम आभारी हैं।

एकलव्य ग्रुप

जनवरी 1993.

किताब की कुछ खास बातें

शुरुआत की हलचल - जब तक छात्रों के मन में पाठ के विषय में कोई हलचल न हो, उत्सुक्ता न जगे, तब तक बस पठन चालू कर देना अच्छा नहीं है। इसलिए लगभग सभी पाठों के शुरू में बच्चों से प्रश्न पूछे गये हैं। शायद पाठ के विषय के बारे में वे पहले से ही कुछ जानते हों? शायद उनके मन में उस विषय के बारे में कुछ बातें हों या, पाठ के चित्रों आदि को देख कर ही वे कुछ अनुमान लगा पा रहे हों? अपने मन की बात कहने के बाद जब वे पाठ पढ़ के देखेंगे कि वे कहां तक सही थे तो शायद ज़्यादा रूचि लेंगे और ज़्यादा सक्रिय रहेंगे। इन शुरुआती हलचल के सवालों को पाठ के शीर्षक के तुरंत बाद इस तरह छापा गया है।

कठिन शब्द - कई बार हमें अंदाज़ा नहीं होता कि कितने सारे शब्द बच्चों की समझ में नहीं आते हैं। ऐसे में कुछ सीखना उनके लिए कितना मुश्किल हो जाता है! इस किताब में कठिन शब्द काफी कम हैं। फिर भी, जो हैं, उन्हें मोटे अक्षरों में छापा जा रहा है। जिससे शिक्षक इन शब्दों के प्रति सचेत रहें और इनके अर्थों पर छात्रों के साथ चर्चा व पूछताछ करते हुए ही आगे पाठ पढ़ाएं।
विषय वस्तु से जुड़े विशेष शब्दों को भी मोटे अक्षरों में छापा गया है।

2. खेती की शुरुआत

13

सवालीराम - सवालीराम एक काल्पनिक व्यक्ति है। उसके पास बच्चों के सवाल आते हैं और वह उन्हें जवाब लिख भेजता है। इस किताब के कई पाठों में बच्चों को आमंत्रण है कि वे सवालीराम से प्रश्न करें। बच्चों को प्रश्न करना तो अच्छा लगता ही है पर अपने नाम से आई चिट्ठी में अपने प्रश्नों का जवाव पढ़ना और भी अच्छा लगता है। उनके मन में और प्रश्न पूछनें का उत्साह बढ़ता है। हर पाठ के बाद आप बच्चों से पूछ सकते हैं कि क्या उनके मन में सवालीराम के लिए कोई प्रश्न है?

बीच के प्रश्न - आमतौर पर पाठ खत्म होने के बाद ही बच्चों से प्रश्न पूछे जाते हैं। इस किताब के पाठों के बीच-बीच में भी बच्चों से प्रश्न पूछे गये हैं। इनसे बच्चों में सजगता बनी रहती है। शिक्षकों को भी मालूम होता रहता है कि बच्चे पाठ की बातें समझ पा रहे हैं या नहीं। इन प्रश्नों को सिर्फ पढ़ के पाठ आगे बढ़ाते मत जाइए। बिना चूके इन प्रश्नों के जवाबों पर छात्रों के साथ चर्चा करिए। कुछ प्रश्नों के उत्तर कापियों में लिखने को कहिए। इन प्रश्नों को अलग ढंग से छापा जा रहा है - पहचान कर लें।

सवालीराम का पता-
सवालीराम,
द्वारा एकलव्य,
कोठी बाज़ार,
होशंगाबाद, 461 001.

कहानियां - बच्चे कहानियां पसंद करते हैं। कहानियों के ज़रिए खुशी से सीखते-समझते हैं। इस किताब के कई पाठों में कहानियों का उपयोग है। कहानियां काल्पनिक हैं पर झूठ या गलत नहीं हैं। सच्चाइयों के अनुसार कुछ समझाने के लिए लिखी गई हैं। पाठ में कहानी के अंशों को अलग स्पष्ट करने के लिए उनकी बगल में दोहरी रेखा खींची है जैसे –

चित्र - इस किताब में चित्रों की बहुलता है। क्योंकि विषय वस्तु की छवि और समझ बनाने में बच्चों को इनसे बहुत सहूलियत होती है। कई चित्रों पर प्रश्न पूछे गए हैं। चित्रों का वर्णन करने में बच्चे अपने शब्दों का उपयोग सहजता से करते हैं। उनकी अपनी अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए भी चित्रों पर चर्चा करनी ही चाहिए।

उपशीर्षक - बड़ा कठिन शब्द है यह पर बच्चों को इससे परिचित कराना ही होगा। क्योंकि इस किताब में बच्चों के सीखने के लिए कुछ नए उद्देश्य रखे गये हैं। बच्चों को ज्ञान या जानकारी देना मात्र किताब का मकसद नहीं है। इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण उद्देश्य है ज्ञान हासिल करने के तरीके सिखाना। किताबों से जानकारी मिलती है। किताबों में जानकारी अलग-अलग हिस्सों में संजोकर प्रस्तुत की जाती है। इन हिस्सों को उनके शीर्षकों से पहचाना जा सकता है। ये पाठ के उपशीर्षक होते हैं। पाठ के उपशीर्षकों की तरफ बच्चों को ध्यान ज़रूर केंद्रित करना चाहिए। ताकि, जब उनसे कोई प्रश्न पूछा जाए तो वे उत्तर खोजने के लिए पाठ के पन्ने बेतरतीब ढंग से पलटने में समय खराब न करें। किस उपशीर्षक के नीचे किसी प्रश्न की जानकारी मिलेगी यह समझें और उत्तर ढूंढें।

मानचित्र - इस किताब के मानचित्र बहुत कोशिशों के साथ आकार में बड़े और स्पष्ट बनाए गए हैं। ये महज़ देखते हुए (या अनदेखा करते हुए) आगे बढ़ जाने के लिए नहीं छापे गये हैं। इनमें जो जानकारी दी है उसे बच्चों को स्वयं देख-समझ कर पता करनी है। इसीलिए पाठ के बीच-बीच में मानचित्रों पर प्रश्न हैं और उनके उत्तर पाठ में आमतौर पर लिखे नहीं गये हैं। मानचित्र से उत्तर ढूंढने की गतिविधि बच्चों को खुद करनी है।

बच्चे मानचित्रों की बहुत सरल बातें कई बार नहीं समझ पाते हैं। वे ज़मीन और समुद्र में फर्क नहीं कर पाते - इसलिए अधिकांश नक्शों में समुद्र में लहरें बनाई गई हैं। बच्चे नदियों की रेखाओं और देश की तटीय रेखा में भी फर्क नहीं कर पाते। यह देखते हुए हमने भारत व मध्य प्रदेश के नक्शों में नदी की रेखा उसके शुरू के भाग में पतली बनाई है और आखिरी भाग में मोटी बनाई है क्योंकि नदी जब निकलती है तो पतली रहती है। फिर जैसे-जैसे उसमें और सहायक नदियों का पानी मिलता जाता है वह चौड़ी होती जाती है। इस तरह की कई बातों का ध्यान आपको भी रखना है ताकि बच्चे नक्शा पढ़ना सीख सकें।

अभ्यास के प्रश्न - इनमें अलग अलग प्रश्न रखे गए हैं जिनका मुख्य उद्देश्य यह जांच करना है कि छात्र जानकारी हासिल करना और उसे समझकर व्यक्त करना सीखे हैं कि नहीं। याद रहे, परीक्षा में बच्चों के पास पुस्तक रहेगी। उन्हें यदि कोई बात ठीक से याद नहीं तो वे पुस्तक खोल कर देख सकते हैं। इसलिए उन्हें यह तो आना चाहिए कि कहां देखना है, कितना लिखना है, कैसे लिखना है। जानकारी ढूंढने का अभ्यास देने के लिए इस प्रकार के प्रश्न हैं -

"राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी पाठ के किस हिस्से में मिलेगी?
राजन्यों और जन के साधारण लोगों के बीच क्या फर्क था और वे एक दूसरे के लिए क्या-क्या करते थे? इस प्रश्न की जानकारी पृष्ठ 44, 45, 46 में से पढ़कर जानो और उत्तर लिखो।"

जानकारी ढूंढने के बाद भी बच्चे सटीक उत्तर न लिख कर आगे पीछे के बहुत से असंबद्ध वाक्य भी उतार कर लिखते हैं। उसका मतलब हुआ कि उन्हें 'क्या लिखना है' कि समझ नहीं है। सटीक उत्तर लिखने का अभ्यास देने के लिए इस तरह के प्रश्न हैं -

"बलि क्या थी सिर्फ दो वाक्यों में बताओ।"

किताब के अंशों की मदद लिए बिना अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर पाने का अभ्यास देने के लिए ऐसे प्रश्न रखे हैं जिनका उत्तर पाठ में कई जगह बिखरा है, या पाठ में सीधे ढंग से नहीं दिया गया है। जैसे -

"महाजन पद के राजाओं के पास क्या-क्या था जो छोटे जनपद के राजाओं के पास नहीं था? कोई भी तीन बातें समझा कर लिखो।" (इसमें दो पाठों में दी बातों की तुलना करनी है।)
"शिकारी मानव के बारे में 10-12 मुख्य बातें लिखो।"
"खेती की शुरूआत के बारे में यहां दिए अधूरे अंश को पढ़ो और पूरा करो।"
"अगर सिंधु घाटी के शहरों में उपयोग होने वाली लिखाई हम पढ़ सकते तो उन लोगों के बारे में क्या बातें जान सकते हैं?"

चित्रों, नक्शों व तालिकाओं के उपयोग की कुशलता सिखाने के लिए भी विशेष प्रश्न रखे हैं, जैसे,

"मानचित्र 2 और मानचित्र 3 की तुलना करो और बताओ कि क्या सही है - दोनों मानचित्र भारत के बारे में है / दोनों मानचित्र एक ही समय के बारे में है / दोना मानचित्रों में बताई गई बातों में कोई फर्क नहीं है।"
"महाजनपद के समय का एक चित्र पृष्ठ 70 पर है। इस चित्र का वर्णन करते हुए 6-7 वाक्य लिखो। इस चित्र और पृष्ठ 31 के चित्र में क्या समानता और क्या अंतर है?"

आप इन उदाहरणों को ध्यान में रख कर नए प्रश्न बना कर परीक्षा आदि में उपयोग कर सकते हैं, बोर्ड परीक्षा के प्रश्न-पत्र में किताब में दिये प्रश्न बहुत कम रखे जाएंगे। इसलिए छात्रों के लिए नए-नए प्रश्नों को हल करने का अभ्यास ज़रूरी है। निश्चित प्रश्नों के उत्तर याद करने या रटने का कोई अर्थ नहीं है।

मिट्टी के खिलौने व झांकियां - पाठ में पढ़ी समझी बातों के बारे में मिट्टी से खिलौने और झांकियां बनाना बच्चों को बहुत मज़ेदार लगता है। इस गतिविधि में कोई खास झंझट भी नहीं है। बच्चे आनन-फानन में मिट्टी और पानी ले आते हैं। और बड़े उत्साह के साथ झांकियां बनाते हैं - चाहे सीढ़ीनुमा खेत हो, या खदान, या शिकारी मानव की गुफा का दृश्य।
जो बच्चे पाठ पढ़कर उत्तर देने में झिझकते हैं, क्योंकि उन्हें शब्दों की भाषा में अपने को अभिव्यक्त करने का हौंसला नहीं होता वे भी मिट्टी के खिलौनों के ज़रिए अपनी सोच-समझ बड़े हौंसले के साथ अभिव्यक्त कर देते हैं। इस गतिविधि को करते हुए विषय वस्तु की समझ और जानकारी उनके मन में गहराई तक बैठती जाती है।
हर शनिवार की बाल सभा में यह गतिविधि ज़रूर करवाई जा सकती है।
लगभग सभी पाठों में विषय वस्तु का वर्णन सरल और ठोस है अतः उसके आधार पर झांकियां बनाना बहुत आसान हो जाता है।

विषय सूची

इतिहास

नागरिक शास्त्र

भूगोल

1. शिकारी मानव

एक समय था जब दुनिया भर में कहीं भी खेती नहीं होती थी। न कहीं गांव थे, न शहर। उन दिनों लोग कैसे रहते थे ? इन चित्रों को देखो-

लोग खाना कैसे इकट्ठा कर रहे हैं?
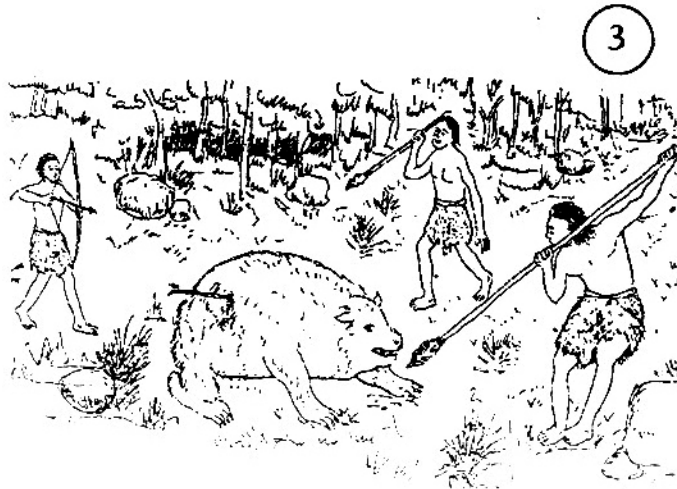
चौथे चित्र को देखो। लोग जंगल से क्या-क्या चीज़ें लेकर लौटे हैं?

तुम्हें इन चित्रों में छः – सात औज़ार व हथियार दिखाई देंगे। उन्हें ढूंढो। वे किस काम आ रहे हैं? उनके चित्र तुम कापी में बनाओ।

चित्र-1 के लोगों के पास सामान बटोरकर लाने के लिए क्या चीज़ें हैं?

चौथे चित्र में गुफा में दिखाई दे रहा हर व्यक्ति क्या काम कर रहा है?

आज से हज़ारों साल पहले हमारे **पूर्वज** कुछ इसी तरह रहते थे। जैसा कि चित्रों में दिख रहा है, उन्होंने बहुत सी चीज़ें बनाना सीख लिया था और बहुत से काम भी सीख लिये थे।

भोजन, पहनावा और घर

दुनिया में जगह-जगह, जंगलों के बीच, बीस-तीस लोगों के छोटे-छोटे झुण्ड हुआ करते थे। वे लोग जंगल में हिरण, भैंसा, हाथी, शेर और खरगोश जैसे जानवरों का शिकार करके खाते थे। वे नदियों व तालाबों में मछली पकड़ते थे। मधुमक्खी के छत्तों से शहद भी इकट्ठा करते थे। वे जंगली पेड़ों के फल तोड़ लाते, पौधों की मीठी जड़ें और कंद (आलू व शकरकन्द जैसे) खोद लाते और जंगलों में अपने आप उगे जंगली अनाज को काट लाते। वे ज़्यादातर कन्द, फल, सब्ज़ी आदि खाते थे और थोड़ा बहुत मांस भी खाते थे। यही सब उनका भोजन था।

उन लोगों को पहनने की चीज़ें भी जानवरों और पेड़ों से ही मिलती थीं। वे जानवर की खाल साफ करके पहनते थे, या, पेड़ की पत्तियों और छाल से शरीर ढक लेते थे।

वे लोग ऊनी और सूती कपड़े क्यों नहीं पहन सकते थे- ज़रा सोचकर बताओ।

वे लोग क्या-क्या खाते थे, एक सूची बनाओ।

उनका अधिकांश भोजन किससे मिलता था - जानवरों से या पेड़-पौधों से?

मनुष्य जब इस तरह रहता था - वे बहुत पहले के दिन थे। लोग तब घरों में भी नहीं रहते थे। जहां कहीं **गुफा** या चट्टानों के नीचे सिर छुपाने की जगह मिल जाती थी, वे वहीं रह लेते थे। कहीं चट्टान या गुफा न मिले तो झटपट पेड़ों की डालियों और पत्तों से छोटी-छोटी झोपड़ियां खड़ी कर लेते थे।

आओ कल्पना करें

इतने साल पहले जो लोग रहते थे, उनके बारे में हम ठीक-ठीक तो पता नहीं कर सकते हैं। मगर हां! उस समय की बची हुयी चीज़ों को देखकर और अपनी सूझ-बूझ से कुछ कल्पना ज़रूर कर सकते हैं। चलो सोचें, जो लोग शिकार करके और जंगलों से भोजन बटोरकर जीते थे और जो खेती नहीं करते थे - उनका जीवन कैसा रहा होगा।

एक कहानी - घुमक्कड़ लोग

तो कल्पना करो कि हज़ारों-हज़ारों साल पहले कुछ लोगों का एक झुंड एक जंगल में रहता था। झुंड में चौदह साल की एक लड़की थी। उसका नाम था करमी। वह एक दिन जब फल और कंद बटोरने गई थी तो एक भेड़िये ने उसे धर दबोचा था। वह बड़ी मुश्किल से जान बचाकर लौटी थी। वह बहुत दिलेर लड़की जो थी।

इस बात को कई दिन हो गए थे, पर करमी के पैर का घाव ठीक नहीं हुआ था। उसका शरीर तप रहा था। वह हिल-डुल नहीं पा रही थी। झुंड के आधे लोग कह रहे थे, "करमी अब ठीक नहीं होगी। इसे यहीं छोड़ दो। आगे जाना है। जंगल में अब शिकार नहीं मिलता। पानी के गड्ढे सब सूख चुके हैं। जानवर जंगल छोड़कर पानी की तलाश में आगे निकल गए हैं। फल भी खत्म होने को आए। ऐसे में गुज़ारा नहीं होता। करमी के लिए हम यहां रुके तो हम सब भूखे मर जायेंगे। चलो आगे चलें।"

करमी जैसी बहादुर और चतुर लड़की को यों मरने छोड़ देने की बात पर झुंड के कई लोग दुखी थे। वे बोले, "कुछ दिन और रुकते हैं। कुछ दिनों का काम तो चला ही लेंगे।" करमी की मां बोली, "चार-पांच दिन रुको। चार-पांच दिन तक खाने की कमी नहीं होगी। आज सुबह मैं जहां गई थी वहां मीठी जड़ों के खूब सारे पौधे हैं।" पर, कई लोग नहीं माने। बोले, "जिनको रहना है रहें। हम आगे जाएंगे। इस जंगल में अब आठ-दस लोगों का गुज़ारा तो हो भी जाए, पर सबका नहीं होगा।"

झुंड में सलाह मशविरा "करमी के साथ क्या करें?"

झुंड के बड़े-बूढ़ों को लगा कि यह तो बहुत गंभीर बात हो रही है। तब उन्होंने पूरे झुंड की महिलाओं और पुरुषों को एक साथ बैठाकर सलाह- मशविरा किया। बहुत सोच विचार के बाद यह तय हुआ कि झुंड के कुछ लोग करमी और उसकी मां के साथ रहेंगे। बाकी दूसरे जंगल में जाकर इंतज़ार करेंगे। यह तय होने पर झुंड के कुछ लोग दूसरे जंगल को चल दिये।

करमी की मां सोचती रही, अगर करमी तीन-चार रोज़ में ठीक नहीं हुई तो क्या होगा? फिर तो यहां कोई नहीं टिकेगा।

बड़े संकट के दिन थे। जो लोग रुक गए उन्हें यही डर रहता कि कभी कोई जंगली जानवर हमला कर दे तो करमी को लेकर कैसे भागेंगे और कैसे अपनी जान बचाएंगे।

रात होने को आई। करमी ने दर्द के मारे आंखें मींच लीं और पास खड़े पेड़ की छाल को मुट्ठी में भींच लिया। करमी ने छाल को तोड़कर अपने घाव पर लपेट लिया। फिर उसकी नींद लग गई। सुबह उठी तो पाया कि दर्द बहुत कम हो गया है। पैर कुछ उठा पा रही है। फिर क्या था! करमी को अपना इलाज मिल गया था। क्या छाल थी! घाव बिल्कुल ठीक कर दिया!

दो-तीन दिन बाद करमी मां का सहारा ले-लेकर आगे को चल पड़ी। दूसरे जंगल में पहुंचकर वे अपने झुंड के बाकी लोगों के साथ मिल गये।

झुंड के कई लोग करमी को छोड़कर दूसरे जंगल क्यों जाना चाहते थे?

करमी की मां ने उन्हें रोकने के लिए क्या-क्या कहा? अंत में क्या तय हुआ?

तुमने अभी एक काल्पनिक कहानी पढ़ी।

कुछ ऐसा ही होता होगा उन दिनों। सही तो है, शिकार या फल हमेशा एक ही जगह नहीं मिलते रह सकते थे। इसलिए जब एक जंगल में शिकार, फल आदि मिलने बंद हो जाते, तो झुंड के लोग भोजन की तलाश में दूसरी जगह को चल पड़ते थे। जब उस जंगल में फिर से फल लगने का मौसम आता तब वे वहां लौट आते। जैसे आजकल हम एक जगह बस कर रहते हैं वैसे वे लोग नहीं रह सकते थे।

चित्रों को एक बार फिर देखो। इन चित्रों में तुम्हें शिकारी मानव के पास कुछ ख़ास सामान भी नहीं दिख रहा है - न खाट-पलंग, न ही बर्तन-भांडे।

क्या तुम बता सकते हो कि शिकारी मानव के पास ज़्यादा सामान क्यों नहीं रहता था?

क्या तुम यह भी कल्पना कर सकते हो कि जब एक झुंड एक जगह से दूसरी जगह जाता होगा, तो क्या-क्या चीज़ें साथ लेकर चलता होगा?

आज बहुत से लोगों को भोजन की तलाश में घूमना क्यों नहीं पड़ता है?

क्या कुछ लोग आज भी भोजन के लिए घूमते हैं? तुम उनके बारे में क्या जानते हो?

पत्थर के औज़ार

शिकारी मानव के पास कैसे-कैसे हथियार व औज़ार थे, तुमने चित्र में देखा।

उस समय लोहा, तांबा जैसी धातुओं के बारे में लोगों को नहीं पता था। फिर वे किस चीज़ के औज़ार बनाते थे? आस-पास जो मिलता था वह था पत्थर, लकड़ी, जानवरों के सींग और हड्डियां। इन्हीं को नुकीला बनाकर औज़ार बनाए जाते थे।

पृष्ठ 2 के चित्र 4 में दो आदमी बैठकर ऐसे औज़ार बना रहे हैं। वे पत्थर के टुकड़े को मार-मार कर इस तरह उसकी छीलन या चिप्पियां निकाल रहे हैं कि उसमें अच्छी धार बन जाये या बढ़िया नोक निकल आए। साथ ही पत्थर का आकार भी ऐसा हो जाए कि उसे हाथ में कस के पकड़ना आसान हो।

ये थे पत्थर के बड़े औज़ार। यह हुनर सीखते-सीखते मनुष्य ने पत्थर के बहुत बारीक टुकड़े बनाना भी सीख लिया था। ये पत्थर के छोटे और बारीक टुकड़े किसी लकड़ी के हत्थे में लग कर तेज़ औज़ार का काम देते थे।
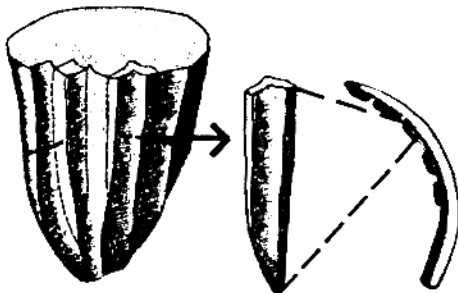
बारीक चिप्पियों से बना हंसिया

नीचे पत्थर के औज़ारों के कुछ चित्र दिये गये हैं। क्या तुम इन चित्रों में पत्थर पर से निकाली गई चिप्पियों के निशान पहचान पा रहे हो? उन पर × का निशान लगाओ।

किन औज़ारों में लकड़ी के हत्थे लगे हैं? पहचानो, और लकड़ी के हत्थों में गहरा रंग भरो।

पत्थर के नुकीले टुकड़े हत्थे से दो तरह से जोड़े गए हैं। बताओ कैसे?

कौन से औज़ार हैं जो हत्थों मे नहीं फंसाए गए हैं?

पत्थर के औज़ारों से क्या-क्या किया जाता होगा?
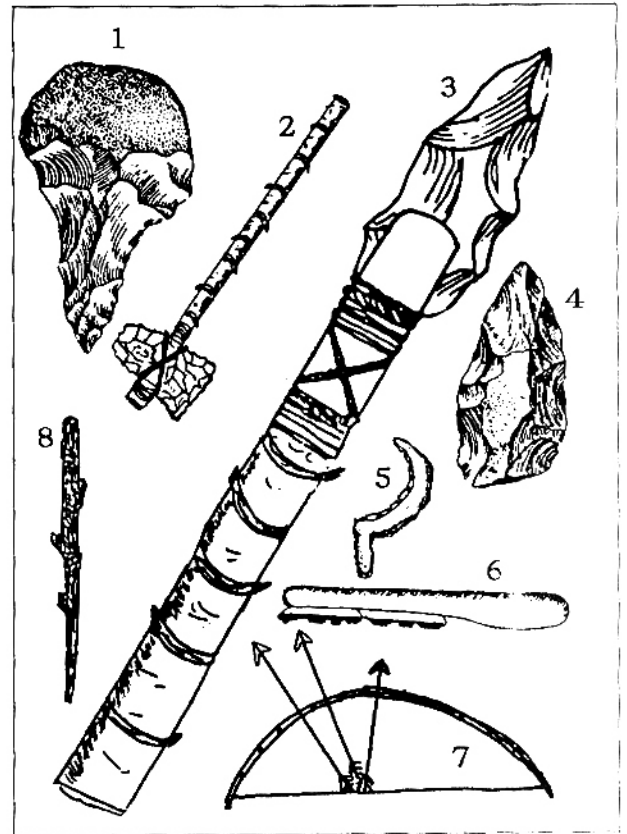
तरह-तरह के औज़ार

उस समय औज़ार बनाने के लिए अलग से कोई कारीगर नहीं था। झुंड के सब लोग औज़ार बनाया करते थे। हां यह ज़रूर हो सकता है कि कुछ लोग औरों से ज़्यादा अच्छे औज़ार बनाते हों।

पत्थर और लकड़ी के औज़ारों का उपयोग करते हुये उस समय के लोग तरह-तरह की चीज़ें बना लेते थे। महिलायें और पुरुष मिलकर इन औज़ारों से लकड़ी या बांस काटते, चीरते और उससे दूसरे औज़ार, टोकरियां, मछली के जाल आदि बना लेते। इन्हीं औज़ारों से पेड़ों की छालें छील के और जानवरों की खालें साफ कर के पहनने के लायक बनाते। वे लकड़ी, सीप, हड्डी, हाथी-दांत आदि की मालायें भी बनाते। इन चीज़ों को बनाने के लिए भी उन दिनों अलग से कारीगर नहीं थे। सब लोग अपने उपयोग की चीज़ें खुद बना लेते थे।

मालाएं

रिक्त स्थान भरो :

1. शिकारी मानव .... और .... के औज़ार बनाते थे।

2. झुंड के .... लोग औज़ार बनाते थे।

क्या आज लोग अपने उपयोग की सब चीज़ें खुद बना लेते हैं?

आज औज़ार किस चीज़ से बनते हैं?

आज-कल पत्थर का उपयोग कहां-कहां होता है?

चित्र और नाच

शिकारी लोग गुफा के अंदर दीवारों पर रंगीन चित्र भी बनाया करते थे। क्या तुम जानते हो कि उन्हें रंग और ब्रुश कैसे मिलता था? वे रंगीन पत्थरों को घिस कर रंग तैयार करते थे, और बांस के ब्रुश से चट्टानों पर चित्र बनाते थे। इन लोगों द्वारा बनाए गए चित्र आज भी कई गुफ़ाओं की दीवारों पर या चट्टानों पर देखे जा सकते हैं।
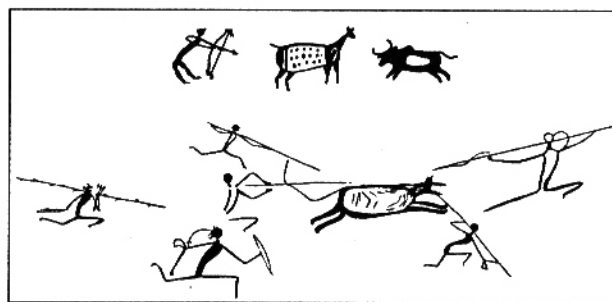
ये लोग क्या-क्या चित्र बनाते थे? तुम खुद देख कर बताओ।

चित्र बनाने के अलावा शिकारी मानव के जीवन में एक और चीज़ बहुत महत्व रखती थी। वे सब मिल कर देर-देर तक नाचते थे। आओ करमी की कहानी आगे पढ़ें और उनके नाच-गान के बारे में जानें।

करमी और उसके झुंड के बाकी लोग नए जंगल में पहुंच गए थे। वहां कुछ दिन खूब शिकार मिला। मगर फिर कई दिनों तक झुंड के लोग जंगल से खाली हाथ लौटने लगे। पूरे झुंड का गुज़ारा कन्द-मूल और फलों से चल रहा था। अब ये भी कम पड़ने लगे।

करमी की मां ने एक दिन झुंड के सारे लोगों

को बुला कर कहा, "यह हमारे लिए बहुत कठिन समय है। हमें कुछ करना होगा।" एक महिला बोली, "हां अब फल और कन्द भी खत्म होने को आये हैं।" एक आदमी बोला, "यहां जंगल में जानवर तो बहुत हैं। मगर न जाने क्यों वे न तो हमारे जाल में फंसते हैं और न ही हमारे तीरों का निशाना बनते हैं।"

करमी की मां बोली, "हम लोगों को नाच की **रस्म** करनी चाहिये। शायद जानवरों के देवता नाराज़ हैं।"

तो एक दिन नाच की रस्म शुरू हुई और सब लोग नाच में भाग लेने लगे। कुछ लोगों के सिर पर हिरण की खाल थी या उसका सींगदार **मुखौटा** था। बाकी लोगों के पास धनुष-बाण या भाला था। हिरण का मुखौटा पहनने वाला आदमी हिरण की चाल से नाचने लगा। बाकी लोग उसे घेर कर नाचने लगे। वे उसे हिरण मान कर उस पर झूठमूठ का **भोंथरा** बाण छोड़ने लगे। 'हिरण' घायल हो गया। दूसरे लोग उसे घेरे के बाहर घसीट कर ले गए और उस पर अपने चाकू चलाने का नाटक करने लगे। फिर सब घेरे में लौट आए और कोई दूसरा आदमी 'हिरण' का **स्वांग** करने लगा।

भीमबैठका की गुफा में बना नाच का चित्र

इस तरह यह नाच बहुत देर तक चलता रहा। उन लोगों के मन में कहीं यह विश्वास था कि नाच की यह पूरी रस्म करने से वे हिरणों पर टोना कर सकते हैं। वे मानते थे कि नाच के द्वारा शिकारियों को जादू की शक्ति मिलेगी और वे जानवरों को जादू की इस शक्ति से गहरे जंगलों से बाहर निकाल कर उनका शिकार कर लेंगे।

इस झुंड का एक सयाना आदमी था- **ओझा** जैसा एक आदमी। उसकी देखा-देखी ही सब लोग नाच करते थे। उसने गुफा की दीवार पर कुछ चित्र बनाये। जानवरों के चित्र, जानवर का मुखौटा व खाल ओढ़े लोगों के चित्र और नाच करते लोगों के चित्र। फिर उसने जानवर का शिकार करने का चित्र भी बनाया। सब लोगों ने जानवर के उस चित्र पर तीर मारे। वे मानते थे कि अब जब वे वास्तव में शिकार करेंगे तब उनका तीर इसी तरह निशाने पर लगेगा।

नाच व चित्रों की रस्म जब समाप्त हुई तब लोग फिर से टोलियां बना कर शिकार पर निकले।

जब करमी की मां ने सुना कि जंगल में जानवर होते हुये भी शिकार नहीं मिल रहा तो उसने क्या सुझाव रखा? सही विकल्प चुनो:

1. दूसरे जंगल चले जायें। 2. कन्द-मूल से ही गुज़ारा करें। 3. नाच की रस्म करें।

रिक्त स्थान भरो :

1. नाचने वालों में से कुछ लोग हिरण का ----

पहने हुये थे।

2. वे —— जैसे नाच रहे थे।

3. बाकी लोग उसे ——— के नाचते और उस पर झूठमूठ का —— चलाते।

जानवरों के चित्र पर शिकारियों ने तीर क्यों मारा?

शिकार

कई दिनों की कोशिश के बाद, एक दिन माको और उसकी टोली के लोग जब गुफा पर लौटे तो दो बड़े हिरणों को घसीटते हुए ला रहे थे।

कोरा अपनी टोली के साथ जब लौटा तो खाली हाथ ही था। उसके साथी बहुत परेशान थे क्योंकि उन्हें शिकार नहीं मिला था। पर गुफा के बाहर दो हिरणों को देखकर उनका भी चेहरा खिल उठा और उन्होंने खूब हंस-हंस कर माको और उसके साथियों की पीठ थपथपाई।

फिर क्या था! लोगों ने हिरणों को एक जगह रख दिया। सब शिकारी बारी-बारी से हिरणों के पास गए। उन्होंने अपने दाहिने हाथ से सिर से दुम तक हिरणों को सहलाया और झुंड को भोजन देने के लिए धन्यवाद दिया।

एक आदमी ने मरे हिरणों से कहा, "आराम करो, दादा। तुमने हमें अपना मांस दिया, इसके लिए धन्यवाद।"

दूसरे ने कहा, "तुमने हमें अपने सींग दिए हैं, हम तुम्हें इसके लिए धन्यवाद देते हैं।"

करमी की मां बोली, "हिरण भैया, हमारे कारण तुम्हें चोट लगी और तकलीफ हुई। हमें माफ करना।"

फिर झुंड के सब लोगों ने हिरण का मांस आग पर भून कर खाया। पत्थरों को टकरा कर आग बनाना तो वे जानते ही थे।

दो-तीन दिन बाद जब मांस सड़ने लगा तो लोगों ने उसे छोड़ दिया। फिर टोली बना कर शिकार पर निकले। औरतें भी बच्चों को ले कर फल व जड़ ढूंढने निकलीं।

कैसी अजीब बात है! शिकारी लोग अपने द्वारा मारे गये जानवरों को धन्यवाद दे रहे हैं! मगर वे लोग मानते थे कि जानवर मनुष्यों के भाई-बंधु हैं। जानवरों को मारना अपने भाईयों को मारने के समान है। इसलिए जानवरों को केवल ज़रूरत पड़ने पर, अपनी भूख मिटाने के लिए ही मारना चाहिए। जानवरों को मारने के बाद उन्हें धन्यवाद देना चाहिये और उनसे माफी भी मांगनी चाहिये।

मरे हिरण को धन्यवाद दे रहे हैं

इसीलिए वे मरे जानवर से ऐसी बातें कर रहे थे।

तुम भी अपने गांव में देखते होगे कि फसल कटने के बाद खलिहान में काटे गये अनाज की पूजा होती है।

किसान फसल की पूजा क्यों करते हैं? कक्षा में चर्चा करो।

फसल की पूजा करना और मारे गये जानवर को धन्यवाद देना - क्या इन दोनों बातों में तुम्हें कोई समानता दिखती है?

सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरो-

1. कोरा ने जब देखा कि माको दो हिरण मार कर लाया है तो वह ——— हुआ। (खुश/दुखी)

2. जब शिकारी लोग जानवर मार कर लाते थे तो वे उसे ——— थे। (तुरन्त खा जाते/धन्यवाद देते)

3. शिकारी लोग मानते थे कि जानवर मनुष्यों के ——— (खाने के लिए/रिश्तेदार) हैं और जानवरों को ——— (जब चाहे तब/केवल अपनी भूख मिटाने के लिए) मार सकते हैं।

मिल-बांट कर खाना

कुछ इसी तरह की होती होगी उन लोगों की ज़िन्दगी। वे साथ शिकार करते थे क्योंकि अकेले व्यक्ति का जानवरों को मारना मुश्किल था। अकेला व्यक्ति जंगल में अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता था। लोग टोलियों में भोजन इकट्ठा करने के लिए निकलते थे ।

जितना भोजन झुंड में आये सब मिल-बांट कर खाते थे। यह भी बहुत ज़रूरी था। जंगल से क्या मिलेगा, इसका कुछ भरोसा तो होता नहीं था। अगर मिल कर न खाते तो किसी दिन कोई भूखा रहता, और अगले दिन कोई और। किसी दिन कुछ लोगों के पास इतना खाना रहता कि खत्म न हो व सड़ने लगे और अगली बार उन्हीं के हाथ खाली होते। इकट्ठे खाने से ये दिक्कतें कम हो जातीं। सबको खाना मिलने का भरोसा रहता।

फिर, उन दिनों कोई ज़्यादा शिकार कर लाए तो उसे जमा करके भी नहीं रखा जा सकता था। मांस-फल जैसी चीज़ें जोड़-जोड़ कर रखी नहीं जा सकती थीं, क्योंकि वे सड़ कर खत्म हो जातीं थीं।

यही नहीं, शिकारी लोग तो घूमते रहते थे । अगर वे फलों को या बीजों को सुखा कर रख भी लेते तो लगातार एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाते? इस कारण मांस व फल जैसी चीज़ों को जोड़-जोड़ कर कोई धनवान नहीं बन सकता था। शिकारियों के झुंड में कोई अमीर या ग़रीब नहीं होता था। खाना खा कर खत्म कर देते और फिर ढूंढने चल पड़ते।

जैसे करमी का झुंड था, वैसे बहुत सारे अलग-अलग झुंड थे। इन झुंडों के बीच कभी-कभी लड़ाई भी होती थी। कौन से झुंड के लोग किस जंगल में शिकार करेंगे, इसको लेकर उनमें छोटी-मोटी झड़पें भी हो जाती थीं।

इस अंश के दो सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों को चुनकर अपनी कापी में उतारो ।

तुमने पढ़ा कि कोरा की टोली को शिकार नहीं मिला था। फिर उनको भोजन कैसे मिला?

ऐसे लोग थे हमारे पूर्वज। आज हमारा जीवन उनके जैसा नहीं है। बहुत अलग है। फिर भी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हमें इन पूर्वजों से ही पता चली हैं। शिकारी मानव ने ही पेड़-पौधों, फलों, कन्दों और जड़ी-बूटियों की जानकारी खोजी। उन्होंने जानवरों, मछलियों, कीड़े-मकोड़ों के बारे में कई बातें पता लगाईं। तरह-तरह के पत्थरों का पता लगाया। एक जगह से दूसरी जगह जाने के रास्ते बनाये। यही नहीं, वे जैसे नाचते थे, वैसा नाच आज भी कई अवसरों पर किया जाता है। क्या तुमने ऐसा नाच देखा है?

शिकारी मानव के निशान

हज़ारों वर्षों पहले रहने वाले शिकारी मानव के बारे में हमें इतनी बातें पता कैसे चलती हैं? क्या उनकी कुछ चीज़ें बची हुई हैं? असल में शिकारी मानव के कई निशान आज भी मिलते हैं - जैसे पत्थर के औज़ार, गुफाओं पर बने चित्र, और जानवरों और लोगों की हड्डियां। गुफा चित्रों और पत्थर के औज़ारों के जैसे **उदाहरण** तुमने पाठ में देखे, वैसे और बहुत से उदाहरण मिलते हैं।

भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में तुम्हें भीमबैठका की गुफाएं मिलेंगी। इनमें जा कर तुम खुद ये चीज़ें देख सकते हो। हज़ारों सालों पहले ऐसी गुफाएं शिकारी मानव का बसेरा थीं।

मध्य प्रदेश में भीमबैठका के अलावा भोपाल, रायसेन, होशंगाबाद, बुदनी, पचमढ़ी, बघई खोर, भेड़ाघाट और महेश्वर में शिकारी मानव के निशान विशेष रूप से मिलते हैं।

आज भी शिकारी लोग रहते हैं

शिकारी मानव के रीति-रिवाज़, तौर-तरीके और व्यवहार के बारे में पाठ में कई बातें लिखी हैं। ये सब हमें कैसे पता चलती हैं? हमने हज़ारों साल पुराने इन लोगों को देखा तो नहीं है! हम आज के शिकारियों को देख कर शिकारी मानव के बारे में इन सब बातों का अनुमान लगाते हैं। आज भी दुनिया की कई जगहों में शिकारी लोग रहते हैं। भारत में अंडमान द्वीप समूह में, केरला, आंध्र प्रदेश और अपने मध्यप्रदेश में भी ऐसे लोग रहते हैं।

कई लोग इन शिकारी लोगों के बीच में जा कर रहते हैं और उनके बारे में, उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज़, आपसी व्यवहार आदि बातों का पता लगाते हैं।

इस चित्र में आंध्र प्रदश के चेंचू शिकारी कबीले के लोग दिख रहे हैं। ये लोग आज भी शिकार करके और फल-मूल बटोर कर गुज़ारा करते हैं। ये लोग या तो घस-फूस की झोपड़ियों में रहते हैं या फिर गुफाओं में रहते हैं।
इस चित्र को देखकर क्या तुम बता सकते हो कि पुराने शिकारी मानव और चेंचू लोगों में क्या-क्या फर्क है?

अभ्यास के प्रश्न

(सभी प्रश्नों के उत्तर अपने ही शब्दों में लिखो।)

1. इस पाठ का शीर्षक है शिकारी मानव। पाठ के अलग-अलग हिस्सों में शिकारी मानव के बारे में तरह-तरह की जानकारी दी गई है। जैसे, शिकारी मानव के खाने, रहने, पहनने की जानकारी पहले हिस्से में दी गई है। इस हिस्से का उपशीर्षक है - **'भोजन, पहनावा और घर'**
   इस पाठ के और कितने हिस्से हैं, गिनो। पाठ के हरेक हिस्से से एक-दो बातें चुनकर शिकारी मानव के बारे में 10-12 महत्वपूर्ण (मुख्य-मुख्य) बातें लिखो।
2. शिकारी मानव के भोजन और तुम्हारे भोजन में दो मुख्य समानताएं और दो मुख्य अंतर बताओ।
3. शिकारी मानव के समय महिलायें क्या-क्या काम करतीं थीं?
4. तुमने पाठ में शिकारियों के बारे में एक दो कहानियां पढ़ीं। तुम भी उनके बारे में एक कहानी लिखने की कोशिश करो। नीचे दी गई कहानी को पूरा करो–
   बहुत समय पहले एक शिकारी झुंड में सामा नाम की औरत थी। वह झुंड की दूसरी औरतों के साथ जंगल से फल, कन्द-मूल आदि बटोर कर लाती थी। उसके पास जो भी खाने की चीज़ होती थी वह किसी के भी मांगने पर दे देती थी। उसने एक दिन सोचा, मैं जितने फल और बीज लाती हूं उन्हें सुखा कर रखूंगी। इस तरह मेरे पास खाने की बहुत सारी चीज़ें इकट्ठी हो जायेंगी। फिर मैं आराम से रहूंगी। वह फलों को सुखा कर रखने लगी। लेकिन.....
5. बहुत समय बाद का यह चित्र है। लोग शिकार कर रहे हैं।
   ये लोग किसकी सहायता से शिकार कर रहे हैं?
   चित्र में जंगली जानवर कौन से हैं? शिकारियों के पास क्या हथियार हैं? वे किन चीज़ों के बने हैं? ये लोग किसके बने कपड़े पहने हैं? इनके रहने की जगह क्या होगी? इन लोगों का भोजन क्या शिकार से ही आता होगा? क्या ये शिकारी मानव हैं?

इस पाठ की कहानी में हमने लोगों को हिन्दी में बोलते हुए बताया है। लेकिन उन दिनों आज बोली जाने वाली भाषाओं में बात नहीं की जाती थी। लोग बोला करते थे, पर कैसे- यह हम पूरी तरह नहीं जान सकते।

2. खेती की शुरुआत

आज हम खेती करते हैं और खेती से हमें भोजन मिलता है। पर तुम जानते हो कि शुरू में मनुष्य सिर्फ शिकार कर के, व जंगली फल और जंगली अनाज बटोर कर जीता था। दुनिया में कहीं खेती नहीं होती थी।

कैसे किसी झुंड ने सोचा होगा कि वह शिकार व जंगली फल बटोरना छोड़ कर खेती करने लगे! कैसे झुंड के सब लोग माने होंगे? क्या हुआ होगा? क्यों हुआ होगा? कक्षा में चर्चा करो।

शिकारी मानव के समय लोग कुछ भी नहीं उगाते थे और सब कुछ जंगलों से बटोर लाते थे। वे जो अनाज, फल, सब्ज़ी या कन्द खाते थे, सब जंगली ही उगते थे। उन्हें कोई बोता नहीं था। न ही उनकी कोई देखभाल करता था। बस जब अनाज या फल पक जाते, तो लोग उन्हें काट कर खा लेते थे। ऐसा लाखों सालों तक चलता रहा।

आज भी हम कई ऐसी चीज़ों को खाते हैं, जो जंगली उगती हैं।

हम जंगलों से इस तरह के कई अनाज, फल, सब्ज़ी, पत्ते और कन्द बटोर कर लाते हैं। क्या तुम ऐसी चीज़ों की सूची बना सकते हो?

जो शिकारी लोग लाखों सालों से जंगली फल व अनाज बटोरते थे, उन्हें मालूम तो होगा कि कैसे बीज से पौधा उगता है। उन्होंने आसपास ऐसे खूब सारे पौधों को उगते देखा होगा। मगर फिर भी उन्होंने खेती शुरू नहीं की। इस का क्या कारण रहा होगा? और जिन लोगों ने खेती शुरू की उनको क्या ज़रूरत पड़ी होगी कि वे खेती करने लगे?

यह सब हम पता नहीं कर सकते, फिर भी उन दिनों के जो निशान और सबूत मिलते हैं उनसे हम कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं। इन्हीं **सबूतों के आधार** पर हम यहां एक कहानी तुम्हें सुना रहे हैं। चलो कल्पना करके देखें कैसे हुई होगी खेती की शुरुआत।

कहानी – सुंगा झुंड

तो कल्पना करो कि बहुत समय पहले एक शिकारी झुंड था। झुंड का नाम रखते हैं सुंगा झुंड। एक समय की बात है। सुंगा झुंड के लोग जहां रहते थे वो जगह ऐसी दिखती थी जैसी अगले पृष्ठ के चित्र में दिख रही है।

इस जगह पर खाने को क्या-क्या मिलेगा?

यहां जंगली बीज और दाने कहां मिलेंगे?

क्या नदी से भी कुछ खाने की चीज़ें मिल सकती हैं?
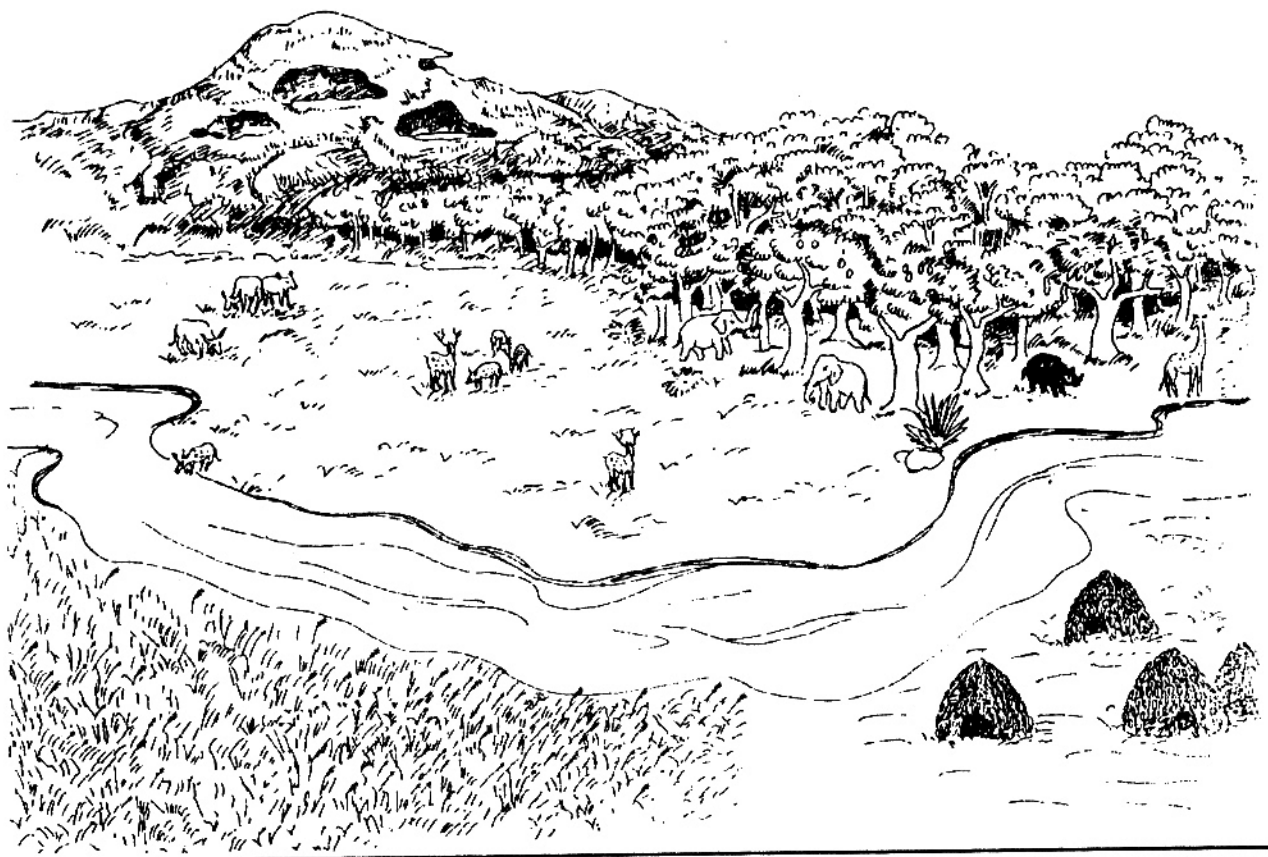
जंगली फल कहां मिलेंगे?

शिकार के लिये जानवरों का इन्तज़ार कहां किया जाएगा?

सुंगा झुंड के लोग इस इलाके के कोने-कोने को जानते थे। किस पेड़ से कब फल मिलेंगे, किस पौधे से कब जड़ मिलेंगी, किस घास के बीज कब लगेंगे, किस बिल में खरगोश रहता है, हिरण और बारासिंगा चरने कहां आते हैं, नदी में मछली और केंकड़े कब आएंगे - यह सब उन्हें पता था। यहां साल भर वे कहीं न कहीं से अपना भोजन जुटा लेते थे। अब उन्होंने भोजन की तलाश में नई-नई जगह घूमना छोड़ दिया था। बस, जब नदी में बाढ़ आ जाती तो वे पहाड़ पर चढ़ जाते। कुछ समय बाद फिर नीचे उतर आते। सुंगा झुंड के पूर्वजों को जंगल का इतना बारीक ज्ञान न था। वे भोजन के लिए बड़े-बड़े जानवरों का पीछा करते हुए जगह-जगह भटकते थे। पर सुंगा झुंड को अब इस जंगल की इतनी जानकारी हो गई थी कि साल भर का भोजन यहीं से जुटा लेते थे। इसलिए वे यहां कच्ची झोपड़ियां डाल कर रहने लगे थे। क्या तुम्हें चित्र में उनकी झोपड़ियां दिख रही हैं?

सही विकल्प चुनो-

सुंगा झुंड के लोग एक जगह रहते थे क्योंकि -

1. वे खेती करते थे। 2. वे सिर्फ बड़े जानवरों का शिकार करते थे। 3. वे जंगल में कई चीज़ों से भोजन जुटा लेते थे। 4. वे घर बनाने लगे थे।

करमी के झुंड और सुंगा झुंड के जीवन में क्या समानताएं थीं और क्या अंतर थे?

बोमा गोमा की खोज

सुंगा झुंड में दो बच्चे थे। बोमा और उसकी बहन गोमा। दोनों को अनाज के दाने भिगो कर खाना बहुत पसंद था।

एक दिन वे नदी किनारे बैठ कर दाने खा

रहे थे कि अचानक जंगली कुत्ता आ गया। मारे डर के दोनों भाग पड़े।

कुछ दिन बाद जब नदी किनारे गए तो देखा वहां नए-नए अनाज के पौधे उगे हैं।

गोमा बोली, "यहां हमसे दाने छूट गए थे। क्या उनको चिड़िया ले गई?"

बोमा बोला, "नहीं, मुझे लगता है कि उन्हीं में से ये पौधे निकले हैं - जैसे बरसात के मौसम

में आम की गुठली से पेड़ निकलता है।"

गोमा बोली, "फिर से फेंक कर देखें?"

तो दोनों मां के पास गए और दाने मांगे। पर मां ने दाने देने से मना कर दिया। वह बोली, "इतनी मुश्किल से दाने इकट्ठे किए हैं। इनसे कई दिनों तक काम चलाना है।" फिर भी, अगले दिन बोमा गोमा ने चुपके से कुछ दाने उठाए और घर के पीछे फेंक दिए।

वे रोज़ देखने जाते कि पौधे उगे कि नहीं। पर गर्मी का मौसम था। सूखी मिट्टी में दाने पड़े रहे। पक्षी और कीड़े उन्हें खा गए। बोमा और गोमा सोचते रहे। फिर उन्हें एक उपाय सूझा। गोमा बोली, "दानों को मिट्टी से ढक देते हैं। फिर पक्षी उन्हें नहीं खाएंगे।"

बोमा बोला, "हां, और उन पर पानी डालते हैं। शायद पानी मिलने पर ही पौधे उगते हों।"

उन्होंने फिर से बीज बोए और नदी से पानी ला कर बीजों पर डाला। कुछ दिनों में पौधे उग निकले। बोमा गोमा की खुशी का ठिकाना न था। वे हर दिन पौधों को बड़ा होते देखते रहे।

खेती-बाड़ी की ये बातें आज हमें बड़ी सीधी-सादी भले ही लगें, पर एक समय मनुष्य ने बहुत धीरे-धीरे उन्हें खोजा और समझा था।

कुछ महीनों में बोमा गोमा के पौधों पर दाने लगे। अगर सुंगा झुंड अपने पूर्वजों की तरह घूमता रहता तो शायद बोमा गोमा अपने पौधों पर दानों का लगना न देख पाते। पर अब तो सुंगा झुंड एक ही जगह रहता था।

'जंगली अनाज काफी है'

बोमा-गोमा ने जब अपने पौधों पर दाने लगे देखे तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "अरे सचमुच यहां तो दाने बन गए!" वे दाने इकट्ठा कर के घर भागे। वे खुशी से चिल्लाते जाते, "देखो हमने अनाज बना लिया, हमने अनाज बना लिया।"

झुंड के लोग बोमा और गोमा की बातें सुन कर हंसने लगे। बोले, "यहां इतना अनाज घासों पर लगा है। काटो और खाओ! अनाज का क्या बनाना?"

पर बोमा-गोमा के मन से अनाज की धुन नहीं उतरी। जब भी मौका मिलता, तरह-तरह के दाने बचा कर रख लेते। इसी तरह बहुत दिन और बीते।

क्या अजीब बात है। खेती कैसे कर सकते हैं- इसका पता भी चल गया, फिर भी सुंगा झुंड के लोगों को खेती करने में रुचि क्यों नहीं हुई? क्या तुम कारण समझ सके?

चलो आगे देखें क्या हुआ।

नई जगह की कठिनाइयां

एक दिन अचानक शिकारियों का दूसरा कोई झुंड वहां आया जहां सुंगा झुण्ड रहता था और सुंगा झुंड से लड़ने लगा। सुंगा लोग दूसरे झुंड के सामने टिक नहीं पाये और भाग खड़े हुये। वे भागते-भागते दूर निकल गए।

फिर वे जहां रहने लगे वहां बहुत कठिनाइयां थीं। ज़रा-सी एक नदी बहती थी। वहां न जानवर आते थे, न ही फलों के घने पेड़ थे। नदी किनारे जो घास उगती थी, उसके दाने खाने लायक नहीं थे। सुंगा झुंड के लोग अब क्या करते? वे ज़्यादातर मछली और केकड़े खा कर गुज़ारा करने की कोशिश करने लगे।

वाक्य पूरा करो-

1. सुंगा झुण्ड के लोगों को अपनी पुरानी जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा क्योंकि ....

2. नई जगह पर खाने के लिये .... नहीं मिलते थे, केवल ...... मिलते थे।

बोमा-गोमा की कोशिश

एक दिन बोमा-गोमा अपनी मां से बोले, 'सब लोग परेशान क्यों हो रहे हैं? हमें तो अनाज बनाना आता है। एक दाना बोने से कई सारे दाने

मिलते हैं। चलो न मां, कुछ दाने मिट्टी में डालें, उन्हें उगाएं।"

मां बोली, "पहले ही अनाज के दाने बहुत कम बचे हैं। उन्हें मिट्टी में फेक दें? नहीं नहीं।"

बोमा-गोमा ने हार नहीं मानी। उन्होंने भी कुछ दाने बचा कर रखे थे। उन्हें ही मिट्टी में डाल दिया और नदी से पानी ला ला कर सींचा। कुछ दिनों में पौधे निकलने लगे। पर यह क्या? पौधे उगे ही थे कि मुरझाने लगे। बोमा-गोमा बहुत दुखी हुए।

उनकी बूढ़ी अम्मा कुछ दिनों से उनकी करतूतें देख रही थी और शायद समझ भी रही थी। बोमा गोमा को परेशान खड़ा देख कर, वह अपनी झोंपड़ी से निकल आई। उनके पास आकर कुछ देर पौधों को देख, सोचती रही। फिर बोली, "कहीं ऐसा तो नहीं कि आस-पास उगी घास पौधों को बढ़ने नहीं दे रही? चलो इसे खोद कर हटा दें।"

तीनों ने मिल कर ऐसा ही किया। नुकीली लकड़ी से एक जगह की घास खोद कर हटा दी। साफ मिट्टी पर फिर से अनाज के दाने बोए और पानी दिया।

नुकीली लकड़ी से उन दिनों और क्या-क्या किया जाता था?

सुंगा झुंड ने खेती अपनाई

इस बार जब पौधे उगे तो आसानी से बढ़ने लगे। झुंड के सारे लोग देखने आए। सब बहुत खुश हुए। खूब नाचे गाए। फिर रोज़ देखने आते कि पौधे कैसे बढ़ते हैं।

दो-तीन महीने बाद पौधों पर बीज लगे। फिर बीज पके। सब लोग मिल कर उन्हें काटने चले।

बूढ़ी अम्मा ने कहा, "देखो ध्यान रहे - जिन पौधों में खूब सारे बीज लगे हैं और अच्छे दाने लगे हैं, उन्हें अलग से काटो। उनके बीज को हम अगली बार बोयेंगे। तब अगली बार और ज़्यादा अनाज हमें मिलेगा।"

जब सब अनाज कटा तो लोगों ने पाया कि एक टोकरी भर अनाज हो गया है । एक मुट्ठी भर कर अनाज बोया था। एक टोकरी भर कर निकला।

सबने बोमा-गोमा को शाबाशी दी। अब सबने कहा, "अगली बार दस

मुट्ठी अनाज बोएंगे। देखें, कितना निकलता है। इस जगह पर अनाज की घास नहीं थी। पर अब हम बो कर उगा लेंगे।" इस तरह सुंगा झुंड ने खेती करनी शुरू की।

सुंगा झुंड के लोगों ने अनाज किस चीज़ से काटा होगा?

यह औज़ार पहले उनके किस काम आता था?

वाक्य पूरा करो :

नई जगह पर सुंगा झुंड ने खेती शुरू की क्योंकि ________________।

किसने शुरू की, कहां की और कब की

सबसे पहले खेती किसने शुरू की और कहां शुरू की? बोमा गोमा की बात तो एक कहानी है। वास्तव में सबसे पहले खेती की शुरुआत ईरान और ईराक देश की पहाड़ियों की **तलहटी** में हुई। आज से 8000-10000 साल पहले वहां रहने वाले लोगों ने सबसे पहले खेती करना शुरू किया। बाद में जगह-जगह कई शिकारी लोगों ने अपने यहां खेती करनी शुरू की। अपने देश में खेती की शुरुआत आज से 5-6 हज़ार साल पहले हुई।

जैसे सुंगा झुंड था वैसे शिकारियों के और भी कई झुंड थे। धीरे-धीरे उन्हें पौधों को उगाने के बारे में कई बातें पता भी चल गईं थीं। ख़ासकर, झुंड की औरतों को पेड़-पौधों के बारे में काफी ज्ञान रहता था। यह इसलिए क्योंकि आमतौर पर जंगली फल, दानें, जड़ें, आदि इकट्ठा करने का काम वे ही किया करती थीं। पेड़-पौधों को करीब से देखते-देखते वे उनके बारे में काफी कुछ समझने लगीं थीं। जब ज़रूरत पड़ी तो उन्होंने इस जानकारी का उपयोग किया और खुद पौधे उगाना शुरू किया।

क्या सभी झुंडों ने खेती अपनाई?

कई झुंडों ने खेती शुरू कर दी। फिर भी कई और झुंड शिकार कर के, व जंगली फल आदि बटोर के ही रहते रहे। उन्हें खेती अपनाने की ज़रूरत ही नहीं लगी।

सुंगा झुंड को भगा कर उनकी पुरानी जगह पर दूसरा झुंड रहने लगा था। क्या उस झुंड ने भी खेती शुरू की होगी? सोच कर बताओ।

यह तो तुमने भी देखा होगा कि जब कोई नई चीज़ आती है तो सब लोग उसे एक साथ नहीं अपनाते।

जंगली गेहूं आज का गेहूं जंगली मक्का आज का मक्का

दूसरे जंगली अनाज

जब ट्रेक्टर आया तो क्या सब किसानों ने ट्रेक्टर खरीद लिया?

जब मोटर-सायकिल आई तो बैलगाड़ी और सायकिल का उपयोग क्या बन्द हो गया?

इन बातों के क्या कारण हैं?

आज भी दुनिया में कहीं-कहीं ऐसे झुंड हैं जो शुरू से लेकर आज तक शिकार व बटोरने का काम ही करते आ रहे हैं। उनके चारों तरफ खेती, व्यापार, कारखाने शुरू हो गए हैं। पर वे अभी भी जंगलों में शिकार करके जीते हैं।

अपनी-अपनी परिस्थिति और ज़रूरत के अनुसार अलग-अलग झुंडों ने काम किया। दुनिया भर के झुंड एक साथ खेती करने लगे हों, ऐसा नहीं था। किसी झुंड ने पहले खेती शुरू की तो किसी झुंड ने बाद में और किसी झुंड ने आज तक नहीं की।

किसी झुंड ने जौ के पौधे उगाने शुरू किए क्योंकि उसके इलाके में जंगली जौ ही उगती थी। किसी झुंड ने मक्के की खेती शुरू की क्योंकि उसके इलाके में जंगली मक्का ही मिलता था। कहीं शकरकंद उगाया जाने लगा, कहीं गेहूं। इस तरह धीरे-धीरे दुनिया में खेती फैलने लगी।

अभ्यास के प्रश्न

1. शिकार करते हुए भी किसी झुंड के लोग एक जगह बस के कैसे रह सकते थे? समझाओ।
2. बोमा-गोमा ने अनाज उगाने के बारे में क्या-क्या बातें सीखीं थीं?
3. पुरानी जगह पर झुंड के लोगों ने अनाज बोने से मना क्यों किया था? नई जगह पर वे अनाज बोने को तैयार क्यों हो गये थे?
4. क) खुदाई करने से मिली जानकारी के अनुसार खेती की शुरुआत सबसे पहले कहां हुयी थी?
   ख) पाठ पढ़ने से पहले तुम खेती की शुरुआत के बारे में क्या सोचते थे? पाठ पढ़ के तुम्हें क्या बातें पता चलीं? अगर तुम्हारे मन में इसके बारे में कुछ और प्रश्न हों तो **सवालीराम** को लिख के पूछो।
   ग) खेती की शरुआत के बारे में यहां दिये अंश को पढ़ो और उसे पूरा करो।

   खेती की शुरुआत कैसे हुई होगी?

   पहले सभी झुंड जंगल से शिकार और फल लाते थे। वे जंगल में उगने वाला अनाज भी बटोर कर खाते थे। जब तक किसी झुंड को ये चीज़ें ठीक से मिलती रही होंगी तब तक वह झुंड इसी तरह रहता रहा होगा। पर अगर ....
5. सही गलत बताओ -
   (क) सुंगा झुंड से सीख कर ही दुनिया के सब झुंडों ने खेती करना शुरू कर दिया।
   (ख) सब झुंडों में बोमा गोमा जैसे बच्चों ने खेती की खोज की।
   (ग) खेती शुरू करने के काम में आम-तौर पर झुंड की औरतें आगे रही होंगी।
   (घ) अलग-अलग झुंडों ने अलग-अलग समय पर खेती अपनाई।
   (ड) शुरू-शुरू में सब झुंड गेहूं की खेती किया करते थे।

तब से अब तक .... जोतना, बोना, काटना...

यहां खेती के पुराने और नये औज़ारों के चित्र मिले हुए हैं। तुम इन्हें छांट कर अलग-अलग करो और नीचे की तालिका में लिखो कि सबसे पुराना, फिर उससे नया और सबसे नया औज़ार कौन सा है -

दुफन

ट्रेक्टर से बोनी
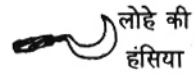
नुकीली लकड़ी

	जोतने का औज़ार	बोने का औज़ार	काटने का औज़ार
सबसे पुराना			
उससे नया			
सबसे नया			

हाथ से बोनी

हार्वेस्टर से कटाई

लकड़ी की कुदाल

हल

पत्थर के दांत की हंसिया

ट्रेक्टर

लोहे की हंसिया

मनुष्य ने जानवर पालना शुरू किया

जैसे मनुष्य ने कभी खेती शुरू की, वैसे ही कभी जानवरों को पालतू बनाना भी शुरू किया। जिस समय खेती की शुरुआत हुई लगभग उसी समय **पशुपालन** भी शुरू हुआ। किसी झुंड ने जंगली गाय को पालतू बनाया तो किसी और झुंड ने भेड़ और बकरी को पालना शुरू किया। जानवर का शिकार करते-करते क्यों और कैसे मनुष्य उसे पालने लगा - इस बात का तो हम अंदाज़ा ही लगा सकते हैं।

शायद ऐसा होता था कि शिकार करते वक्त जंगली जानवरों के नन्हें बच्चे शिकारी लोगों की पकड़ में आ जाते थे। मरे हुए जानवर के साथ-साथ शिकारी लोग जानवरों के बच्चों को भी ज़िन्दा पकड़ के अपने डेरे में ले आते थे। वे यह सोचते थे कि जब शिकार हाथ नहीं आएगा तब इन ज़िन्दा जानवरों को मार कर खा लेंगे। इस तरह शिकारी लोग भेड़ों व बकरियों के नन्हें मेमनों को, नन्हें

बछड़ों व बछियाओं और दूसरे जानवरों के बच्चों को अपने पास बांध के रखने लगे। उन्हें खिलाने पिलाने लगे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने समझा कि इन जानवरों को मार कर खा लेने की बजाए यदि ज़िन्दा पाला जाए तो बहुत से नए-नए फायदे मिल सकते हैं। इस तरह लोग पशुओं को पालने लगे।

पशुपालन अपनाने के कारण लोगों को कई नई चीज़ें मिलीं। पशुओं से कई कामों में मदद मिली। पशुओं की देख-रेख के लिए मनुष्य को कई नए काम भी करने पड़े।

पशुपालन के काम

नीचे दी गई सूची में से पहचानो कि इनमें से कौन से काम तब शुरू हुए जब मनुष्य पशुपालन करने लगा? उन कामों को अलग करके लिखो।

जानवर के चारे का इंतज़ाम, जानवर को मारने के लिए घेरना, जानवर के पीने के पानी का इंतज़ाम करना, मरे जानवर को कंधे पर ढो कर लाना, बीमार जानवर का इलाज़ कराना, जानवर को नहलाना, मरे जानवर की खाल उतारना, जानवर के रहने की जगह बनाना, थके जानवर को सुस्ताने देना, थके जानवर पर वार करना, जानवरों की दूसरे जानवरों से रक्षा करना, जानवरों को चोरी-डकैती से बचाना, मरे जानवर के सींग निकालना, जानवर का मांस काटना, दूध दुहना, जानवर के बच्चों के जन्म में मदद करना।

पशुपालन से लाभ

पशु पालना शुरू करने के बाद मनुष्य को कई तरह के लाभ भी मिलने लगे। पालतू पशुओं से हमें किस तरह के लाभ मिलते हैं, यह तो तुम जानते ही हो।

नीचे बताई बातों में से वे कौन से लाभ हैं जो मनुष्य को पशुपालन करने के बाद ही मिलने लगे?

दूध, मांस, घी, चरबी, दही, खाल, ऊन, हड्डी की चीज़ें, सींग की चीज़ें, गाड़ी खींचने की सहायता, सामान ढोने की सहायता, हल खींचने की सहायता।

पशुओं से मनुष्य को तरह-तरह की चीज़ें मिलने लगीं। पर यही नहीं। कई पशुओं की ताकत भी मनुष्य के काम आने लगी। जैसे– बैल, भैंस, ऊंट, घोड़ा, खच्चर आदि।

क्या तुम्हें लगता है कि इन पशुओं में मनुष्य से ज़्यादा ताकत होती है?

इन पशुओं की सहायता के बिना मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह जाने में और एक जगह से दूसरी जगह माल लाने-ले जाने में बहुत कठिनाई होती थी। पशुओं की सहायता से यात्रा करना सरल हो गया। आगे जा कर खेती करने में भी बड़ी सहायता मिली।

क्या तुम बता सकते हो कि पशुओं से खेती में क्या-क्या लाभ मिलता है?

इन सब बातों से मनुष्य का जीवन बहुत बदलने लगा। यह तुम आगे के पाठ में देखोगे।

3. गांवों का बसना

अब हम उस समय पर आ गए हैं, जब लोग खेती करके जीने लगे थे। ऐसी कोई तीन-चार बातों पर चर्चा करो जो खेती करने के बाद लोगों के जीवन में ज़रूर बदली होंगी।

किसानों का गांव

यहां खेती करने वाले एक झुंड के गांव का चित्र दिया है। खेती करने वाले झुंड का यह चित्र शिकारी मानव के चित्रों से कितना अलग दिखता है! पर, शिकारी मानव के दिनों की तुलना में क्या सब कुछ बदल गया है?
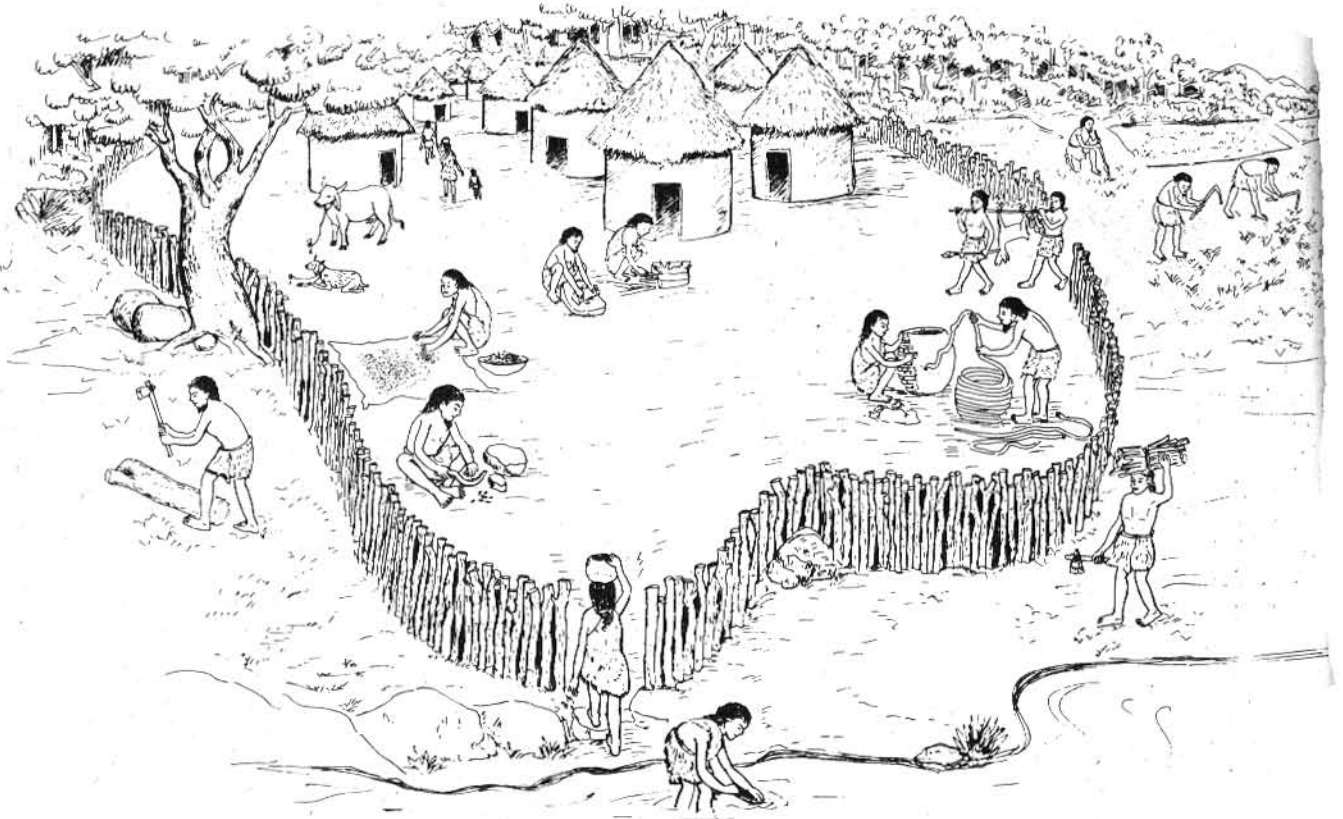
चित्र की हर चीज़ को ध्यान से देखो। देखो कि वो शिकारी मानव के समय में भी थी या नई है? इस तालिका में लिख कर बताओ :

चित्र में शिकारी मानव के समय की बातें	*चित्र में खेती के बाद की नई बातें*
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.

तुम्हारे ध्यान में यह बात आ गई होगी कि झुंड के लोग खेती करने के बाद भी शिकार करके लाते हैं। पर इसमें आश्चर्य की क्या बात है? खेती के वे शुरू-शुरू के दिन थे। तब लोग खेती-बाड़ी के तौर-तरीके सीख ही रहे थे। इतनी खेती नहीं हो पाती थी कि साल का पूरा भोजन उसी से मिल जाए। लोगों को भोजन में मांस की ज़रूरत भी थी। इसलिए खेती कें साथ आसपास के जंगलों से शिकार मार के लाना और फल-जड़ बटोर के लाना भी चलता रहा। पर, पहले की तरह नहीं। पहले मनुष्य अपने भोजन के लिए पूरी तरह जंगल पर **निर्भर** था। अब वह खेती पर निर्भर रहने लगा था।

इस झुंड ने हर साल धीरे-धीरे जंगल काट के साफ किए थे। पर, इस काम को करने के लिए उनके पास कौन से औज़ार थे ? उनके पास पत्थर की कुल्हाड़ियां थीं जो लकड़ी के हत्थों में फंसा कर काम में लाई जाती थीं। पत्थर की कुल्हाड़ियों से घने जंगल काटने में बहुत समय लगता था और बहुत कठिनाई होती थी। उन दिनों लोहा, तांबा जैसी धातुओं का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था। इसलिए ज़्यादा अच्छे औज़ार इस झुंड के पास नहीं थे।

झुंड के सब लोगों ने बहुत मेहनत से काम किया। उन्होंने जंगल काट कर जलाए। मिट्टी के बीच पड़े कंकड़-पत्थर भी साफ किए। तब जा कर ज़मीन खेती के लायक बनती गई। झुंड के सब लोगों की मेहनत से खेती का इलाका फैलता गया। तुमने चित्र में देखा कि गांव के आसपास खेत हैं और जंगल दूर तक नहीं दिख रहे हैं।

खेती करने वाले लोग शिकार क्यों करते थे?

झुंड के लोगों को खेती फैलाने में समय क्यों लगा?

एक जगह बसना

नदी किनारे गांव था। हर साल बरसात के दिनों में नदी में बाढ़ आती थी । बाढ़ का पानी खेतों में भर जाता था । कुछ दिनों में बाढ़ का पानी तो उतर जाता था, पर खेतों में नई मिट्टी बिछी रह जाती थी। हर साल इस नई मिट्टी पर अच्छी फसल उग आती थी। साल-दर-साल इन्हीं खेतों से बारहों महीनों का अनाज, दाल मिलने लग गया था। अब भोजन की तलाश में जगह-जगह घूमने की ज़रूरत नहीं रही थी।

लोग अब घूम भी नहीं सकते थे क्योंकि खेती की देखभाल करनी पड़ती थी।

बोनी से लेकर कटाई तक खेती की देखरेख में क्या-क्या करना होता है, बताओ।

नदियों, तालाबों और नालों के आसपास गांव बसते गए। कई-कई सालों तक लोग उनमें रहने लगे। लोग अब लंबे समय तक एक ही जगह बसकर रहने लगे।

शुरू के इन गांवों में 100 से 150 लोगों की आबादी रहा करती थी। यह आज के गांवों की तुलना में तो कम है। पर शिकारी मानव के झुंड की तुलना में ज़्यादा लोग एक साथ एक जगह रहने लगे थे।

शुरू-शुरू के घर

खुदाई करने पर हमें शुरू-शुरू के घरों के **अवशेष** (यानी बचे हुए निशान) मिलते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरह के घर बने। कहीं लोग मिट्टी को खोद कर गड्ढे में घर बनाते थे। कहीं घास-फूस के भी घर बनाते थे। नर्मदा किनारे घर कैसे बनते थे – इस बात का अन्दाज़ा तुम यहां दिए गए चित्रों को देख कर लगा सकते हो।

शुरू-शुरू में घर बनाने का एक तरीका

लोग जंगल से ये चीज़ें काट के ले आते और मिट्टी इकट्ठी करके पानी में घोल लेते।

सबसे पहले वे ज़मीन साफ कर के कंकड़-पत्थर हटा देते और फर्श एक सा कर देते। फिर ज़मीन में गड्ढे खोद कर लकड़ी के खम्भों को गाड़ देते–
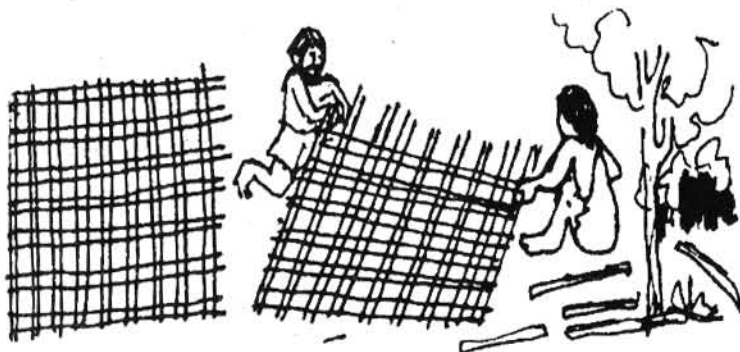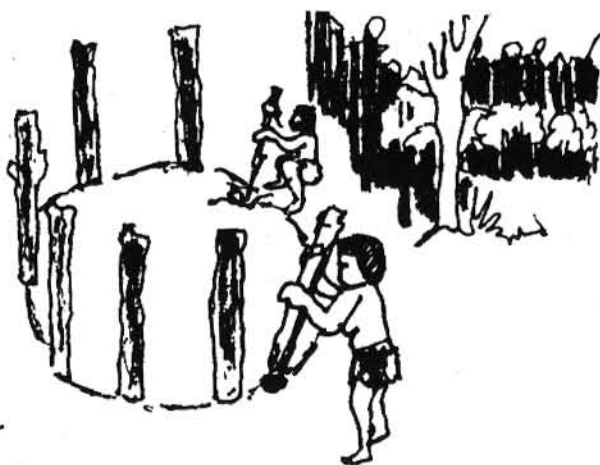
फिर बांस की खपच्चियां बनाते। खपच्चियों को बुन कर टट्टे तैयार करते।
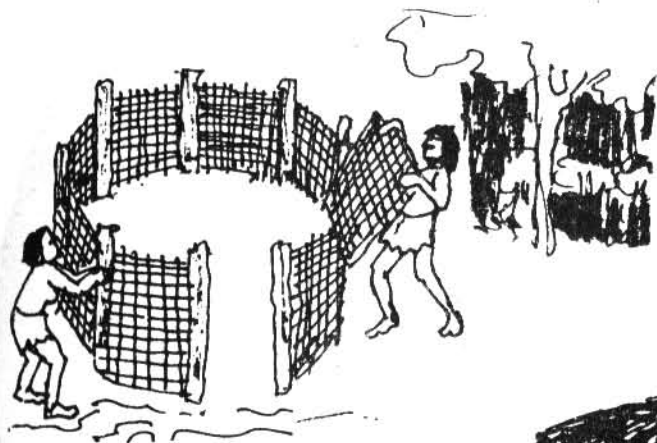
टट्टों को खंभों के साथ बांध देते।

फिर बांस की खपच्चियों से छत बनाते।
उसके ऊपर घास बिछा कर बांध देते।

फिर छत को खम्भों पर चढ़ा कर कस के बांध देते।
टट्टों पर अन्दर और बाहर से मिट्टी का लेप कर देते। फर्श भी मिट्टी से लीप देते।

क्या तुम्हारे गांव में भी कुछ घर इस तरह बनाए जाते हैं?

याद करो शिकारी मानव कैसे रहता था?

शिकारी मानव अपने रहने का इतना पक्का इंतज़ाम नहीं करता था, जितना खेती करने वाले लोग करने लगे।

तुम्हें क्या लगता है – शिकारी मानव को ऐसे मज़बूत घर बनाने की ज़रूरत क्यों नहीं पड़ती थी?

खेती करने वाले लोगों को मज़बूत घरों की ज़रूरत क्यों थी?

अनाज जोड़ के रखना

खेती करने वालों को कई नई बातों का सामना करना पड़ा। हर साल फसल की कटाई के बाद एकदम अनाज का ढेर लग जाता था। पानी से, कीड़ों से और चूहों से अनाज बचाना था। इस अनाज को कई महीनों तक खाने के लिए **सुरक्षित** रखना ज़रूरी था।

अनाज, दाल, तिल जैसी चीज़ें बिना सड़े कितने दिन रह सकती हैं?

शिकारी मनुष्य का भोजन कितने दिन तक बिना सड़े रह सकता था?

सामान भर के रखने की ज़रूरत किसे ज़्यादा थी– शिकारी मानव को या खेती करने वालों को?

शिकारी मानव का काम तो पतली टहनियों की टोकरियों से, खाल की पोटलियों से या पत्तों के दोनों से चल जाता था। पर खेती की शुरुआत के बाद अनाज भर के रखने के लिए मनुष्य को बड़ी और मज़बूत चीज़ें बनानी पड़ीं।

लोगों को बांस या टहनियों की छोटी टोकरियां

बुनना तो आता ही था। अब उन्होंने बड़ी टोकरिया बुनीं। टोकरियों पर चिकनी मिट्टी का लेप किया। फिर उन्हें धूप में सुखाया या आग में पकाया। आग में टोकरी तो जल जाती थीं पर मिट्टी का खाका पक्का बन जाता था।

अनाज भरने के बर्तन बनाने के लिए एक और तरीका भी अपनाया गया। इसके लिए मिट्टी को अच्छी तरह गूंथ लिया जाता था। फिर मिट्टी को हाथों के बीच मल कर लम्बा सा रस्सा जैसा कर लिया जाता था। मिट्टी के लम्बे रस्से से एक गोल घेरा बनाया जाता था। फिर उस पर एक-एक कर के घेरा चढ़ाते जाते थे। इस तरह यह घेरा एक बड़े घड़े जैसा बन जाता था। इसमें अनाज भर कर रख देते थे।

क्या तुम समझा सकते हो कि शिकारी मानव के झुंड ने बड़ी और पक्की टोकरियां क्यों नहीं बनाई थीं?

आज-कल अनाज किन चीज़ों में भर कर रखा जाता है?

भोजन पकाने की नई चीज़ें

खेती करने के बाद लोग अनाज ज़्यादा खाने लगे। जिन लोगों ने पशुपालन भी शुरू कर दिया था, उनके भोजन में दूध भी जुड़ गया था। दूध, अनाज, दाल पकाने के लिए मनुष्य को नई चीज़ें बनानी पड़ीं।

शिकारी मानव मांस को आग पर लटका के भून लेता था। वह फल, कन्द-मूल कच्चे खा लेता था। जंगली अनाज के थोड़े बहुत दाने आग में भुन जाते थे या पानी में भिगो कर खाए जाते थे। शिकारी मानव ने खाना पकाने के लिए बर्तन नहीं बनाए थे।

खेती करने वाले लोगों ने अनाज, दाल, दूध पकाने के लिए कई तरह के बर्तन बनाए। लोग हाथ से मिट्टी के बर्तन बनाने लगे। इन बर्तनों को वे धूप में सुखा लेते थे या आग में पका लेते थे। उन दिनों चके की खोज नहीं हुई थी। इसलिए आज जिस तरह चके पर मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं उस समय नहीं बनाए जा सकते थे। जब चके की खोज हुई तो गांव के लोग चके पर सुन्दर बर्तन भी बनाने लगे।

अनाज को कूटने और पीसने के लिए भी कुछ इन्तज़ाम करना ज़रूरी था। इस काम के लिए सिल-बट्टे का इस्तेमाल होने लगा।

आज-कल अनाज कैसे पीसा जाता है?

सिलबट्टा आज किस काम में आता है?

एक और समस्या भी थी। बर्तन को आग पर रखने से आग बुझ जाती थी। लोगों ने आग के दोनों तरफ जगह ऊँची करनी शुरू की जिससे उस पर ठीक से बर्तन टिकाए जा सकें। इस तरह चूल्हे बनने लगे।

सोच कर बताओ कि अगर आज चूल्हा और सिलबट्टा न हों तो हमारे खाने की चीज़ों में क्या-क्या कमी आ जाएगी?

शुरू के गांवों के निशान

जैसे शिकारी मानव के निशान मिलते हैं वैसे ही शुरू के गांवों की बची-खुची चीज़ें भी मिलती हैं।

क्या तुम्हें याद है कि शिकारी मानव के क्या निशान मिलते हैं?

शुरू के गांव जहां-जहां थे, वहां खोदने पर लीपे हुए फर्श मिलते हैं, तरह-तरह के मिट्टी के बर्तन मिलते हैं, चूल्हे के हिस्से मिलते हैं, पत्थर के सिलबट्टे मिलते हैं, बारीक पत्थरों के औज़ार मिलते हैं, घिस कर चमकाई हुई पत्थर की कुल्हाड़ियां मिलती हैं। यही नहीं, अनाज के जले हुए कुछ दाने भी अब तक बचे रहे हैं। पालतू जानवरों की हड्डियां भी वहां पाई जाती हैं। कहीं-कहीं मिट्टी की छोटी मूर्तियां भी निकल

आती हैं। ये शायद उन लोगों की देवियों की मूर्तियां थीं।

इतनी चीज़ें आज भी बची हुई मिल जाती हैं। इन्ही चीज़ों से हमें उन लोगों के बारे में पता चलता है। फिर भी शुरू के गांवों की बहुत सी चीज़ें समय के साथ **नष्ट** हो गई हैं।

क्या तुम बता सकते हो कि शुरू के गांवों की किन चीज़ों के निशान आज नहीं मिल सकते हैं?

अभ्यास के प्रश्न

1. खेती करने वाले लोग घर क्यों बनाने लगे?
2. खेती करने वाले लोगों को भोजन की तलाश में घूमने की ज़रूरत क्यों नहीं रही?
3. (क) खेती करने वाले लोगों को इन चीज़ों की ज़रूरत क्यों थी –
   1. खाना पकाने के बर्तन
   2. अनाज रखने के बड़े बर्तन
   3. चूल्हा
   4. सिलबट्टा

   (ख) इन चीज़ों के बगैर कैसे काम चलाया जा सकता है? समझाओ।
4. बोमा-गोमा का झुंड भी एक जगह रहता था और खेती करने वालों का झुंड भी एक जगह बस कर रहता था। फिर भी दोनों झुंडों में कई फर्क हैं। कोई तीन फर्क सोच कर लिखो।
5. इस चित्र में बहुत सी चीज़ें दिख रहीं हैं। कौन सी चीज़ें हैं जो शिकारी मानव की नहीं हो सकतीं? कौन सी चीज़ें शिकारी मानव और खेती करने वाले लोग- दोनों की हो सकती हैं? अलग-अलग पहचान कर निशान लगाओ।
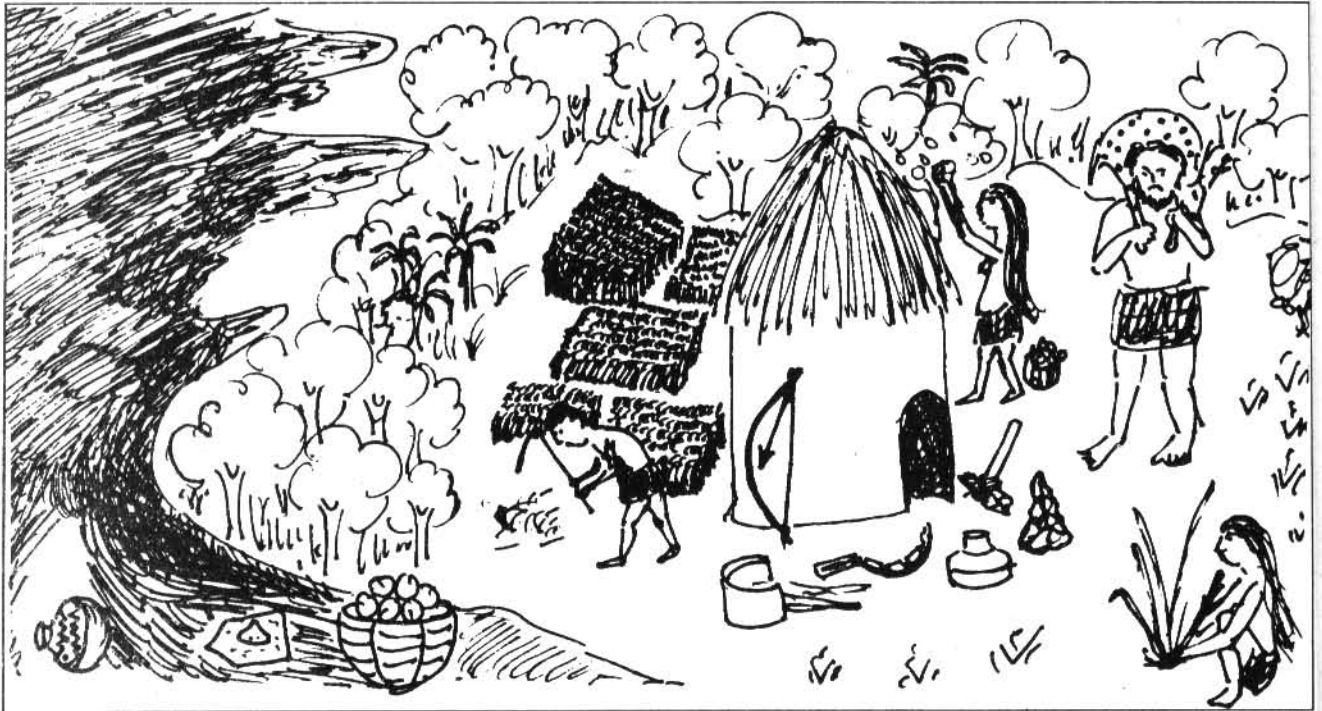
6. बहुत समय बीता। शुरू का गांव कैसा होता था, तुम जानते हो। सैकड़ों सालों बाद वह गांव ऐसा दिखने लगा-

क. इन सैकड़ों सालों में गांव में क्या-क्या बदला, ढूंढो।

ख. अगर तुम इसे आज के गांव का चित्र बनाना चाहो तो इसमें और क्या-क्या जोड़ोगे? चित्र में जोड़ कर दिखाओ।

7. ज़मीन खोदने पर शुरू के गांवों के निशान मिलते हैं। एक बार ये निशान मिले –

क. क्या तुम पहचान सकते हो कि यहां पहले क्या रहा होगा?

ख. अगर आज से कई हज़ार साल बाद तुम्हारे स्कूल के भवन के निशान ज़मीन में दबे मिलें, तो कैसे दिखेंगे? चित्र बना कर बताओ।
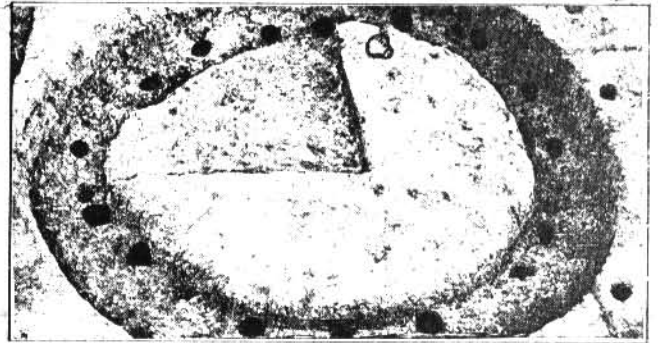
8. क्या इस पाठ से शुरू के गांवों के बारे में सारी बातें पता लग जाती हैं ?
क्या तुम्हारे मन में ऐसे कुछ सवाल हैं जिनका उत्तर पाठ में नहीं है ?
तुम अपने सवाल **सवालीराम**को चिट्ठी लिख कर पूछ सकते हो।

4. सबसे पुराने शहर - सिन्धु-घाटी के शहर

ज़रा अन्दाज़ा लगाओ भारत में सबसे पहले शहर कब बने होंगे-
100 साल पहले, या 5 हज़ार साल पहले, या 50 हज़ार साल पहले?
सबसे पुराने शहरों में आज के शहरों जैसा क्या रहा होगा? और आज के शहरों से फर्क क्या रहा होगा?
तुम उन सबसे पुराने शहरों के बारे में क्या जानना चाहते हो ?

मोहनजोदड़ो शहर की सड़कें और नालियां

छह-सात हज़ार साल पहले भारत में भी कई जगहों पर खेती शुरू हुई थी। गांव बसे थे। इनके बारे में तुम पिछले पाठ में पढ़ चुके हो।

पुराने शहरों की खोज

सन् 1922 की बात है। तब भारत में अंग्रेज़ों का राज्य था। सिन्ध प्रान्त में एक गांव था मोहनजोदड़ो। एक बार इस गांव के लोग ज़मीन खोद कर मिट्टी निकाल रहे थे।

पर यह क्या? उन्होंने पाया कि नीचे तो ईंट की एक बड़ी दीवार दबी हुई थी। लोगों को बहुत **अचम्भा** हुआ। वे सोचने लगे- यहां कोई रहता था क्या? आखिर कितना पुराना है यह सब ?

मोहनजोदड़ो की सड़क व घर

चार-पांच हज़ार साल पहले लोग खेती करके, पशु पाल के या शिकार आदि कर के जीते थे। क्या इतने पुराने समय में शहर भी बन गये थे?

गांवों के बीच शहर

धीरे-धीरे और खोज हुई। कई जगहों पर खुदाई की गई तो पता चला कि उस समय एक नहीं, दो नहीं, कई शहर थे। ये शहर भारत के सभी इलाकों में नहीं बसे थे। वे ख़ास कर एक बड़ी नदी और उसमें मिलने वाली दूसरी छोटी नदियों की **घाटी** में बसे हुए थे।

पुरानी चीज़ों की खोज करने वाले लोगों ने और गहरी खुदाई की तो नीचे दबा हुआ पूरा का पूरा शहर निकल आया। लोग नीचे उतर कर उसकी गलियों में घूमने लगे।

उन्होंने देखा कि घरों से उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हैं। मानो आज के घर हों! और घरों के बीच यह सड़क! जैसे आज शहरों में बनती है। इतना बड़ा शहर! यहां कितने लोग रहते होंगे?

जब खोजबीन की गई तो पता चला कि यह दबा हुआ शहर बहुत ही पुराना है। **आश्चर्य** तो तब हुआ जब पता लगा कि यह शहर चार-पांच हज़ार साल पुराना है। उस समय यह माना जाता था कि

तुम मानचित्र -1 में देख कर बताओ कि उन सबसे पुराने शहरों के निशान जिन जगहों पर मिलते हैं उनके नाम क्या हैं ?

ये जगहें किस बड़ी नदी की घाटी में हैं?

किन नदियों के मैदानों में सबसे पुराने गांवों के निशान मिलते हैं?

क्या उन पुराने शहरों के चारों तरफ गांव बसे थे?

आज जो शहर बसे हैं, उनमें से किन शहरों को तुमने देखा है?

क्या आज के शहरों के चारों तरफ भी गांव हैं?

अगर गांव न हों तो क्या शहर बन सकते हैं?

सिन्धु नदी की घाटी और उसके आसपास के मैदान में गांवों को बसे हज़ार-दो-हज़ार साल हो गए थे। उसके बाद जाकर उन गांवों के बीच कई शहर बने।

बहुत से शहर जहां बसे थे वह इलाका आज पाकिस्तान देश में आता है। लेकिन रोपड़ नाम की जगह भारत के हरियाणा राज्य में है, कालीबंगां भारत के राजस्थान राज्य में और लोथल भारत के गुजरात राज्य में है।

भारत के सबसे पुराने शहर ——— नदी की घाटी में बने।

इन शहरों की खोज सन् ——— में हुई।

शहरों के निशान ———, ——— आदि जगहों पर मिलते हैं।

सिन्धु-घाटी के शहरों की इमारतें

खोदने पर शहरों में कई तरह की बड़ी-छोटी **इमारतें** मिलीं। कई दो मंजिला घर थे, अमीरों की कोठियां थीं, ग़रीब कारीगरों के छोटे-छोटे घर भी थे।

चित्र में उन इमारतों की दीवारें देखो। कितनी ऊंची दीवारें हैं। इन्हें किसी मिस्त्री ने बनाया होगा! दीवारें पक्की ईंटों की बनी हुई हैं। उस समय ईंट बनाने की भट्टियां रही होंगी! क्या पता भट्टियों पर कौन लोग काम करते थे! शायद तब ग़रीब मज़दूर हुआ करते थे!

शहर की सड़कें गांव की गलियों की तरह टेढ़ी-मेढ़ी नहीं थीं। बिल्कुल सीधी-सीधी थीं। सड़कों के किनारे पक्की नालियां बनी थीं। हर घर की नाली बड़ी नालियों से मिल जाती थी। यह सब देख कर लगता है कि ये शहर कितनी **सूझबूझ** के साथ बनाए गए थे।

ये शहर किसने बनाए, क्यों बनाए - यह कहानी तो शायद हमें कभी पता नहीं चलेगी। पर उनकी बची-खुची निशानियां देख कर हमें यह ज़रूर पता लग जाता है कि शिकारी मानव और शुरू के गांवों की तुलना में शहर के लोगों का जीवन कितना बदल गया था।

सिन्धु-घाटी के शहरों की खुदाई में पक्के घरों के अलावा बड़े-बड़े गोदाम मिलते हैं। आसपास के गांवों से अनाज इकट्ठा कर के इन्हीं गोदामों में रखा जाता होगा।

घरों और गोदामों के अलावा मोहनजोदड़ो में एक बड़ा सा तालाब मिला है। इसके चारों तरफ कमरे बने हुए थे। हर कमरे से तालाब तक आने के लिए अलग-अलग सीढ़ियां बनी थीं। क्या पता इस तालाब में कौन लोग नहाते थे और उनके नहाने के लिए इतने सारे इन्तज़ाम क्या सोच के किए गए थे!

खुदाई करने पर शहरों की कैसी इमारतें मिलती हैं?

ऐसा क्यों लगता है कि सिन्धु घाटी के शहर बहुत सोच-विचार कर बनाए गए थे?

शहरों को बड़े गोदामों में अनाज भर के रखने की ज़रूरत क्यों पड़ी होगी?

बड़ी बड़ी इमारतों के अलावा सिन्धु-घाटी के शहरों से कई छोटी मोटी चीज़ें भी मिलती हैं। इनके चित्र देखो।
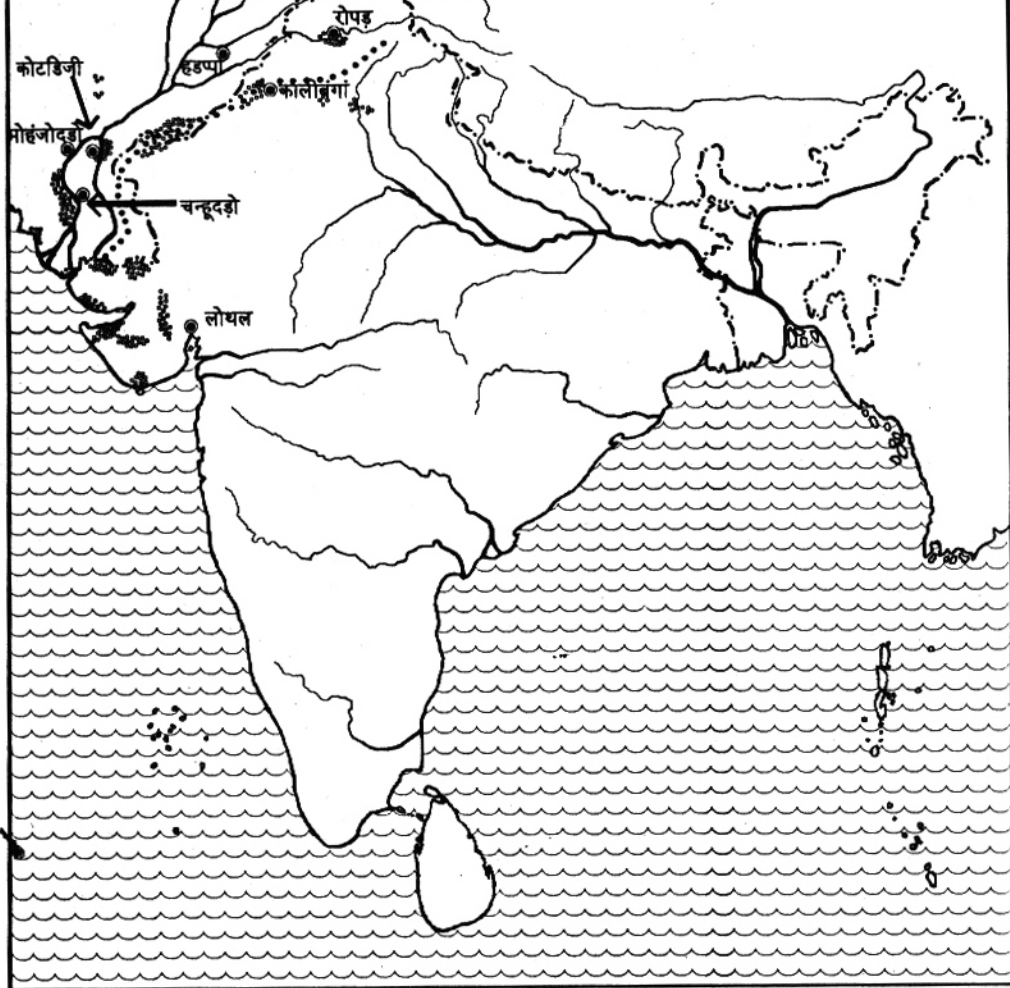
संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—·—
सागर	︶︶︶
शहर	◉
गांव व बस्ती	⁞
सरस्वती नदी	······

धातु की चीज़ें

कांसे की लंबी-पतली तलवार देखो – कितनी पैनी है।

क्या इस तरह की तलवार पत्थर से बनाई जा सकती थी?

धातु की और कौन सी चीज़ें चित्र में दिख रही हैं?

ये चीज़ें तांबे और कांसे की बनी हुई हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सिन्धु घाटी के शहरों के समय तक लोग ज़मीन में से धातु निकालने और उसे साफ करने और गला कर चीज़ें बनाने के तरीके सीख गए थे।

पर आश्चर्य की बात तो यह है कि धातु की चीज़ें बनाने के साथ-साथ लोग पत्थर के औज़ार भी बनाया करते थे। इसका कारण शायद यह था कि तांबा व कांसा जैसी धातुएं, पत्थर की तुलना में बहुत ज़्यादा मज़बूत नहीं होतीं। ये धातुएं हर जगह आसानी से मिलती भी नहीं हैं। इसीलिए लोग कई औज़ार पहले की तरह पत्थर से ही बनाते रहे।

पहिया

खिलौने की बैल-गाड़ी देखो – लगता है जैसे अपने समय की बैलगाड़ी हो !

पर, एक फर्क है – ढूंढ सकते हो?

जो भी हो, इस बैल-गाड़ी में एक बहुत बड़ी खोज छिपी है -- वो है पहिया। पहिए से कितने काम आसान हो जाते हैं!

तुम अपने आसपास किस-किस काम में पहिए या चके का इस्तेमाल होता देखते हो?

आज हम यह नहीं बता सकते कि कैसे किसी ने पहिए की बात सोची होगी और पहला पहिया बनाया होगा। पर, सिन्धु घाटी के शहरों के समय

3. मिट्टी की मूर्ती

4. पत्थर के पट्टे पर खुदे चित्र
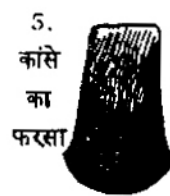
5. कांसे का फरसा
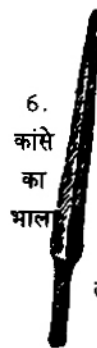
6. कांसे का भाला
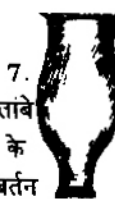
7. तांबे के बर्तन

8. मिट्टी के बर्तन

9. कांसे की मूर्ती
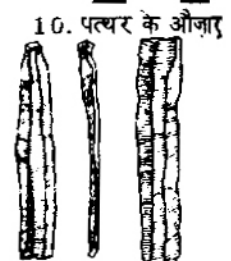
10. पत्थर के औज़ार

तक पहिए की खोज हो चुकी थी - तभी तो बैल-गाड़ी बनी।

उस समय चके का इस्तेमाल मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए भी होने लगा था। इसलिए, पहले की तुलना में बहुत अच्छे किस्म के बर्तन बनाए जाने लगे थे।

तुम सोच कर बताओ कि सिन्धु घाटी के शहरों के लिए बैल-गाड़ी एक जरूरी चीज़ क्यों रही होगी?

जब लोग पत्थर से औज़ार व हथियार बना लेते थे तो उन्होंने धातु की चीज़ें बनाना क्यों शुरू किया होगा? धातु के क्या फायदे हैं? चर्चा करो।

काम-धन्धे

चित्रों में दिख रही चीज़ों से तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि सिन्धु घाटी के शहरों में बहुत से कारीगर रहते थे। शहर के लोग अपनी ज़रूरत की सब चीज़ें घर पर नहीं बनाते थे। अलग-अलग चीज़ों को बनाने वाले अलग-अलग कारीगर थे जो अपनी चीज़ें बना कर दूसरों को बेचते थे।

क्या तुम उस समय रहने वाले कारीगरों की सूची बना सकते हो?

लिखाई

सिन्धु-घाटी के शहरों से एक ख़ास तरह की चीज़ें मिलती हैं। ये हैं पत्थर या मिट्टी के बने चौकोर पट्टे। पट्टों के चित्र देखो। तुम्हें पट्टों पर आदमी की **आकृति** और कुछ जानवरों, पौधों और बर्तनों की आकृति बनी दिख रही होगी।

पट्टों पर इस तरह की आकृतियां भी बनी हैं–

11. पत्थर की मूर्ति

13. मिट्टी के खिलौने

14. सोने चांदी के गहने

12. मिट्टी के पट्टे पर खुदा चित्र

15. खिलौने की बैल गाड़ी
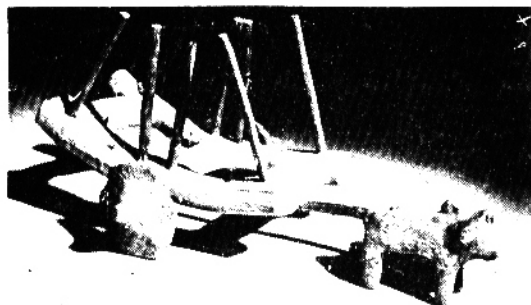
पट्टों पर ऐसा जो बना है उसे अपनी कापी में उतारो।

कुछ लोग मानते हैं कि यह उस समय की लिखाई है। अगर यह सच है तो यह कैसी लिखाई? लगता है जब शुरू में मनुष्य ने लिखना शुरू किया तो आज के अक्षरों जैसे अक्षर नहीं बनाए। उनके अक्षर चित्रों जैसे लगते हैं।

क्या तुम इस लिखाई को समझ पा रहे हो?

दरअसल विद्वान लोग भी सिन्धु-घाटी के शहरों की लिखाई को नहीं पढ़ पाए हैं। इसीलिए उन शहरों के बारे में बहुत सी बातें हम जान नहीं पा रहे हैं।

व्यापार

कुछ विद्वान सोचते हैं कि ये पट्टे वास्तव में व्यापारियों की मुहरें थे और व्यापारी जब एक जगह से दूसरी जगह सामान भेजते होंगे तो सामान बांध कर उस पर गीली मिट्टी थोपते होंगे और गीली मिट्टी पर अपनी **मुहर** से छाप बना देते होंगे ताकि उनके सामान की पहचान बनी रह सके।

लोथल से मिला नांव का नमूना

ऐसे पट्टे दूसरे देशों में भी पाए गए हैं - ख़ासकर ईराक देश में।

एशिया के नक्शे में ईराक देश पहचानो। देखो कि यह जगह सिन्धु-घाटी से कितनी दूर है?

ईराक में सिन्धु-घाटी के पट्टे कैसे और क्यों पहुंचे होंगे? लगता है कि उन दिनों ईराक और सिन्धु-घाटी के शहरों के बीच व्यापार होता था।

शहरों की खुदाई से मिली किन चीज़ों से पता चलता है कि वे लोग नदी या समुद्र पार करते थे?

सिन्धु-घाटी के शहरों में कई ऐसी चीजें मिलती हैं जो आसपास नहीं पाई जाती थीं। जैसे, नीले रंग का एक बड़ा सुन्दर पत्थर जिससे गहने बनाए जाते थे, शहरों की बची हुई चीज़ों में मिलता है। चांदी, सोने, सीसे व तांबे की बनी कई चीज़ें भी मिलती हैं, पर ये धातुएं सिन्धु-घाटी में नहीं पाई जातीं। इन्हें दूसरी जगहों से ही मंगाया जाता होगा।

दूर की जगहों से ये चीज़ें मंगवाना तो बहुत महंगा पड़ता होगा!

क्या तुम्हें लगता है कि सिन्धु-घाटी के शहरों में ऐसे अमीर लोग थे जो कीमती चीज़ें मंगवा के इस्तेमाल करते थे?

तुम्हारे मन में यह सवाल उठ रहा होगा कि अगर व्यापार होता था तो क्या सिन्धु-घाटी के शहरों से सिक्के भी मिलते हैं? नहीं, सिक्के तो नहीं मिलते। फिर किसी और ढंग से व्यापार होता होगा! एक तरह के सामान के बदले में दूसरी तरह का सामान दिया जाता होगा, पैसे नहीं!

देवी-देवता

क्या हम सिन्धु-घाटी के शहरों की चीज़ों को देख कर यह भी सोच सकते हैं कि वे लोग किसको पूजते थे?

तुम्हारे अनुमान से इन चित्रों में से कौन सी चीज़ों को सिन्धु-घाटी के शहरों के लोगों द्वारा पूजा जाता होगा?

शायद यह मिट्टी की मूर्ति उन लोगों की देवी की मूर्ति थी। पत्थर के पट्टे पर एक आकृति के सिर पर भैंसे का सींग है। उसके चारों तरफ कई जानवर बने हैं। यह कोई देवता रहा होगा! शायद उसे लोग पशुओं का देवता मान कर पूजते थे।

एक पट्टे पर क्या तुम्हें एक अजीब सा जानवर खुदा दिख रहा है? दूसरे पट्टे पर पीपल की पत्तियां और सांप भी बना हुआ है! शायद इनकी भी पूजा होती थी। इन बातों का तो हम अन्दाज़ा ही लगा सकते हैं, पक्की तरह से नहीं कह सकते।

ऊपर बताई किन चीज़ों को आजकल भी पूजते हैं?

शहरों का खत्म होना

आज से चार-पांच हज़ार साल पहले सिन्धु-घाटी में शहर बने थे। ये शहर नौ सौ सालों तक बने रहे। फिर किसी कारण से उजड़ गए और मिट्टी में दब के रह गए। उन शहरों के आसपास जो गांव थे, वे बाद में भी बने रहे।

सिन्धु-घाटी के शहरों के खत्म होने के बाद कई सौ सालों तक भारत में कोई शहर नहीं बना।

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां मनुष्य के इतिहास की कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से कौन सी पहले हुईं और कौन सी बाद में – सही क्रम में जमा कर लिखो –

   1. लिखना-पढ़ना 2. जंगल काट के खेत बनाना 3. जंगल से फल बटोर कर लाना 4. पशुओं को पालना 5. जंगली जानवरों का शिकार करना 6. शहरों का बनना 7. गाँव बसाना 8. दूर-दूर तक व्यापार करना

   सबसे पहले —

   उसके बाद —

   उसके बाद —

2. सिन्धु-घाटी के शहरों से मिलने वाले पट्टों के बारे में 4 मुख्य बातें बताओ।
3. अगर सिन्धु-घाटी के शहरों में उपयोग होने वाली लिखाई को हम पढ़ सकें तो उन लोगों के बारे में क्या-क्या जान सकते हैं? कोई तीन बातें सोचो।
4. सिन्धु-घाटी के शहरों के बारे में लोगों को पता कैसे चला? इस प्रश्न का उत्तर पाठ के **किस हिस्से** में मिलेगा – सही विकल्प चुनो। (1) शहरों की इमारतें (2) गांवों के बीच शहर (3) पुराने शहरों की खोज।
5. तुम्हें सिन्धु घाटी के शहरों में ऐसी क्या नई बातें दिखाई दीं जो शुरू के गांवों में नहीं पाई जाती थीं? सूची बनाओ।
6. मानचित्र क्र. 1 किस के बारे में है? इसमें क्या-क्या बताया गया है – चार-पांच वाक्यों में लिखो।
7. क्या तुम्हें पाठ पढ़ के सबसे पुराने शहरों के बारे में अपने सब प्रश्नों के जवाब मिल गये ? क्या तुम **सवालीराम** से भी कुछ सवाल पूछना चाहते हो ?

जो कुछ देखें जिससे खेलें
हाथों में मिट्टी लेके
हम झटपट गढ़ लें

बहुत पुराने
और अंजाने
दिनों की बातें
देखीं हमने

चलो बनाएं
मिट्टी लाएं
गुफा और भाला
घर और चूल्हा

जो मन भाए
गढ़ते जाएं
बीती सारी
बात बताएं॥

हर शनिवार को बाल सभा में हफ्ते भर पढ़े गए पाठों की बातों को लेकर मिट्टी के खिलौने बनाओ।

मानचित्र में नदियां

तुम जानते तो होगे कि नदियां आमतौर पर पहाड़ों से निकलती हैं, फिर मैदानों से बहती हुई सागर में जा कर मिल जाती हैं।

मानचित्रों में नदियों को काली या नीली लकीर से दिखाया जाता है। नदियां शुरुआत में पतली होती हैं और सागर तक पहुंचते-पहुंचते चौड़ी हो जाती हैं।

चित्र 1 में तुम नदी, ज़मीन और सागर को पहचानो। यह नदी कहां से शुरू हुई है? यह किस दिशा की ओर बह रही है? यह कहां जा कर खत्म हुई?

चित्र 1
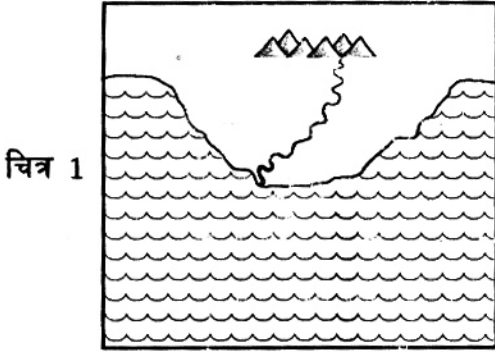
क्या नदी सागर से पहाड़ की ओर बह सकती है?

चित्र 2 में एक बड़ी नदी में कई छोटी नदियां मिल रही हैं और बड़ी नदी सागर में जा कर मिल रही है।

1. बड़ी नदी पर शुरू से आखिर तक पेंसिल फेरो।
2. उसमें कितनी छोटी नदियां मिल रही हैं?
3. जहां नदी सागर से मिल रही है वहां एक गोला बनाओ।

इस पुस्तक के अंत में भारत की नदियों का मानचित्र है। तुम उस मानचित्र को अपनी कापी में उतार लो।

चित्र 2

मनुष्य के इतिहास में गुज़रता समय
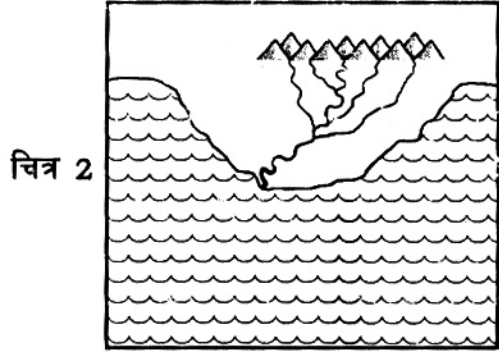
शहरों की शुरुआत और भी नयी बात है। आज से 4500 साल पहले ही सिंधु नदी की घाटी में शहर बसने लगे। ये शहर आज से 3500 साल पहले खतम हो गये।
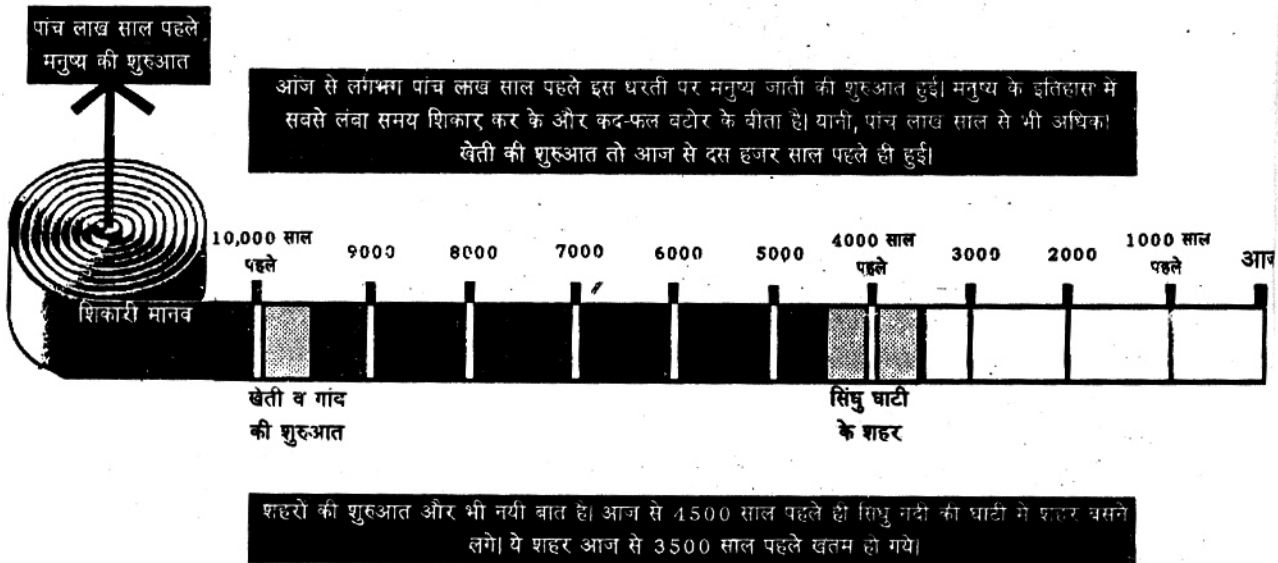
6. छोटे जनपद बने
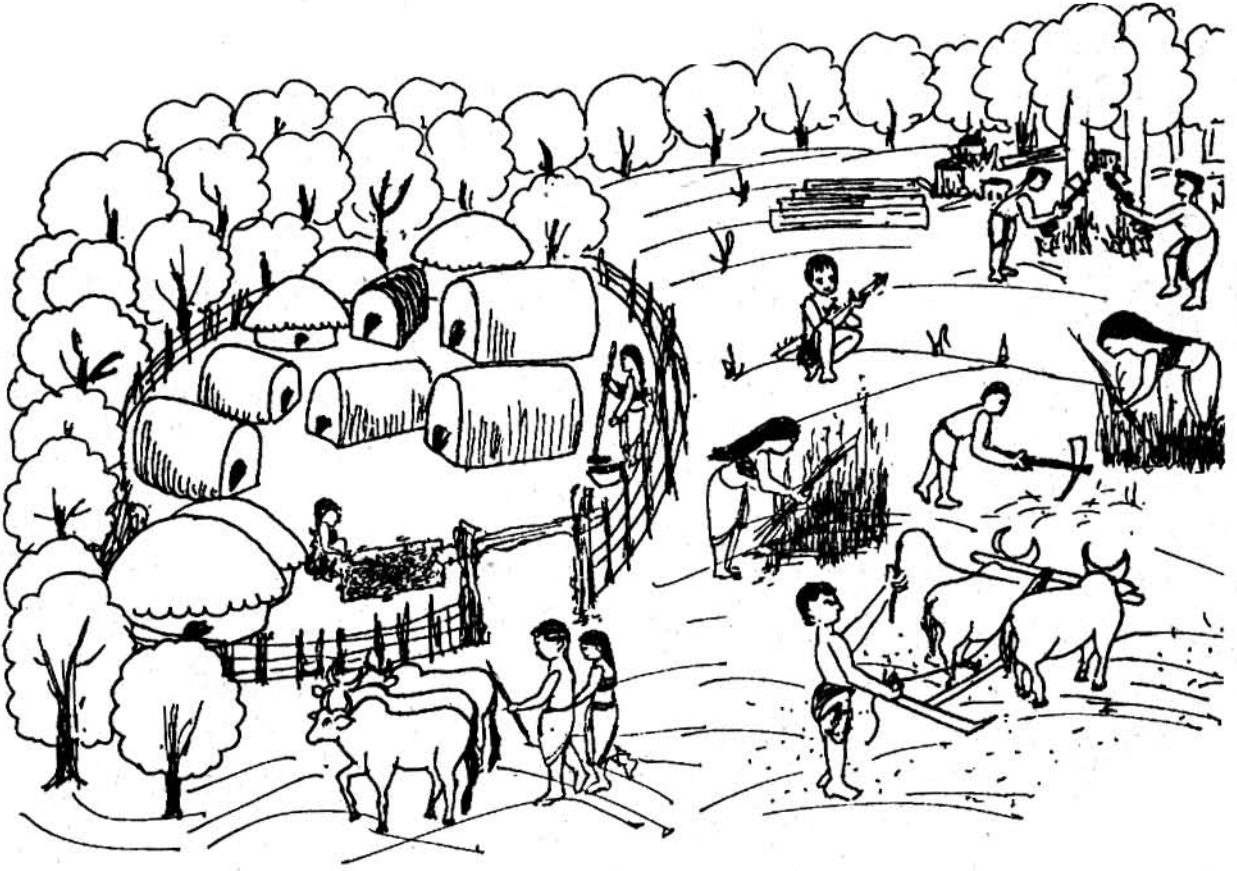
इस पाठ में जिस समय की कहानी है उस समय कई नई बातों की शुरुआत हुई थी। पाठ के उपशीर्षकों को पढ़ कर कम से कम तीन ऐसे शब्द ढूंढो जिन्हें तुम पुस्तक में पहली बार पढ़ रहे हो। इन नए शब्दों के क्या मतलब हो सकते हैं, चर्चा करो।

सूखती नदी

पशुपालक आर्य लोग सिन्धु और सरस्वती नदियों के किनारे रहते थे। धीरे-धीरे समय बीता। लगभग पांच सौ साल बीत गए। किसी कारण से उन दिनों सरस्वती नदी सूखने लगी। धीरे-धीरे नदी पूरी तरह सूख गई और नदी की जगह रेत ही रेत रह गई। सरस्वती नदी के किनारे रहने वाले लोग दूसरी जगह जाने लगे। आर्यों के जन भी अपने पशुओं के लिए चारा-पानी खोजते हुए निकल पड़े।

लोग किन नदियों के किनारे जा कर बसे, मानचित्र 3 देख कर बताओ।

इन नदियों के किनारे पहले से कई छोटी

बस्तियां थीं। इन बस्तियों में रहने वाले लोग खेती-बाड़ी करते थे। इन्हीं लोगों के बीच सरस्वती नदी के किनारे से आए लोग बसते गए।

समय गुज़रता गया। आर्यों के जन और दूसरे खेती करने वालों के बीच मेल-जोल, लेन-देन बढ़ता गया। वे आपस में घुल मिल गए।

पशुपालन की तुलना में खेती का महत्व बढ़ा

हम जानते हैं कि पहले पशुपालक आर्य सिर्फ जौ नाम का अनाज उगाते थे। पर, गंगा-यमुना नदियों के किनारे वे गेंहू, धान, दाल और तिलहन भी उगाने लगे। उनका जीवन अब खेती के सहारे चलने लगा। वे पशु अब भी पालते थे पर पहले से कम। पहले पूरा जीवन पशुओं के सहारे चलता था। पर अब उनके लिए खेती प्रमुख हो गई।

ऐसी दो-तीन बातें सोचो जो खेती अपनाने के बाद आर्यों के जीवन में बदलीं होंगी?

इस समय संस्कृत भाषा में तीन और वेद रचे गए। इनके नाम थे - **यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद** इन वेदों में यज्ञों, मंत्रों आदि की बातों के साथ खेती की बातें भी पढ़ने को मिल जाती हैं। कहीं ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि अच्छी वर्षा हो और अच्छी धूप खिले ताकि फसल अच्छी हो। कहीं तरह-तरह की फसलों का नाम आता है, जैसे धान, गेहूं, तिल, दालें। इन्हीं बातों से पता चलता है कि आर्यों के लिए खेती महत्वपूर्ण हो गई थी।

सरस्वती नदी के किनारे से लोग क्यों जाने लगे थे?

गंगा-यमुना नदियों के किनारे पहले से रहने वाले लोग क्या करते थे?

गंगा-यमुना के मैदान में रहते हुए आर्यों के जीवन में क्या बदलाव आए?

इस समय कौन से वेद रचे गए?

जनपद बने

उस समय गंगा-यमुना नदियों के मैदान में बहुत से जन खेती करने लगे थे। आमतौर पर एक जन के लोग एक साथ आ कर बसते थे। एक इलाके में एक जन के परिवार खेती करने लगते और वहीं गांव बसाकर रहने लगते। इस तरह एक इलाका एक जन का **जनपद** कहलाने लगता था। जनपद का मतलब था जन के बसने का इलाका।

जनपद के गांवों में रहने वाले आर्य लोगों और दूसरे लोगों ने एक दूसरे की भाषा भी सीखी और एक दूसरे के देवी-देवताओं को भी मानना शुरू किया।

कई बार जनपदों के बीच युद्ध छिड़ जाया करते थे। पहले की तरह ही जन के लोग राजन्यों और राजा के **नेतृत्व** में लड़ने जाते थे।

एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की ज़मीन पर खेती करने की कोशिश करते और वहां अपना गांव बसाना चाहते। इस कारण युद्ध हो जाता।

कई बार एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की फसल ही लूट कर ले जाते और युद्ध छिड़ जाता।
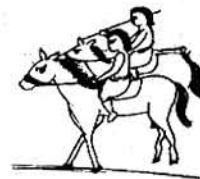
पशुपालन के दिनों में भी क्या इन्हीं कारणों से लड़ाई हुआ करती थी? क्या तुम्हें कोई फर्क नज़र आता है?

नक्शे में उस समय के प्रमुख जनों के जनपद दिखाए गये हैं। नक्शा देख कर खाली स्थान भरो-

यमुना नदी के दोनों तरफ .... जनपद बसा था।

पांचाल जनपद .... नदी के दोनों तरफ बसा था।

सूरसेन जनपद की पश्चिम दिशा में .... जनपद था। सब से उत्तर में .... जनपद था।

इन जनपदों के बारे में एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ में पढ़ा जा सकता है। वह कौन सा ग्रंथ है, पता करो।

कहानी - जनपद का जीवन

जनपद में आम लोग, राजा-राजन्य और ब्राह्मणों का जीवन कैसे बदल रहा था - यह जानने के लिए एक कहानी पढ़ो।

कल्पना करो कि हम कुरु जनपद के एक गांव में पहुंचे।

गृहपति और राजन्य

गंगा नदी के किनारे बसे एक गांव में खेती करने वालों के बीस घर थे। खेती करने वालों को वे लोग **गृहपति**कहते थे। इन लोगों ने कई वर्षों पहले यहां ज़मीन तोड़ कर खेती शुरू की थी।

इन बीस घरों में से एक घर सुमंत गृहपति का था। सुमंत इस गांव का मुखिया था। उसके भी अपने खेत थे जहां उसके परिवार के लोग काम करते थे।

एक दिन सुमंत के घर चार मेहमान आये। ये लोग कुरु जनपद के राजा के रिश्तेदार यानी राजन्य थे। राजा हस्तिनापुर में रहता था। उसने एक ख़ास काम से राजन्यों को गांव-गांव भेजा था।

सुमंत के घर में राजन्यों का स्वागत हुआ। उन्हें आदर से खिलाया-पिलाया गया।

कुछ महीने पहले भी राजन्य गांव आये थे। तब वे राजा के लिए बलि मांगने आये थे। पिछली बार जब राजन्य बलि मांगने आये थे तो गांव के गृहपतियों ने मना कर दिया था। सुमंत सोचने लगा कि अब इस बार ये राजन्य क्यों आये हैं?

पशुपालक आर्यों के समय में जन के लोग अपनी खुशी से राजा को भेंट या बलि दिया करते थे। मगर अब यह बात बदलने लगी थी। छोटे जनपदों में राजा और राजन्य खेती करने वालों से समय-समय पर बलि मांगने लगे थे।

एक राजन्य ने सुमंत से कहा, "शाम को सब गृहपतियों की सभा बुलाइए। हमें राजा का एक **संदेश** आप सब को देना है।"

गृहपति सुमंत ने राजन्यों का स्वागत किया
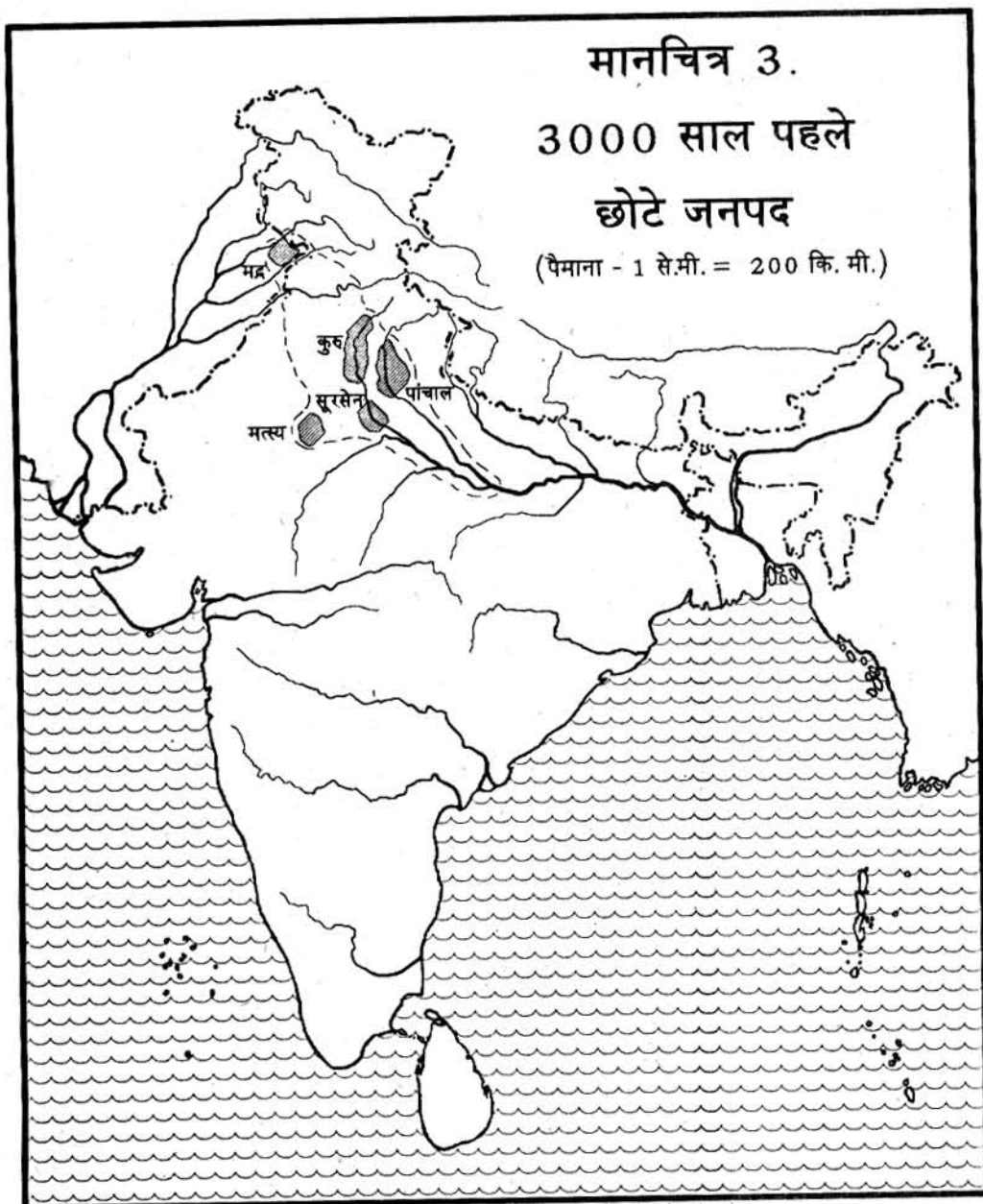
Based upon Survey of India outline map prrinted in 1987
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	⁀⁀⁀
आर्यों के बसने का इलाका	◌
जनपदों का इलाका	●
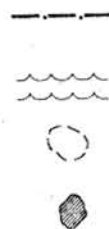
राजसूय यज्ञ का न्यौता और बलि की मांग

शाम को सभा शुरू हुई जिसमें गांव के सारे गृहपति आये। एक राजन्य बोला, "हे कुरू जन के गृहपतियों! हम आप लोगों को निमंत्रण देने आये हैं। अगली पूर्णमासी को अपने नए राजा हस्तिनापुर में **राजसूय यज्ञ** करेंगे। उसमें आप सब आयें। राजसूय यज्ञ बहुत बड़ा यज्ञ है। इसे करने से देवता बहुत खुश होंगे और राजा को बहुत **शक्तिशाली** बनाएंगे। राजा का बहुत नाम होगा।"

सुमंत ने कहा, "राजसूय यज्ञ में तो बहुत धन खर्च होगा! सैकड़ों गायें बलि में चढ़ाई जायेंगी! ब्राह्मण इतना बड़ा यज्ञ करवाएंगे इसलिए उन्हें **दक्षिणा** में हज़ारों गायें, घोड़े और बहुत सा सोना देना पड़ेगा। यज्ञ में जन के सब लोग आएंगे, तो इतने सारे लोगों की रसोई करनी होगी। इस सब के लिए क्या हमारे राजा के पास **साधन** हैं?"

राजन्य बोला, "राजा और राजन्यों को साधन कहां से मिलता है? आप खेती करने वाले गृहपति जो हमें देते हैं, वही हमारा साधन है। आप लोग बलि में जो धन देते हैं उसी से यह खर्च होगा।"

एक गृहपति बोला, "तो आप राजसूय यज्ञ के लिए हमसे बलि (भेंट) मांगने आये हैं।"

राजन्य, "हां, हम चाहते हैं कि इस गांव से सौ गायें, पचास बोरे धान और पचास बोरे दाल बलि में दी जाये।"

सब गृहपति एक आवाज़ में बोले, "नहीं हम इतनी अधिक बलि नहीं दे सकते हैं। दो माह पहले ही तो मत्स्य जनपद के लोग हमारी फसल और गायें लूटकर ले गये थे। पर आप लोग हमारी रक्षा करने नहीं आए। अब हमारे पास बलि देने के लिए कुछ नहीं बचा है।"

राजन्य कहते रहे कि गृहपतियों को बलि में कुछ तो देना ही पड़ेगा। तब तय हुआ कि उस गांव के लोग 50 गायें, 30 बोरे धान और 20 बोरे दाल देंगे।

राजन्यों को किसने गांव भेजा था और क्यों?

राजसूय यज्ञ के लिए क्या-क्या चाहिए था?

गृहपतियों ने राजसूय यज्ञ में क्या सामान देने की बात मानी?

राजा ने जितना सामान मांगा था, उतना गृहपतियों ने क्यों नहीं दिया?

याद करके बताओ पशुपालक आर्यों के दिनों में बलि कब और कैसे दी जाती थी?

जोड़ी बनाओ –

राजसूय, गृहपति, जन, राजन्य, जनपद, बलि, कुरु-

- *जिसके परिवार में खेती होती हो*
- *एक वंश के लोगों का कबीला*
- *जन का नाम*
- *एक वंश के लोग जिस इलाके में बसे थे*
- *लोगों द्वारा राजा को दी गई भेंट*
- *राजा के रिश्तेदार*
- *एक बड़े यज्ञ का नाम*

गृहपतियों के नौकर-चाकर

राजन्यों के जाने के कुछ दिनों बाद राजसूय यज्ञ में जाने की तैयारियां शुरू हुईं। गृहपतियों के नौकर-नौकरानियों ने अनाज-दाल साफ करके बोरियों में बांध कर रखा। नौकरों ने गायों को नहला कर उनके सींगों को रंगों से सजाया। ये नौकर-नौकरानी कुरु जन के लोग नहीं थे। वे आसपास के जंगलों में रहने वाले लोग थे जो जंगलों में भोजन की कमी के कारण इन गांवों में आ कर रहने लगे थे। इन लोगों को गृहपतियों ने अपने घर के काम करने के लिए रखा था।
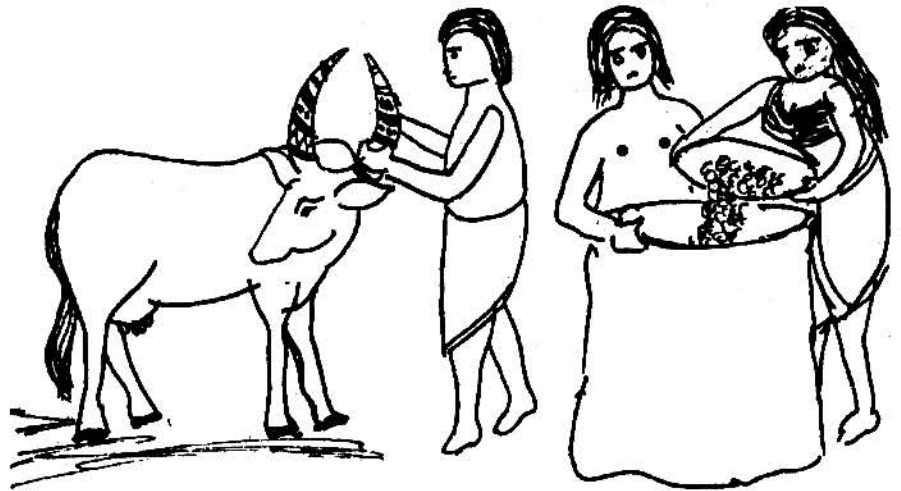
सुमन्त के घर नेल्ली और शंभू काम करते थे। राजसूय यज्ञ में जाने के कुछ दिन पहले ही सुमन्त ने नेल्ली और शंभू को गायों के साथ हस्तिनापुर भेज दिया। उनकी बेटी रंगी भी अपने मां-बाप के साथ चल दी। उसे बहुत खुशी थी कि वह हस्तिनापुर जाएगी, राजसूय यज्ञ देखेगी और खूब पकवान खाएगी।

सही विकल्प चुनकर भरो :-

(1) गृहपतियों के नौकर उनके जन के लोग — ________ (होते थे/नहीं होते थे।)

(2) नौकर गृहपतियों के .... में काम करते थे। (घर/खेत)

राजा, बलि और यज्ञ

जैसा कि हमें दिख रहा है जनपद के लोगों से राजा व राजन्य पहले से ज़्यादा बलि लेने लगे थे और वह भी मांग कर लेने लगे थे। वे पहले से ज़्यादा बड़े यज्ञ भी करने लगे थे। आखिर ऐसा क्यों होने लगा था?

उन दिनों राजा और राजन्यों को अपनी शक्ति बढ़ाने के मौके दिखने लगे थे। बलि में मिला अनाज इकट्ठा करके वे और अधिक धनवान बन सकते थे। ज़्यादा से ज़्यादा घोड़े, हथियार, जेवर आदि **प्राप्त** कर सकते थे। शान और ठाठ-बाठ से रह सकते थे। कई नौकरों और दास-दासियों को अपनी सेवा के लिए रख सकते थे।

अपना बड़प्पन दिखाने के लिए ही राजा बड़े-बड़े यज्ञ करवाना चाहते थे।

राजा की चिंता

ऐसा ही यज्ञ कुरू जनपद का राजा कर रहा था। हस्तिनापुर में त्यौहार का सा माहौल था।

सब यज्ञ की तैयारी में लगे थे। फिर भी राजा को चिन्ता थी। वह अपने **पुरोहित** को अपनी परेशानियां बता रहा था। पुरोहित वह ब्राह्मण था जो राजा के लिए राजसूय यज्ञ करवा रहा था।

राजा ने पुरोहित से कहा, "पुरोहित जी, गृहपति ठीक से बलि नहीं देते। वे मेरे आदेश नहीं मानते। मैं जितनी बलि मांगता हूं उतनी न देकर वे अपनी **सुविधानुसार** देते हैं। मुझे बलि में जो मिलता है उसमें से राजन्यों को भी बांटना होता है। अगर राजन्यों को बलि का हिस्सा देकर खुश नहीं रखूं तो वे मुझे हटाकर किसी और को राजा बना देंगे। इस तरह मैं एक शक्तिशाली राजा कैसे बन पाऊंगा?"

तुमने ऊपर देखा था कि कैसे राजा के मांगने पर भी गृहपति बलि देने में आनाकानी कर रहे थे। उन दिनों राजा के आदेशों को लोग आसानी से नहीं मानते थे। लोगों को मनाना पड़ता था और इसीलिए राजा को अपनी शक्ति जताने की ज़रूरत महसूस होती थी।

राजा को जवाब देते हुए पुरोहित बोला, "राजन, इस राजसूय यज्ञ से हम पुरोहित तुम्हें अपार शक्ति दिलवायेंगे। इस यज्ञ से देवता खुश होंगे और वे तुम्हारी मदद करेंगे। तब कोई भी तुम्हारी **आज्ञा** को नहीं टाल सकेगा।"

वाक्य पूरे करो –

राजा राजसूय यज्ञ करवा रहा था क्योंकि ______________________।

पशुपालक आर्यों के दिनों में ______________ ______________ के लिए यज्ञ किया जाता था।

राजसूय यज्ञ

पशुपालक आर्यों के समय युद्ध में जन की जीत के लिए और जन की भलाई के लिए छोटे-छोटे यज्ञ किए जाते थे। मगर छोटे जनपदों में राजा बहुत बड़े और खर्चीले यज्ञ करने लगे थे। वे चाहते थे कि इन यज्ञों से राजा और राजन्यों को शक्ति मिले।

कुरु जनपद का राजसूय यज्ञ लगातार पांच महीने चला। अग्नि में हज़ारों गायों व बकरियों का चढ़ावा दिया गया। अनगिनत बोरे अनाज, घी, और सोना-चांदी भी यज्ञ में डाले गये। राजा का बहुत नाम हुआ।

यज्ञ के **समापन** पर कुरु जनपद के सभी गांवों से गृहपति और राजन्य आए थे। राजन्य राजा के पास बैठे और सुमंत जैसे गृहपतियों को यज्ञ मण्डप से थोड़ा हटाकर बिठाया गया। मगर रंगी की इच्छा पूरी न हो सकी। उसे व अन्य नौकर-चाकरों को शहर के बाहर रहना पड़ा। मण्डप के पास भी वे नहीं आ सकते थे।

'बलि क्यों दें?'

यज्ञ समाप्त होने पर राजा को बलि देने का समय आया। गृहपतियों ने अपनी गायें और अनाज व दाल के बोरे राजा के सामने पेश किए।

बलि में मिली चीज़ों को देख कर राजा खुश हुआ। बलि में जो चीजें मिल रही थीं उन्हें राजा ब्राह्मणों और राजन्यों में बांटता गया। सैकड़ों गायें, सोना, अनाज, दास, दासियां, ब्राह्मणों को दक्षिणा में दी गयीं।

पर, राजा के ध्यान में आया कि पांच गांव के गृहपति बलि नहीं लाए हैं। जब राजा ने कारण पूछा तो वे बोले, "राजन, कुछ दिन पहले दूसरे जनपद के लोगों ने हमारे गांवों पर हमला किया और फसल व जानवर लूट के ले गए। हम सब गांव वालों ने उनसे लड़ाई की पर हार गए। आप या राजन्यों में से कोई हमारी मदद के लिए नहीं आया। हम आपको बलि में क्या दें? और क्यों दें?"

वर्ण और उनके कर्त्तव्य

लोगों का जवाब सुन कर राजा को बहुत गुस्सा आया। गुस्से में राजा कुछ करने ही वाला था कि पुरोहित ने उसे रोक कर कहा, "राजन, सभी को अपना **कर्त्तव्य निभाना**चाहिये। राजा और राजन्य समाज के एक **विशेष** हिस्से हैं। ये **'क्षत्रिय वर्ण'**के हैं। इनका काम है राज करना और शत्रुओं से लोगों की रक्षा करना।"
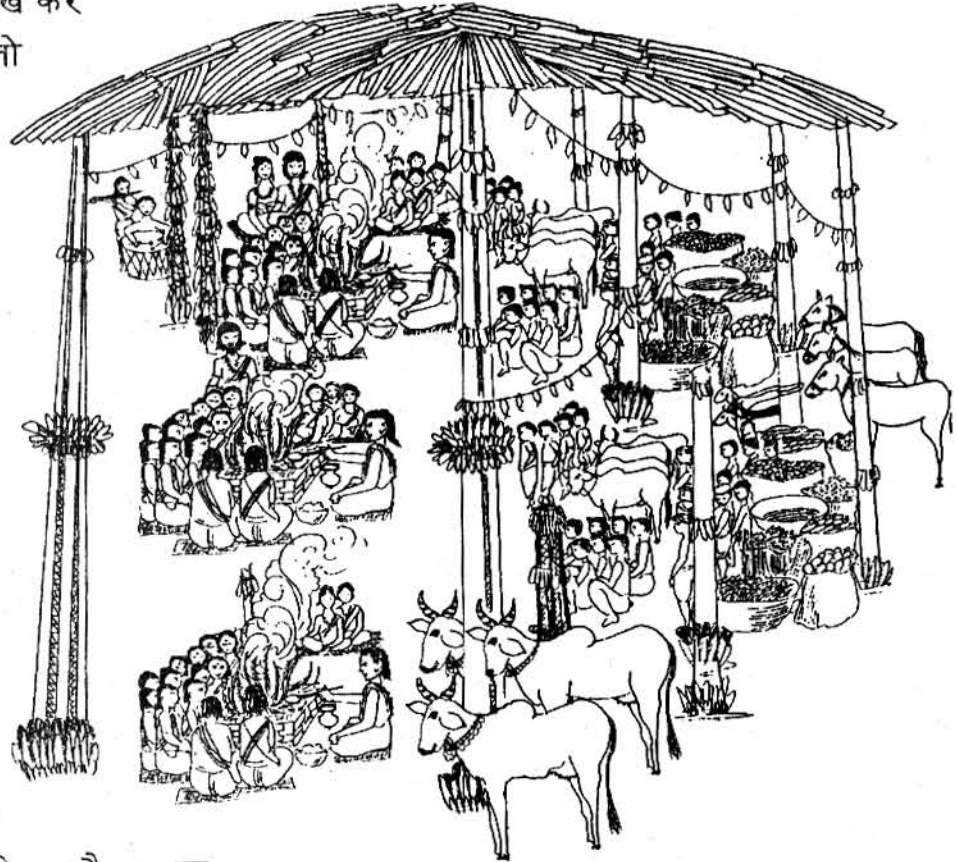
फिर पुरोहित गृहपतियों की तरफ देख कर बोला, "मगर राजा और राजन्यों को बलि देना आप खेती करने वालों का कर्त्तव्य है। खेती करने वाले **'वैश्य वर्ण'**के हैं। समाज के इस हिस्से के लोगों को अनाज उगाना चाहिये और अपनी उपज का कुछ भाग राजन्यों को बलि में और ब्राह्मणों को दक्षिणा में देना चाहिये। जिन पांच गांवों के गृहपतियों ने बलि नहीं दी है, उन्होंने ग़लत किया है।"

जिन गांवों के लोगों ने बलि नहीं दी थी, वे कहने लग, "जब हमारे पास देने को कुछ नहीं है, फिर भी हमसे कह रहे हैं कि बलि देना हमारा

धर्म है। ऐसा तो पहले नहीं होता था। हम इस जनपद में नहीं रहना चाहते। हम कहीं और जा के खेती कर लेंगें।" ऐसा कहते हुए वे सभा से चले गए। कुछ लोगों ने उन्हें मनाने की कोशिश की पर वे नहीं माने।

उन लोगों के चले जाने से सभा के लोग परेशान हो गए और हल्ला होने लगा। सब बात कर रहे थे कि क्या राजा का बलि मांगना ठीक था? क्या गृहपतियों का बलि देने से मना करना ठीक था?

1. राजसूय यज्ञ में ऐसी क्या बातें थीं जिनके कारण वह तुम्हें बहुत बड़ा यज्ञ लगा?

2. क्या तुम यज्ञ के चित्र में ब्राह्मणों, राजन्यों और गृहपतियों को पहचान पा रहे हो? इसमें नौकर-चाकर क्यों नहीं दिख रहे हैं?

3. पांच गांव के गृहपतियों ने बलि क्यों नहीं दी- जो सही विकल्प हैं उन पर सही का निशान लगाओ।

क. उनके पास देने के लिए कुछ नहीं था। ख. उन्होंने पहले ही बलि दे दी थी। ग. वे राजा और राजन्यों से नाराज़ थे। घ. उनके खेतों में फसल नहीं हुई थी।

4. रिक्त स्थान भरो -

पुरोहित ने कहा कि ______________ का काम रक्षा करना है और ______________ का काम ______________ को बलि देना है।

(क्षत्रिय/वैश्य/ब्राह्मण)

5. पांच गांव के गृहपतियों ने अंत में क्या किया?

वर्ण व्यवस्था और ऊंच नीच का भेदभाव

छोटे जनपदों के समय ब्राह्मण यह कहने लगे थे कि बड़े-बड़े यज्ञ करने से ही राजा को शक्ति मिलती है और खेतों में अनाज उगता है। यज्ञ केवल ब्राह्मण करवा सकते थे। इसलिए समाज में ब्राह्मण बहुत महत्वपूर्ण होने लगे थे।

अब ब्राह्मण लोगों को यह भी बताने लगे कि समाज में कौन ऊंचा है, कौन नीचा है, और हरेक के क्या-क्या काम हैं।

ब्राह्मण यह कहने लगे कि समाज में चार **वर्ण** के लोग हैं - **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य** और **शूद्र**।

चार वर्णों में सबसे ऊंचे और श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। इनका काम यज्ञ करना और करवाना है, ताकि देवता खुश रहें।

ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों(यानी राजा और राजन्य)का दर्ज़ा था। इनका क्या काम था तुमने ऊपर पढ़ा।

क्षत्रियों के बाद वैश्यों का दर्ज़ा था। ये लोग थे खेती करने वाले गृहपति। इनका भी काम तुम पढ़ चुके हो। ब्राह्मण और क्षत्रिय अपने आपको वैश्यों से ऊंचा मानते थे। इसलिए वे वैश्यों से बराबरी से नहीं मिलते थे। उन्हें यज्ञों में भी अलग रखा जाने लगा था ।

इन सबके बाद **शूद्रों** का दर्ज़ा था। इस वर्ण के लोग थे नेल्ली और शंभू जैसे नौकर-चाकर। इन्हें सबसे नीचे वर्ण का माना गया। इनका काम था दूसरों की सेवा करना। इन्हें यज्ञ में भाग लेने नहीं देते थे और न ही वे खुद की खेती बाड़ी कर सकते थे।

चार वर्णों की **व्यवस्था** उन दिनों बनाई गई पर इसका असर बहुत समय तक रहा। चार वर्णों के बीच ऊंच-नीच की भावना आज तक समाज में है।

पाठ के इस अंश में किन बातों का वर्णन है — क. युद्ध कैसे हो? ख. यज्ञ कैसे हो? ग. लोगों के काम क्या हों? घ. लोगों का एक-दूसरे से रिश्ता क्या हो? च. राजा क्या चाहता था ?

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां दो श्लोक दिये गये हैं। तुम यह पहचानो कि इनमें से कौन सा श्लोक पशुपालक आर्यों के समय का है और कौन सा छोटे जनपदों का समय का। साथ में कारण भी लिखना -

   क) हे इन्द्र हमे अपार धन दौलत दो।
   सैकड़ों गायें और घोड़े देकर,
   हमारी यह कामना पूरी करो।

   ख) दाल, तिल, गेहूं,
   धान और फल,
   सब कुछ यज्ञों से
   होते हैं उत्पन्न।

2. इस पाठ के कितने हिस्से हैं? उनके उपशीर्षक क्या हैं?
3. क) राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी पाठ के किस-किस हिस्से में मिलेगी?
   ख) राजसूय यज्ञ क्यों किया जाता था, कैसे किया जाता था और राजा इसके लिए धन कैसे जुटाता था- 6-7 वाक्यों में लिखो।
4. सही विकल्प चुनो-
   राजा गृहपतियों से बलि लेने के लिए - क) उन्हें आदेश देता था। ख) गृहपतियों को मनाने के लिए राजन्यों को भेजता था। ग) वह गृहपतियों के घर से अनाज ज़बरदस्ती ले आता था।
5. यहां दिए लोगों के बारे में 4-5 वाक्य लिखो और समझाओ कि वे क्या काम करते थे और उनकी क्या इच्छाएं व परेशानियां रही होंगी।
   क) राजा ख) राजन्य ग) गृहपति घ) ब्राह्मण च) नौकर-चाकर, दास-दासी।
6. क) चार वर्णों के नियम क्या थे?
   ख) राजा व ब्राह्मण लोगों पर नए नियम कैसे लागू कर रहे थे ? जो-जो विकल्प सही लगें उन पर सही का निशान लगाओ —
   दंड दे रहे थे/लोगों को समझा रहे थे/कह रहे थे कि नियम का पालन करना ही धर्म है।
6. क) छोटे जनपद जिस इलाके में बने थे, वो आज भारत के किन राज्यों में आता है – क. महाराष्ट्र ख.पंजाब ग. बंगाल घ. उत्तर-प्रदेश च. राजस्थान छ. मध्य-प्रदेश ।

ख. मानचित्र 2 और के मानचित्र 3 की तुलना करो और बताओ कि क्या सही है-

- दोनों मानचित्र भारत के बारे में हैं।
- दोनों मानचित्र एक ही समय के बारे में हैं।
- दोनों मानचित्रों में बताई गई बातों में कोई फ़र्क नहीं है।

8. पशुपालक आर्यों और छोटे जनपदों के समय में क्या अंतर आये? तालिका में लिखो।

	पशुपालक आर्यों का समय	छोटे जनपदों का समय
अ) लोगों का मुख्य काम क्या था-		
ब) बलि कौन देता था -		
स) बलि में क्या देते थे-		
द) बलि कब देते थे-		
य) बलि का क्या उपयोग होता था-		
र) युद्ध क्यों होता था -		
ल) यज्ञ क्यों किया जाता था -		

9. एक मज़ेदार तुलना

तुमने अलग-अलग लोगों के बारे में पढ़ा। उनके भोजन के बारे में जाना। भोजन मनुष्य के लिए बहुत ज़रूरी चीज़ है। हमारे भोजन में कई ऐसी चीज़ें होती हैं जो जल्दी सड़ जाती हैं। और कई चीज़ें काफी दिनों तक बची रहती हैं। जोड़-जोड़ कर उनका भंडार बनाया जा सकता है। ऐसी चीज़ों को काफी मात्रा में इकट्ठा किया जा सकता है।

इस दृष्टि से तुम शिकारी मानव, पशुपालक आर्य और छोटे जनपद के लोगों को देखो तो किसके भोजन में जोड़ कर रखने लायक चीज़ें ज़्यादा थीं? हरेक के भोजन की सूची बनाकर तुलना करो।
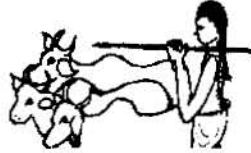
इतिहास के पाठों में जो चित्र बने हैं वे हमने बनाए हैं। जितने पुराने समय की हम बात कर रहे हैं तब के लोग अपने कोई चित्र छोड़ कर नहीं गए। उन्होंने चित्र छोड़े भी हों तो वे हमें नहीं मिलते।

उन लोगों के बारे में जो भी बातें हम पता कर सके उन पर सोच कर और कुछ कल्पना करके ये चित्र तुम्हारे लिए बनाए हैं। जैसे हमें यह पता है कि वे रथ की सवारी करते थे। पर क्या उनके रथ वैसे दिखते थे जैसा हमने चित्र में दिखाया है? ये हम नहीं कह सकते। इन चित्रों को तुम सचमुच के मत समझना।

7. महाजनपद के राजा

तुम राजा के बारे में कुछ बताओ - राजा कौन होता है, कैसा होता है? वह लोगों के लिए क्या करता है और लोग उसके लिए क्या करते हैं? वह लोगों को क्या देता है और लोग उसे क्या देते हैं? इस पाठ के चित्रों में राजा और लोगों के बारे में क्या-क्या दिख रहा है? क्या तुमने जो बातें बताई वे चित्रों में दिख रही हैं?

तुम ने पिछले पाठ में देखा कि कई छोटे-छोटे जनपद बन चुके थे। तब से तीन-चार सौ साल बीत गए। उसके बाद का समय कैसा था – यह हम इस पाठ में देखेंगे। यह **महाजनपदों**का समय कहा जाता है।

जनपद का मतलब तुम जानते ही हो - सही मतलब को चुनो - 1. जन की गाएं जहां चरतीं हैं 2. जन के लोग जिस गांव में रहते हैं 3. जन के लोग जिस इलाके में खेती करते हैं और बस गए हैं

महाजनपद का क्या मतलब हो सकता है?

उस समय सोलह बड़े जनपद यानी महाजनपद थे। ये मानचित्र में दिखाए गए हैं। इन जनपदों में कौन से नए जनपद हैं? और कौन से जनपद पुराने हैं? तालिका में लिखो-

पुराने जनपद	***नए जनपद***

पुराने जनपदों की संख्या ज़्यादा है या नए जनपदों की ?

नए जनपद पुराने जनपदों की किस दिशा में बने थे?

मानचित्र में उस समय के 16 बड़े जनपद ही दिखाए हैं। इनके अलावा कई छोटे-छोटे जनपद भी थे। महाजनपदों में बहुत सी नई-नई बातें हो रहीं थीं। उस समय की कई कहानियों और किताबों से उन बातों के बारे में पता चलता है। इनकी मदद से हम कल्पना भी कर सकते हैं कि महाजनपद के राजा कैसे थे।

कहानी - महाजनपद का एक राजा

कल्पना करो कि एक महाजनपद का पुरुजित नाम का राजा था। उसने कई जनपदों को युद्ध में हराया था और उनका बहुत सा धन जीत लिया था। उसने अपने जनपद के लोगों से भी बलि ले-ले कर धन जमा कर लिया था। इस तरह उसके पास बहुत धन इकट्ठा होने लगा था।

राजा पुरुजित ने अपने पास जमा धन से बहुत से हथियार और घोड़े जमा किए। अब वह एक बड़ा सुन्दर महल बनवाना चाहता था।

राजा पुरुजित के मन में धन का लालच बढ़ता जा रहा था। वह बार-बार आस-पास के जनपदों पर हमला करके उनको अपने अधिकार में करने की कोशिश करता था।

सेना बनाने की योजना

जैसा कि रिवाज़ था राजा पुरुजित को अपने पास इकट्ठे हो रहे धन में से राजन्यों को भी बांटना पड़ता था। उसे बड़े-बड़े यज्ञ करने पड़ते थे। यज्ञ करके जनपद के लोगों को भोजन कराना पड़ता था। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देनी पड़ती थी। जो राजा यज्ञों में जितना ज़्यादा धन खर्च करे उसका उतना ज़्यादा मान होता था।

पर राजा पुरुजित को इस तरह अपना धन बांटना अखरने लगा। वह बहुत सारे जनपदों से युद्ध करना चाहता था। जब वह किसी जनपद पर हमला करता तो कभी उस पर भी दूसरे जनपद का राजा हमला करता था। इसलिए राजा पुरुजित युद्ध की अच्छी तैयारी करना चाहता था। वो सोचा करता - 'अगर राज्य का धन मेरे पास ही जमा होता रहे तो मैं अच्छे से अच्छे हथियार और घोड़े व हाथी रखूंगा।'

इसके अलावा राजा पुरुजित को एक सेना बनाने की ज़रूरत भी महसूस होने लगी थी। हम जानते हैं कि उस समय तक जनपदों में सेना नहीं होती थी। जनपद के लोग अपने राजा व राजन्यों के साथ लड़ाई पर जाते थे। पर जनपद के लोगों को खेती, कारीगरी के कई काम रहते थे। जब कभी राजा चाहे तब सारे काम छोड़ कर लोग लड़ने नहीं जा सकते थे। पुरुजित इस बात से परेशान रहने लगा।

वह सोचने लगा - 'अगर मेरे पास हज़ारों ऐसे लोग हों जो बस मेरे लिए लड़ने का काम करें, और कुछ न करें - तभी काम चलेगा। मेरे पास धन जमा हो जाए तो मैं कुछ लोगों को रख लूं। मैं उनकी ज़रूरत के हिसाब से उन्हें धन दूं। वे खेती या और कोई काम-धंधा न करें। हमेशा मेरी सेवा में रहें। मैं उन्हें हथियार चलाना और युद्ध करना सिखवाऊं। फिर मैं जब कहूं, जहां कहूं - वे मेरे लिए युद्ध करने चल दें।'
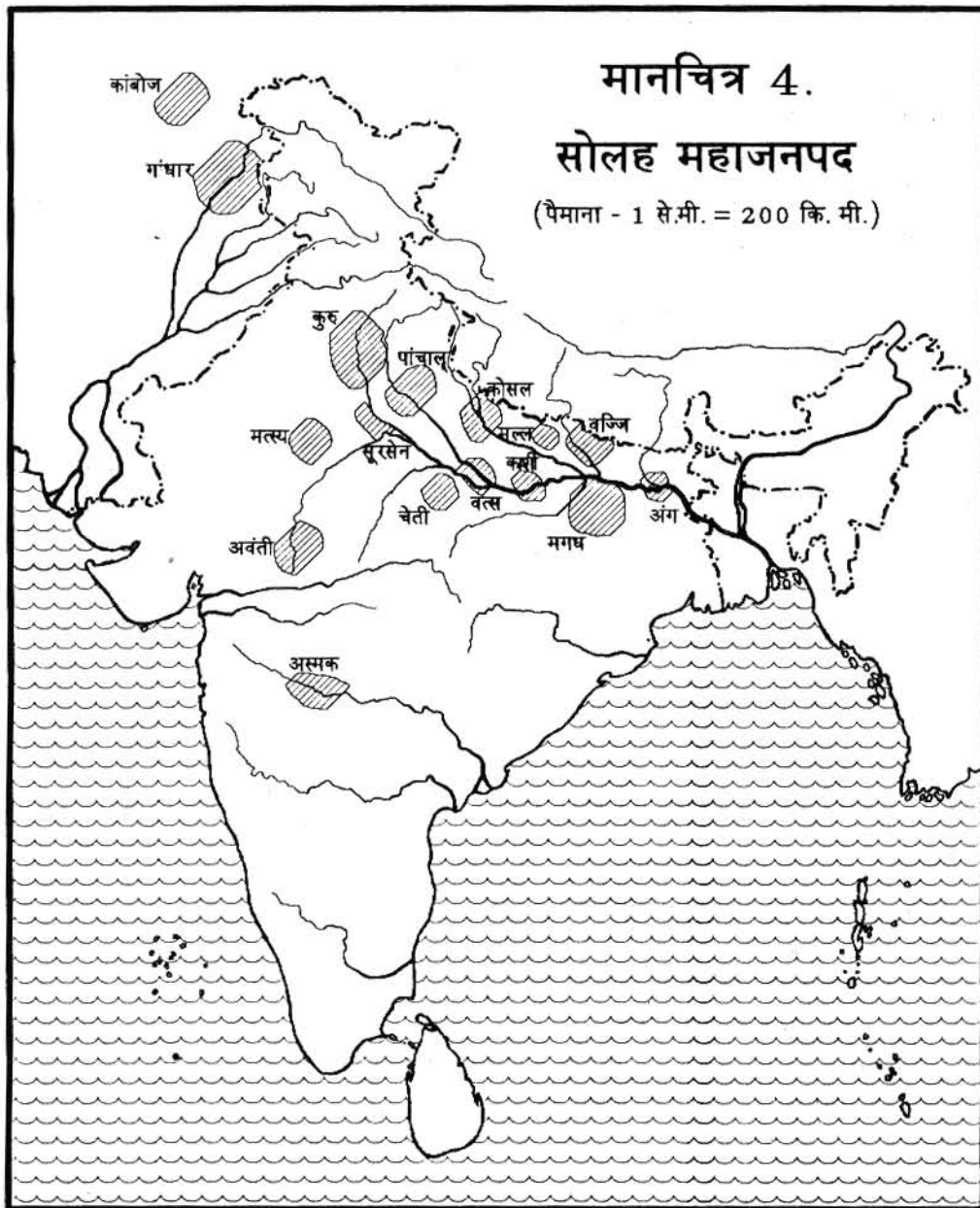
Based upon Survey of India map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical milesmeasured from the appropriate base line.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	
महाजनपद	

इस तरह पुरुजित एक सेना बनाने का विचार करने लगा।

राजा ने सेना बनाने के काम में देरी नहीं की। कुछ सालों में उसने हज़ारों लोगों को अपनी सेवा में भर्ती कर लिया। अपनी सेना के बल पर पुरुजित ने आसपास के कई जनपदों को युद्ध में हराया और उनको अपने जनपद में मिला लिया। उन जनपदों के लोगों से भी वह बलि लेने लगा। उसका जनपद महाजनपद बन गया।

आसपास के क्या, दूर-दूर के राजा भी पुरुजित की सेना से डरने लगे, क्योंकि अब वह कभी भी उन पर हमला कर सकता था। पुरुजित की देखा-देखी और उसके डर से दूसरे राजाओं ने भी अपनी-अपनी सेनाएं बनाने की कोशिश शुरू कर दी।

राजा पुरुजित को धन इकट्ठा करने की चिन्ता क्यों लगी रहती थी?

छोटे जनपद सेना के बिना युद्ध कैसे करते थे?

महाजनपद का राजा सेना क्यों बनाना चाहता था? इससे उसे क्या फायदा होता?

बलि का कानून

राजा पुरुजित ताकतवर और प्रसिद्ध हो गया था। पर उसकी चिन्ताओं का अन्त नहीं था। भला अब उसे किस बात की चिन्ता थी?

राजा को अब भी धन की चिन्ता थी। उसे हज़ारों सैनिकों को साल भर का वेतन देना पड़ता था। हथियारों, हाथियों, घोड़ों का इन्तज़ाम भी करना पड़ता था।

फसल का एक हिस्सा राजा की बलि के लिए

राजा सोचा करता, 'जो भी हो, अब मेरे पास जमा धन में कभी कमी नहीं आनी चाहिए। वरना ये हज़ारों सैनिक मेरी सेवा में नहीं रहेंगे। क्या उपाय करूं कि नियम से मेरे पास धन जमा होता रहे?'

इस चिन्ता का उसने क्या हल निकाला होगा?

क्या बार-बार युद्ध करने से धन की समस्या हल हो सकती थी?

राजा ने एक कानून बनाया और जनपद के सब गांवों में लोगों को नगाड़े बजवा कर सुनाया।

"सभी खेती करने वाले ध्यान दें। राजा पुरुजित का आदेश है। हर फसल के बाद उसके छः हिस्सों में से एक हिस्सा राजा के लिए बलि में निकाल दें। जो खेती करने वाले बलि नहीं देंगे, उन्हें राजा कठोर दण्ड देगा।"

इस तरह लोगों से बलि लेने का कानून बना। राजा नियम से हर फसल के बाद लोगों से बलि का अनाज इकट्ठा करवाने लगा।

पाठ का यह अंश किसके बारे में है? — 1. युध्द की ज़रूरत 2. सेना की ज़रूरत 3. सेना के लिए धन जमा करने की ज़रूरत

महाजनपद के राजा ने बलि लेने का क्या नियम बनाया - सही विकल्प चुनो -

लोग अपनी इच्छा से भेंट दें/लोग हर फसल पर एक हिस्सा दें/राजा जब मांगे तब कुछ दें

महाजनपद के दिनों में राजा को हर फसल पर बलि लेने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

राजा के अधिकारी

राजा पुरुजित को कुछ ही सालों में और इन्तज़ाम करने ज़रूरी लगे। किस गांव से कितनी बलि मिली, कितनी नहीं मिली - इसका हिसाब-किताब रखना ज़रूरी लगा। जो किसान बलि न दें, उनकी शिकायत सुनना और उन्हें दंड देना पड़ता था। इन सब कामों के लिए उसे मदद की ज़रूरत थी।

सेना की देख-रेख का काम भी बहुत बढ़ गया था।

पुराने दिनों में जन के प्रमुख लोग यानी राजन्य ही सारे काम काज संभाला करते थे। उन्हें राजा से बलि और जीत में मिले धन का हिस्सा मिलता था।

पर राजा पुरुजित ने सोचा, 'मैं सिर्फ अपने जन के राजन्यों और अपने संबंधियों की मदद से इतने सारे काम नहीं करवा सकता। जिन जनपदों को मैंने जीत लिया है उनमें भी कई वीर, योग्य और वफादार लोग मुझे मिलते हैं। तो क्या हुआ अगर वे मेरे संबंधी नहीं हैं या दूसरे जन के हैं? मुझे तो काम से मतलब है। जो भी ठीक से काम करेगा मैं उसे ठीक से वेतन दूंगा। जो मेरी पसन्द का काम नहीं करेगा उसे सेवा से निकाल दूंगा। इस तरह मैं अपनी इच्छा के अनुसार राज्य का शासन चला सकूंगा।'

यह सोच कर राजा पुरुजित ने अपनी सहायता के लिए कई अधिकारी और कर्मचारी रखे। वे उसके आदेशों के अनुसार काम करने लगे। उसने कुछ योग्य लोगों को अपना मंत्री भी बनाया जो उसे सलाह देते थे और उसकी तरफ से कई कामों की देखरेख करते थे। राजा अपने अधिकारियों, कर्मचारियों और मंत्रियों को **नियमित वेतन** देने लगा।

अब महाजनपदों में राजन्यों का महत्व कम होने लगा और राजा अपने जनपद के कई दूसरे लोगों की मदद से राज्य चलाने लगा।

इस अंश की मुख्य बातें क्या हैं? सिर्फ तीन वाक्यों में बताओ।

राजा के मन का प्रश्न

राज्य के सारे इन्तज़ाम करने में बहुत धन खप रहा था। इस कारण भी पुरुजित दूसरे जनपदों को हरा कर उन्हें अपने राज्य में मिलाने की सोचता रहता था।

कुछ सालों में राजा पुरुजित को एक और बात सूझने लगी। वह ऐसे सब खर्चे कम करना चाहता था जो उसे बहुत ज़रूरी नहीं लगते थे। जैसे पुराने रिवाज़ के अनुसार उसे बड़े-बड़े यज्ञ करने पड़ते थे। अगर वह ऐसे यज्ञ न करे तो उसके संबंधी और ब्राह्मण बुरा मानते थे। राजा के मन में प्रश्न उठता-इतने बड़े यज्ञ करना क्यों ज़रूरी है? इन यज्ञों से क्या मिलता है?

राजा पुरुजित ने बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल निकाला, पर यज्ञ जैसे रीति-रिवाज़ों को बदलने की चिन्ता लिए ही उसका जीवन-काल खत्म हो गया।

बाद में आने वाले समय में रीति रिवाज़ों में भी बदलाव आए, जिनके बारे में हम आगे एक पाठ में पढ़ेंगे।

जो बातें राजा पुरुजित की कहानी से हमने समझीं वे उस समय के बहुत से जनपदों में हुई थीं। उस समय के महाजनपदों के राजाओं ने अपनी सेनाएं बनाईं, अधिकारी व मंत्री रखे और बलि लेने का कानून बनाया।

महाजनपदों के सभी कामों में, सभी बातों में राजा ही शक्तिशाली हो गया। राजन्यों और जन के लोगों का अब पहले जैसा महत्व नहीं रहा। अब पहले जैसी सभाएं होना भी बन्द हो गईं।

गणसंघ

उन दिनों कुछ ऐसे भी जनपद थे जिनमें कोई एक राजा शक्तिशाली नहीं बना। ऐसे जनपदों में एक वंश के सारे पुरुष मिल कर शासन करते थे। वे आपस में सभा करके एक दूसरे से बातचीत करके अपने जनपद का कामकाज चलाते थे। इन जनपदों के सब के सब पुरुष अपने आपको राजा कहते थे। है न मज़े की बात! एक जनपद में सैकड़ों राजा! इस तरह के जनपदों को **गणसंघ** कहा जाता था।

उन दिनों दो बड़े गणसंघ थे - मल्ल और बज्जि। इन्हें नक्शे में पहचानो।
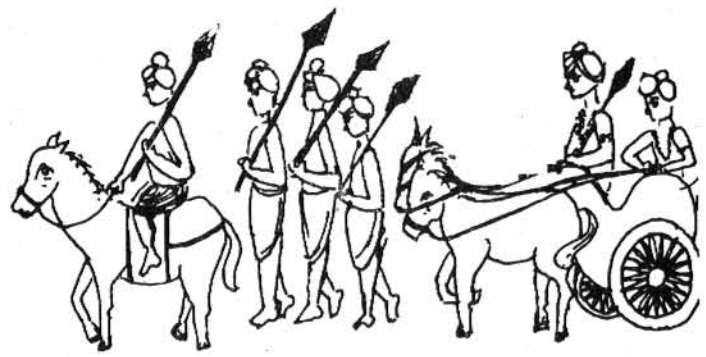
इन दोनों चित्रों में से राजा का कौन सा चित्र है और गणसंघ का कौन सा चित्र है? कारण सहित बताओ।

मगध साम्राज्य

सोलह जनपदों में मगध ज़नपद सबसे ताकतवर निकला। इस जनपद में बिंबिसार नाम के राजा ने एक बड़ी सेना बनाई थी। उसके बेटे अजातशत्रु ने कई जनपदों को हरा कर उन्हें मगध जनपद में मिला लिया था।

मानचित्र 5 देखो। उसमें अजातशत्रु के राज्य की सीमा बताई गई है। मानचित्र 4 से तुलना करो और बताओ कि कौन-कौन से जनपद मगध जनपद में मिला लिए गए थे?

कुछ साल बाद मगध में महापद्मनंद नाम का राजा हुआ। उसने अपने पास इतना सारा धन जमा किया और इतनी बड़ी सेना तैयार की कि वह इन बातों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया।

मानचित्र 5 में महापद्मनंद के राज्य की सीमाएं देखो। देखो कि उसने अजातशत्रु के बाद और कौन-कौन से जनपदों पर अपना अधिकार कर लिया? कौन-कौन से जनपद उसके राज्य के बाहर थे?

महापद्मनंद ने इतने सारे राज्यों को हरा कर, मगध में मिला लिया था कि उसके राज्य को मगध **साम्राज्य** कहा जाता है।

सिकन्दर का हमला

उन दिनों यूरोप महाद्वीप के यूनान देश में मेसिडान नाम का एक राज्य था। वहां का राजा सिकन्दर अपनी बड़ी भारी सेना लेकर दुनिया जीतने के इरादे से चला था। वह बहुत से राजाओं को हराता हुआ सिन्धु नदी के किनारे पहुंचा था। वहां उसने बहुत से छोटे-छोटे राज्यों और गणसंघों को हराया। इनमें से एक का राजा था पुरु - जिसकी कहानी तुमने ज़रूर सुनी होगी। इन राज्यों के लोगों ने सिकंदर का इतना तगड़ा मुकाबला किया कि उसकी सेना थक गई। जब उन्होंने मगध के राजा महापद्मनन्द की **भीमकाय** सेना के बारे में सुना तो उन्होंने आगे जाने और मगध की सेना से लड़ने से इंकार कर दिया और वे मेसिडान लौट गए।

लौटते समय सफर में ही सिकन्दर की मृत्यु हुई। पर उसके कई सेनापति उसके जीते हुए इलाकों पर राज्य करते रहे। इस तरह सिंधु नदी के पश्चिम में सिकंदर के सेनापतियों का राज्य बना। लेकिन इसके पूर्व में मगध का राज्य ही सबसे शक्तिशाली राज्य बना रहा।
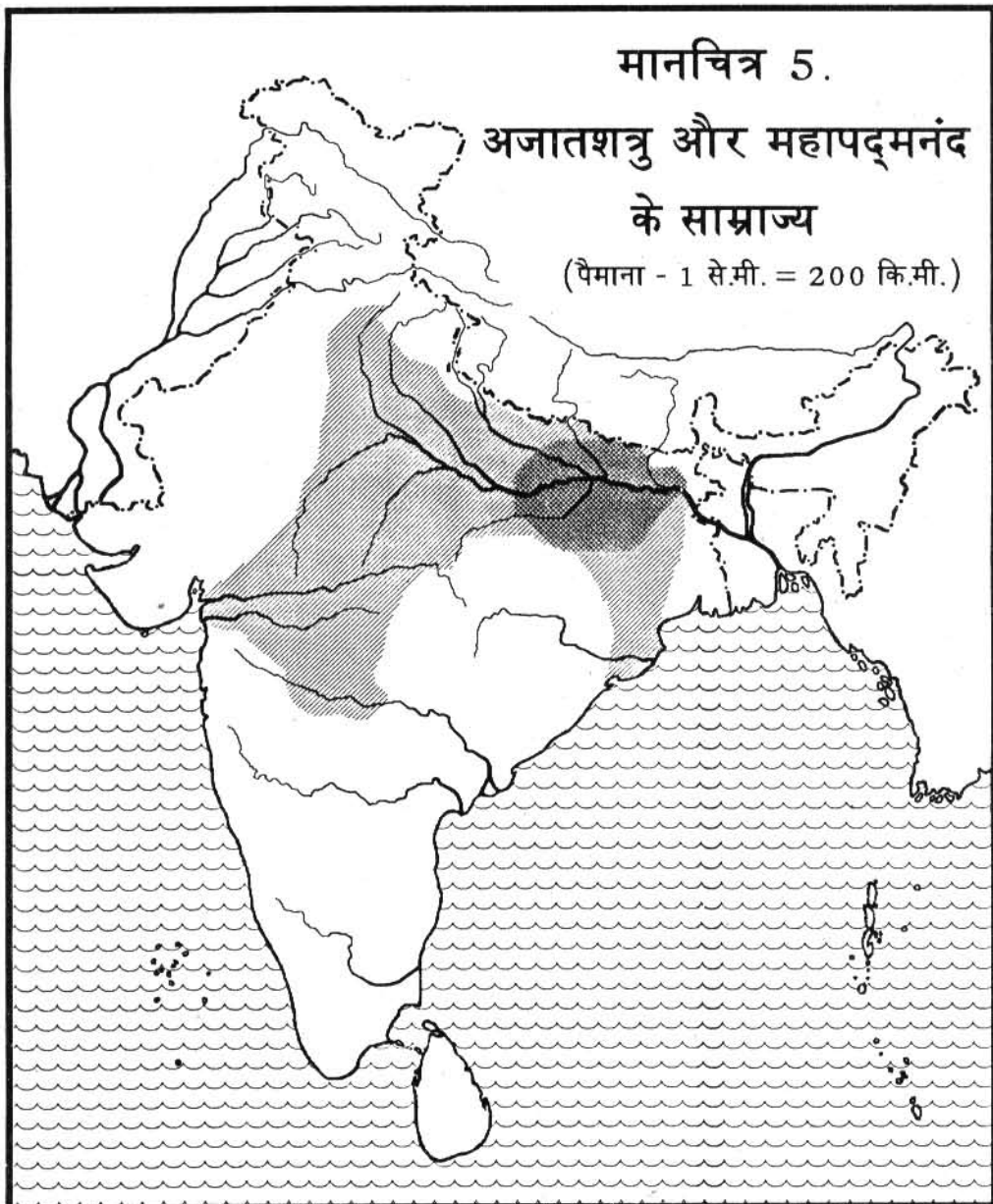
संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	
अजातशत्रु का साम्राज्य	
महापद्मनंद का साम्राज्य	

अभ्यास के प्रश्न

1. महाजनपद के राजाओं के पास क्या-क्या था जो छोटे जनपद के राजाओं के पास नहीं था? कोई भी तीन बातें समझा कर लिखो।
2. क. राजा पुरुजित ने किन-किन लोगों को अपना अधिकारी बनाया -
   सिर्फ अपने जनपद के लोगों को / सिर्फ राजन्यों को / सिर्फ दूसरे जनपद के लोगों को / जो भी योग्य और वफादार हों।
   ख. अपने अधिकारियों को राजा क्या देता था - बलि का हिस्सा / जीत में मिले धन का हिस्सा/ वेतन
3. छोटे जनपद के राजा बड़े-बड़े यज्ञ करना चाहते थे जबकि महाजनपद के कई राजा यज्ञ नहीं करना चाहते थे। इसका क्या कारण था?
4. इनके बारे में दो-दो वाक्य लिखो -
   क. अजातशत्रु
   ख. महापद्मनन्द
   ग. सिकन्दर
   च. गणसंघ
5. तुम्हारे मन में एक राजा के बारे में जो-जो बातें आई थीं वे तुमने पुरुजित में पाईं या नहीं? चर्चा करो।
6. क. तुम जहां रहते हो क्या वहां कोई महाजनपद था? नक्शा देख कर पहचानो।
   ख. महाजनपदों का इलाका भारत के कौन-कौन से राज्यों में पड़ता है ?
8. राजा पुरुजित किसानों से नियमित रूप से बलि लेने लगा था। यह बात कौन से उपशीर्षक के नीचे तुम्हें पढ़ने को मिली?
9. **साम्राज्य** शब्द का क्या अर्थ है? सही विकल्प छांटो -
   पास का राज्य / छोटा राज्य / जहां कोई राजा न हो / बहुत बड़ा राज्य
10. इन शब्दों का उपयोग करते हुये अपने वाक्य बनाओ -
    कानून, संबंधी, सलाह, नियमित

8. महाजनपद के महानगर
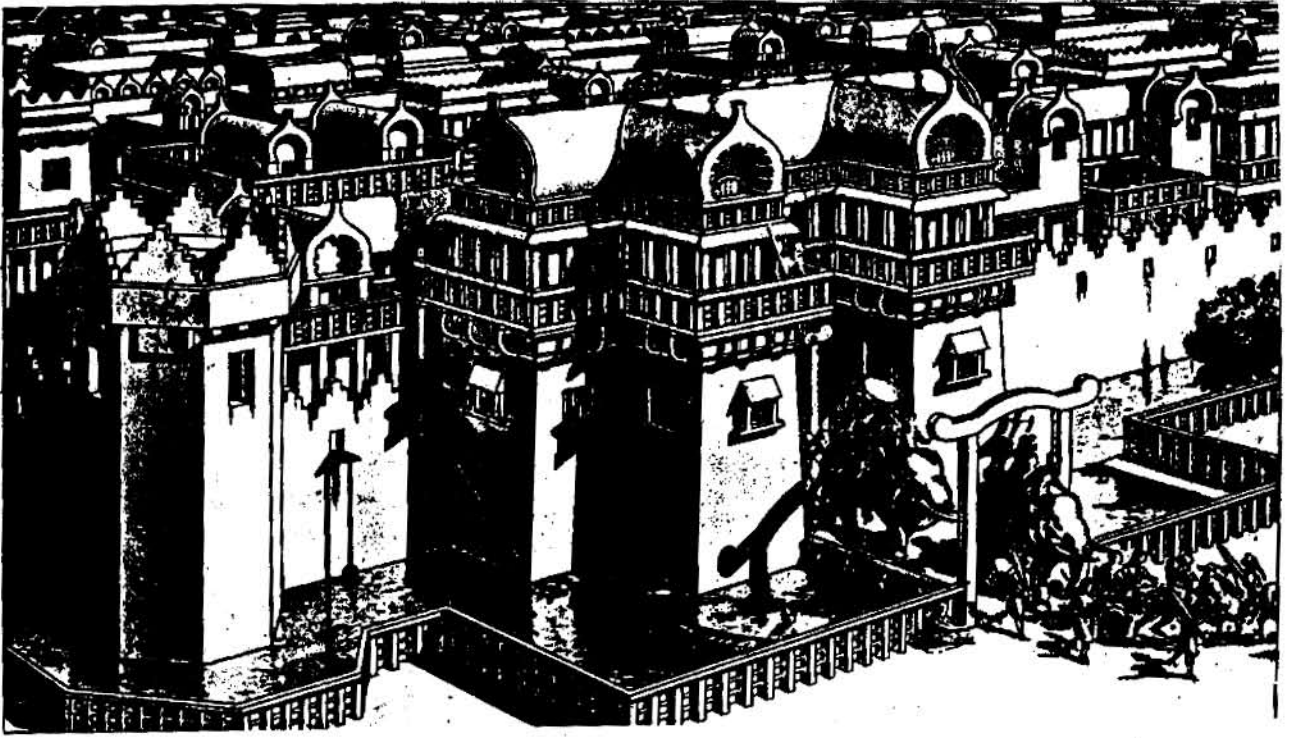
महाजनपदों के महानगरों के चित्र देखो और अंदाज़ से बताओ कि चित्रों में दिख रहे लोग कौन-कौन हैं? नगरों में रहने वाले लोगों की कुछ समस्याएं बताओ। क्या तुम्हें लगता है कि ये समस्याएं महाजनपदों के महानगरों में भी रही होंगी?

कारीगर बने, व्यापारी बने, शहर बसे

महाजनपदों का समय बड़े-बड़े बदलावों का समय था। तुमने पिछले पाठ में पढ़ा था कि राजा शक्तिशाली हो रहे थे और वे सैनिकों व अधिकारियों को रखने लगे थे। वे खेती करने वालों से नियमित रूप से बलि लेने लगे थे। इन बातों का असर और दूसरी बातों पर भी पड़ रहा था।

लोगों से नियमित बलि लेने के कारण राजाओं के पास धन इकट्ठा होता गया। उनके साथ उनके रिश्तेदार, सेनापति और अधिकारी भी धनी होते गये। वे सब इस धन से अपनी शान बढ़ाना चाहते थे। वे अच्छे हथियार, गहने, बर्तन, कपड़े और सुन्दर महल चाहते थे।

कई खेती करने वाले परिवार भी धनी हो रहे थे। वे भी अपने लिए अच्छी व सुन्दर चीज़ें चाहने

लगे। धनी लोगों की तरह-तरह की चीज़ों की मांग को देखकर कई हुनर वाले लोगों ने खेती का काम छोड़ दिया। वे अब बर्तन, गहने, हथियार, कपड़े आदि बनाने लगे और इन चीज़ों को बेचकर अपना गुज़ारा करने लगे। इस तरह कारीगर बने। किसी बस्ती में कपड़ों की अच्छी बुनाई होने लगी, किसी बस्ती में मज़बूत हथियार बनने लगे, किसी और जगह दूर देशों से सोना, मणि आदि मंगवाकर गहने बनने लगे।

पर, जगह-जगह बनी चीज़ों को अलग-अलग जगहों में रहने वाले धनी लोगों तक पहुंचाना ज़रूरी था। कुछ लोगों ने सोचा, "क्यों न हम कारीगरों से उनके द्वारा बनाई गई चीज़ें खरीदें और दूसरी जगहों पर ले जा कर बेचें? अगर सस्ते में खरीदेंगे और महंगे में बेचेंगे तो हम अपना धन बढ़ा सकेंगे।" इस तरह व्यापारी भी बने। व्यापारियों को उन दिनों **सेट्ठी** कहते थे।

राजा और उसके अधिकारी जहां रहने लगे, वहीं कारीगर और व्यापारी भी बसने लगे। धीरे-धीरे राजा की बस्ती बढ़ती गई और बड़ा शहर बन गई। बहुत बड़े शहरों को **महानगर** कहा जाता था।

नक्शे में देख कर उस समय के महानगरों के नाम बताओ।

नक्शे में दो लम्बी सड़कें बनी हैं - एक उत्तर की ओर जाने वाली **उत्तरापथ** और दूसरी दक्षिण की ओर जाने वाली **दक्षिणापथ** व्यापारी इन मार्गों से यात्रा करते थे और एक नगर से दूसरे नगर जा कर व्यापार करते थे।

इन दोनों सड़कों पर पड़ने वाले महानगरों के नाम सूची में लिखो -

उत्तरापथ के नगर -

दक्षिणापथ के नगर -

उन दिनों होने वाली नई बातों में दो और चीज़ें थीं। व्यापार बढ़ने के कारण **सिक्कों** का इस्तेमाल शुरू होने लगा था।
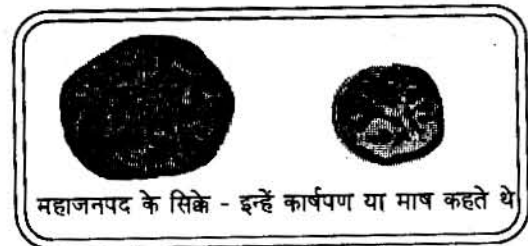
महाजनपद के सिक्के - इन्हें कार्षपण या माष कहते थे

यही नहीं व्यापारियों को हिसाब-किताब रखना पड़ता था। दूर-दूर तक संदेश व खबरें भिजवानी पड़तीं थीं। राजा और उसके अधिकारियों को भी बलि का पूरा हिसाब- किताब रखना पड़ता था। इस कारण उन दिनों **लिखाई** की शुरुआत भी हुई।
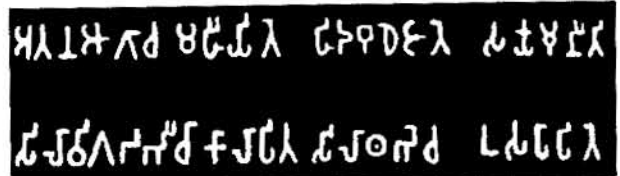
महाजनपद के समय की लिखाई

तुमने शिकारी मानव के बारे में पढ़ा था। उन दिनों शहर क्यों नहीं बस सकते थे -तीन कारण लिखो।

महानगरों में ग़रीब लोग

शहरों में राजा, मंत्री, सेनापति, व्यापारी जैसे धनी लोग रहने लगे थे। उन शहरों की चमक-दमक, चहल-पहल से आस-पास के गांवों के धनी किसान भी शहरों में बसने लगे। धनी लोगों के शहरों में
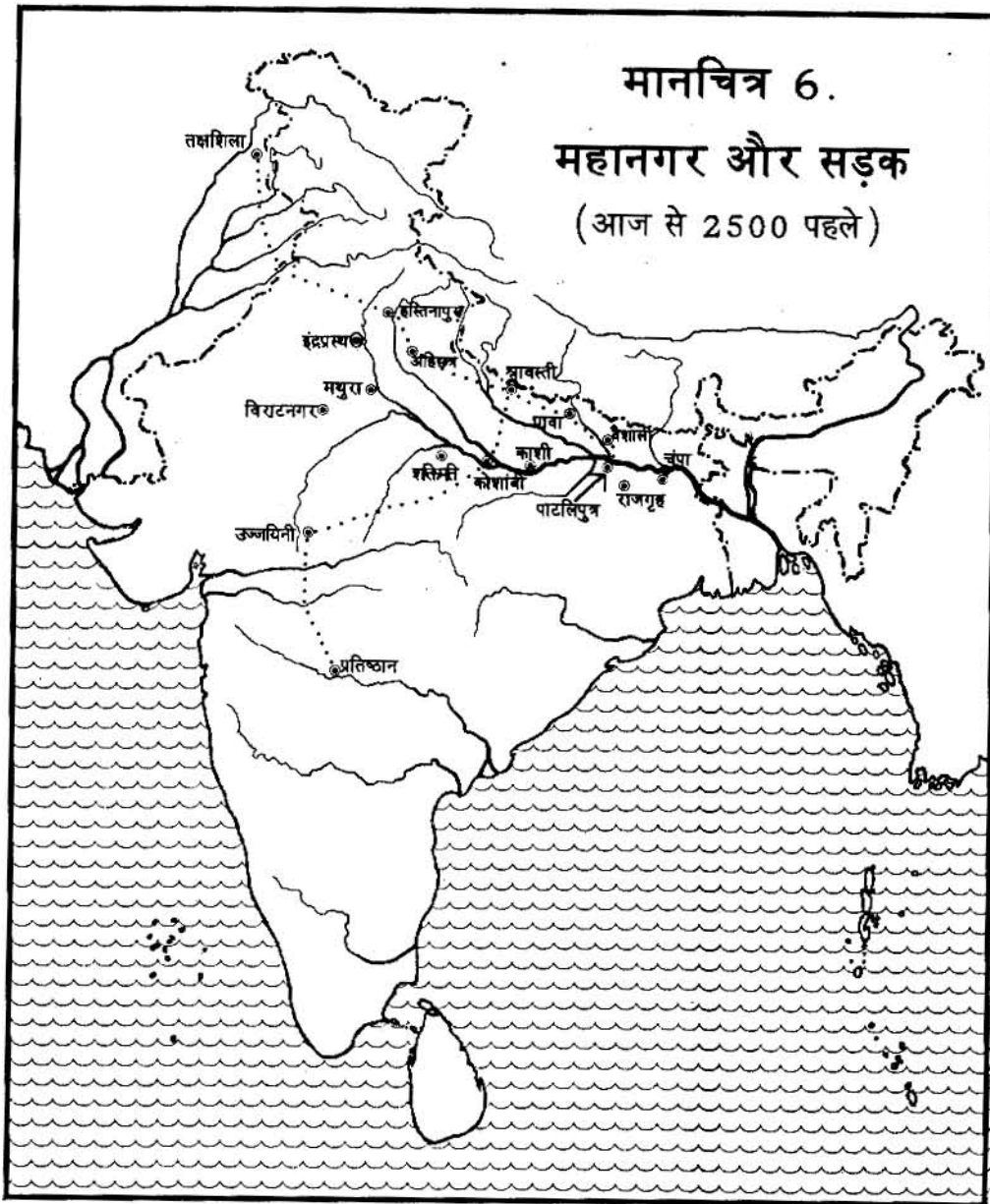
पैमाना - 1से.मी. = 200 कि.मी.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—·—
सागर	﹏﹏
महानगर	●
सड़क	• • • • •

बसने से घर-बाहर के तरह-तरह के काम निकलने लगे। जैसे साफ-सफाई करना, पानी भरना, बर्तन धोना, फूल माला बनाना, सड़कों की सफाई करना, व्यापारियों के लिए भी हम्माली करना.... । कुछ लोग इन कामों को करने लगे। इस तरह शहरों में अमीरों के साथ-साथ ग़रीब लोग भी बसते गए। ये लोग अमीरों की सेवा करके गुज़ारा करते थे।
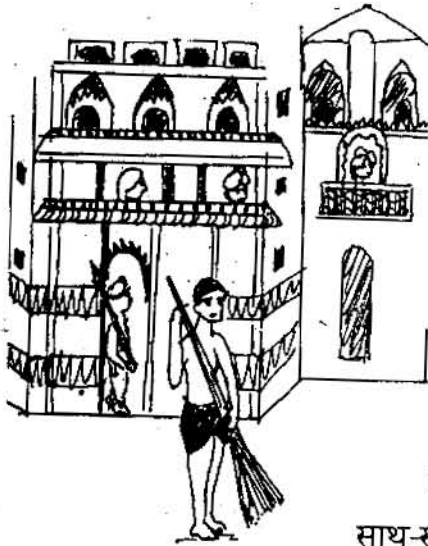
गांवों में गरीब लोग

गांवों में कई बातें बदल गई थीं। कुछ लोगों ने बड़ी-बड़ी ज़मीनें अपने अधिकार में ले ली थीं। ये लोग गृहपति कहलाते थे। उनके सामने अपने बड़े-बड़े खेतों में काम करवाने की समस्या थी। इसके लिए उन्होंने दूसरे लोगों को अपना नौकर बनाया और उनसे अपनी ज़मीन पर मज़दूरी करवानी शुरू की। ये मज़दूर **कर्मकार** कहलाते थे। **दासों** से भी घर व खेत पर काम कराया जाता था।

गृहपति अपने खेतों पर इतना अनाज पैदा करवा लेते थे कि शहरों में बेचने के लिए लाने लगे। शहरों में व्यापारी अनाज खरीद लेते और शहर के लोगों को बेचते।

निर्धन लोग शहरों में क्या-क्या करते थे?

गांव में गृहपतियों को मज़दूरों की ज़रूरत क्यों पड़ी?

शहर में रहने वालों को अनाज कैसे मिलता था?

पैसे का खेल

महानगरों के समय में व्यापार के बढ़ने के कारण सिक्कों-पैसों का चलन भी शुरू हो चुका था। पैसों से सब कुछ खरीदा जा सकता था। तरह-तरह की चीज़ें, नौकर-चाकर, गुलाम - सब कुछ पैसा देने पर मिलता था। जिसके पास पैसे नहीं हों उसको पूछने वाला कोई नहीं था।

ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमाने के लालच में लोग एक दूसरे से झूठ बोलने, एक दूसरे को ठगने व धोखा देने लगे थे और चोरी भी करने लगे थे। पुराने समय में जन के लोग एक दूसरे की मदद करते थे। एक दूसरे पर **भरोसा** करते थे और एक साथ मिल कर गुज़ारा करते थे। ऐसी बातें अब खत्म हो चलीं थीं।

उन दिनों लोगों का जीवन कैसा था, लोग क्या चाहते थे, क्या-क्या सोचते थे - ये जानने के लिये हम उन दिनों की कुछ कहानियां पढ़ेंगे।

कहानी - रंगू का सिक्का

कोसल महाजनपद की राजधानी श्रावस्ती के एक कोने में एक छोटी सी झोपड़ी थी। इसमें रंगू और बासंती साथ रहते थे। रंगू पानी भरने का काम करने वाला **भिश्ती** था। वह रोज़ कुएं से पानी भर कर बाज़ार की दुकानों में पानी देता था।

बाज़ार में आये प्यासे लोगों को पानी पिलाता था। बासंती फूल मालायें बना कर अमीरों के घरों में बेच आती थी। रंगू और बासंती बहुत ग़रीब थे। वे रोज़ पेट भर खा भी नहीं पाते थे।

एक बार रंगू को सड़क पर चांदी का एक सिक्का पड़ा मिला था। उसने उस सिक्के को बचा कर रखा था। बस यही उसका धन था!

अनाथपिंडिक का कारवां

एक दिन रंगू बाज़ार में दुकानों पर रखे मटकों में पानी भर रहा था। देखते-देखते दस-पंद्रह बैलगाड़ियां और पांच-छः ऊंट बाज़ार में आ कर रुके। गाड़ी और जानवर सामान से लदे हुए थे। पूरे बाज़ार में हलचल मच गई कि 'सेठ अनाथपिंडिक का कारवां आ गया है।'

अनाथपिंडिक श्रावस्ती नगर के बड़े व्यापारियों में से था। कई सारे मज़दूर और हम्माल उसकी गाड़ियों से सामान उतारने लगे। गाड़ीवान सफर का थकान दूर करने एक ओर बैठ गए।

रंगू ने गाड़ी हांकने वालों को पानी पिलाया। फिर वह उनके साथ एक पेड़ के नीचे बैठ कर बातें करने लगा। एक गाड़ीवान यात्रा की कहानियां सुनाने लगा। उसने बताया कि कैसे वे तक्षशिला से चले थे और कई नगरों से होते हुये श्रावस्ती आये हैं। यह भी बताया कि सेठ ने क्या-क्या खरीदा और क्या-क्या बेचा है।

रंगू ने पूछा, "क्या तुमने भी उन शहरों से कुछ खरीदा है?" गाड़ीवान की आंखें चमक उठीं। वह बोला, "हां यह ज़री का कपड़ा खरीदा है। हमारे दानी सेठ ने कुछ पैसे दिये थे। सो

हस्तिनापुर के बाज़ार में यह कपड़ा खरीदा है। कैसा लगा?" रंगू बोला, "बहुत अच्छा! तुम्हारा भाग्य अच्छा है जो अनाथपिंडिक जैसा मालिक मिला।"

गाड़ीवान ने जवाब दिया, "अभी तो सेठ का स्वभाव अच्छा ही लग रहा है। पर क्या भरोसा। कहीं काली की मालकिन जैसा न निकले।" तब गाड़ीवान ने रंगू को काली की मालकिन की कहानी सुनाई।

मालकिन की परीक्षा

श्रावस्ती शहर में ही विदेहिका नाम की एक अमीर औरत रहती थी। वह सबसे अच्छा **व्यवहार** करती थी। लोगों का कहना था कि वह कभी किसी से गुस्सा नहीं होती थी। सब दूर उसके अच्छे व्यवहार की प्रशंसा होती थी।

विदेहिका के घर में काली नाम की एक दासी काम करती थी। वह खाना बनाती थी, बर्तन मांजती थी, कपड़े धोती थी, झाडू-पोंछा लगाती थी और घर के अन्य काम बहुत लगन से करती थी। उसने कभी भी अपनी मालकिन को किसी शिकायत का मौका नहीं दिया।

काली एक दिन सोचने लगी, 'क्या मालकिन सचमुच इतनी अच्छी औरत है? मैं उसका सब काम कर देती हूं और खूब सेवा करती हूं। शायद इसलिए उसे गुस्सा होने की ज़रूरत नहीं पड़ती।' उसने अपनी मालकिन की परीक्षा लेने की सोची।

एक दिन वह देर से सो कर उठी। उसकी मालकिन ने नाराज़ हो कर उसे देखा और देर से उठने का कारण पूछा। अगले दिन भी काली देर से उठी। उसकी मालकिन को गुस्सा आया और उसने काली को खूब डांटा।

पर, काली उसकी और परीक्षा लेना चाहती थी। अतः वह तीसरे दिन फिर देर से उठी। उसकी मालकिन को उस दिन इतना गुस्सा आया कि एक लोहे की छड़ से काली के सिर पर मार दिया। काली के सिर से खून बहने लगा। वह समझ गई कि उसकी मालकिन वास्तव में शांत **सुशील** और सरल स्वभाव की नहीं है। जब तक काली सारे काम नियम से करती रही तो मालकिन शांत थी। जब वह देर से उठने लगी तो वह गुस्से में आ कर मारने लगी।

कहानी सुनकर रंगू ने गाड़ीवान से कहा, "सही कहते हो भैया। सेठ, गृहपति, जैसे बड़े लोग दास-कर्मकारों को कुछ समझते ही नहीं हैं।"

रंगू क्या काम करता था?

गाड़ीवान ने क्या खरीदा था? उसे पैसे कैसे मिले थे?

गाड़ीवान ने रंगू को 'मालकिन की परीक्षा' कहानी क्यों सुनाई?

अगर मालकिन के घर पर काम करने के लिए कोई दासी नहीं होती तो क्या वह सबसे अच्छा व्यवहार करती?

नक्शा देख कर बताओ कि सेठ अनाथपिंडिक का कारवां तक्षशिला से किन-किन शहरों से होते हुए श्रावस्ती पहुंचा होगा?

बाज़ार में रंगू

गाड़ीवान के पास ज़री का कपड़ा देख कर रंगू की बहुत इच्छा हुई कि वह भी बासंती के लिए कुछ खरीदे। मगर उसके पास पैसे कहां थे? फिर उसे अचानक याद आया कि उसके पास एक सिक्का रखा है। वह बहुत खुश हो गया। वह तेजी से दौड़ता हुआ गया और घर से सिक्का निकाल लाया। सिक्के को लेकर वह बाज़ार गया।

घूमते-घूमते उसे एक सुनार की दुकान नज़र आई। उसने सोचा शायद एक छोटी सी अंगूठी मिल जाएगी। सुनार के पास सुन्दर-सुन्दर गहने थे। मगर सुनार की सब चीज़ें महंगी थीं। रंगू को अपनी मूर्खता पर **झेंप** आई। सिर नीचा किए वह दुकान से निकल आया।

वह चाहता था कि बासंती के लिए ज़री का कपड़ा खरीदे। वह एक कपड़ा व्यापारी के पास गया। उसके पास बहुत सारे कीमती कपड़े थे। व्यापारी ने बताया, "यह जरी का कपड़ा काशी नगर से आया है। इसकी कीमत है - पांच सिक्के। यह रंगीन सूती कपड़ा उज्जयिनी से आया है। इसकी कीमत है दो सिक्के।" रंगू के पास तो सिर्फ एक सिक्का था। वह दुखी हो कर वहां से निकलने लगा।

कपड़े की दुकान पर एक नौकर काम कर रहा था। रंगू का उतरा हुआ मुंह देख कर वह उससे बातें करने लगा। रंगू ने उसस कहा, "ऐ भैया कुछ तरीका तो बताओ कि थोड़े पैसे कमा सकूं।" दुकान के नौकर ने हंस कर कहा, "आजकल लोग कैसे पैसा कमा रहे हैं, लो सुनो।" फिर उसने यह कहानी सुनाई।

कुटिल व्यापारी

काशी महाजनपद में दो व्यापारी रहते थे। एक गांव में रहता था और एक नगर में रहता था। दोनों की आपस में अच्छी दोस्ती थी।

एक बार गांव वाले व्यापारी ने हल के 500 लोहे के फाल नगर वाले व्यापारी के पास रखवा दिए और वह खुद व्यापार के काम से दूसरी जगह चला गया।

शहर वाले व्यापारी ने हल के फालों को बेच दिया और पैसे अपने पास रख लिए। फाल जहां रखे थे वहां उसने चूहों की मेंगनें फैला दीं।

समय बीतने पर गांव वाले व्यापारी ने आकर कहा, "मेरे फाल दे दो।" कुटिल व्यापारी ने चूहे की मेंगनें दिखा कर कहा, "तेरे फालों को चूहे खा गए।"

दूसरा समझ गया कि कुटिल व्यापारी उसे धोखा दे रहा है। उसने कहा, "अच्छा खा गए सो खा गए, चूहों के खा लेने पर क्या किया जा सकता है?" ऐसा कह वह नहाने को चला और कुटिल व्यापारी के बेटे को अपने साथ ले गया। वह एक दूसरे मित्र के यहां गया और लड़के को वहां बिठा कर अपने मित्र से बोला, "इसे कहीं जाने नहीं देना।" फिर, वह नदी पर नहाया और कुटिल व्यापारी के घर पहुंचा। कुटिल व्यापारी ने पूछा, "मेरा बेटा कहां है?"

वह बोला, "मैं तेरे बेटे को नदी किनारे बैठा कर डुबकी लगा रहा था। एक चिड़िया आई और तेरे पुत्र को पंजों में ले आकाश में उड़ गई। मैने हाथ पीटे, चिल्लाया, बहुत कोशिश की लेकिन तब भी उसे न छुड़ा सका।"

कुटिल व्यापारी गुस्से में बोला, "तू झूठ बोलता है। चिड़िया बच्चों को ले कर नहीं जा सकती।"

"अरे दोस्त, चिड़िया तो बच्चों को ले कर आकाश में नहीं उड़ सकती तो क्या चूहे लोहे की फाल खा सकते हैं?" व्यापारी ने कहा।

तब कुटिल व्यापारी की अक्ल ठिकाने लगी और उसने पांच सौ लोहे के फाल के पैसे दूसरे व्यापारी को लौटाए। फिर दूसरे व्यापारी ने उसका बेटा उसे लौटाया।

रंगू बासन्ती के लिए कोई अच्छी चीज़ खरीदना चाहता था, इसके लिए उसके पास पैसे कहां से आये?

रंगू ने क्या-क्या खरीदने की कोशिश की और वह खरीद क्यों नहीं पाया?

व्यापारी ने अपने दोस्त के साथ क्या चालाकी की?

दोस्त ने चालाक व्यापारी से अपने पैसे कैसे वसूल किए?

कुटिल व्यापारी की कहानी रंगू को किसने सुनाई और क्यों?

रंगू ने कटोरा खरीदा

कुटिल व्यापारी की कहानी सुन कर रंगू को हंसी आई। उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह फिर बाज़ार में घूमने लगा। उसने सोचा दूर के नगरों से आई चीज़ें तो महंगी होंगीं ही। चलो श्रावस्ती के कारीगरों से ही कुछ खरीदते हैं। कई जगह घूम कर आखिर में रंगू एक कसेरे के पास पहुंचा। उसकी दुकान में तांबे, पीतल व कांसे के तरह-तरह के बर्तन रखे हुए थे। उसे एक तांबे का कटोरा पसंद आया।

रंगू ने भाव पूछा तो कसेरे ने बताया, "तीन सिक्के में दो कटोरों की जोड़ी मिलेगी।" अब रंगू के पास तो एक ही सिक्का था। रंगू ने कसेरे से बहुत कहा कि वह एक कटोरा एक सिक्के में दे दे। कसेरे ने कहा, "मगर तांबा इतना कीमती है। इसे हम राजगृह से मंगवाते हैं। मैं कीमत कैसे कम करूं?"

काफी देर रंगू उसे भाव कम करने को कहता

रहा। अंत में कसेरे ने कहा, "अच्छा तुम एक काम करो। अभी कुछ देर में सेठ अनाथपिंडिक यहां बर्तन खरीदने आने वाले हैं।

"तुम इन बर्तनों को साफ करके रख दो। फिर मैं तुम्हें कटोरा एक सिक्के में ज़रूर दे दूंगा।"

रंगू ने बड़ी मेहनत से बर्तन साफ करके रखे। तभी सेठ अनाथपिंडिक घोड़े पर चढ़ कर वहां आ पहुंचा। कसेरे ने उसे माल दिखाया। फिर अनाथपिंडिक ने अपनी पोथी निकाल कर हिसाब-किताब देखा। वह कसेरे से बोला, "आपको मैं आधी रकम पहले ही दे चुका हूं। बाकी की रकम यह लीजिए।" यह कह कर सेठ ने कसेरे को चांदी के सिक्के दिए।

इतमें में बैलगाड़ी आई और रंगू ने टोकरियों में बांधकर बर्तन गाड़ी में लाद दिये। फिर रंगू ने अपना एक सिक्का कसेरे को दिया और तांबे का कटोरा लेकर खुशी-खुशी घर चला।

वाक्य पूरे करो -

कसेरे ने रंगू को एक सिक्के में कटोरा नहीं बेचा क्योंकि ———।

रंगू को कटोरा खरीदने के लिए ——— करना पड़ा।

पोथी में सेठ ने ——— रखा था।

रंगू और बासंती के सवाल

रंगू ने घर पहुंच कर बासन्ती को तांबे का कटोरा दिया। वह बहुत खुश हुई। पर, रंगू विचारों में डूबा हुआ था। बासन्ती ने उसके सोचने का कारण पूछा। रंगू ने बताया, "सबने कोई न कोई रास्ता निकाला है। मुझे क्या करना चाहिये?"

बासन्ती ने पूछा, "कैसा रास्ता?" रंगू ने कहा, "कुटिल व्यापारी ने पैसा कमाने के लिए दोस्त को धोखा दिया और झूठ बोला, क्या वैसा मैं करूं? गाड़ीवान ने अपने मालिक की दया पर भरोसा किया - पर काली ने परीक्षा लेकर दिखा दिया कि मालिक पर भरोसा नहीं कर सकते।"

बासन्ती ने कहा, "हां, और अपने पास भूले-भटके मिला एक सिक्का था, सो खर्च कर दिया। क्या हम इसी तरह भाग्य पर भरोसा करें? क्या दुख दूर करने का और भी कोई रास्ता है?"

यह कहकर बासन्ती भी सोच में डूब गई। थोड़ी देर बाद वह बोली, "आज मैं जिस वन में फूल चुनने गई थी वहां कई परिव्राजक ठहरे हुए हैं। वे इसी तरह की बातों पर चर्चा कर रहे थे। उन्हें सुनने शहर के बहुत लोग जमा थे। क्या हम भी जा कर सुनें?"

रंगू चहक कर बोला, "हां, चल चलते हैं।"

* * * * * * *

अभ्यास के प्रश्न

1. मानचित्र 6 देख कर बताओ कि महाजनपदों के समय बसे हुए कौन से महानगर आज भी हैं? आज उन शहरों में महाजनपद के समय की क्या चीज़ें बची हुई मिल सकती हैं?
2. गृहपति जो अनाज बेचते थे वह शहरों में किस-किस के काम आता था?
3. सरमा के पिता की कहानी तुमने पशुपालक आर्य पाठ में पढ़ी थी। सरमा के पिता की स्थिति और श्रावस्ती नगर के रंगू की स्थिति में क्या-क्या फर्क दिख रहे हैं? तुलना करके समझाओ।
4. यहां बहुत सी बातें लिखी हैं। और नीचे तीन खाने बने हैं। कौन सी बात किस समय में थी, छांट कर भरो -

पशुपालक आर्य	छोटे जनपद	महाजनपद

खेती, मंत्री, गाय के लिए युद्ध, सेना, गांव, शहर, राजन्य, सिक्के, बलि, व्यापारी, जनपद, लिखाई, चारे की तलाश में घूमना, बलि का कानून, कई कारीगर, गणसंघ, वेद ।

5. क) यहां कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से दो बातें छांटो जो रंगू की कहानी की मुख्य बातें हैं-

● रंगू पानी भरने का काम करता था। ● रंगू ने ग़ाड़ीवान से बातें कीं। ● रंगू गरीब था। ● बाज़ार की चीज़ें इतनी मंहगी थीं कि रंगू कुछ नहीं खरीद पाया। ● रंगू ने कसेरे के यहां बर्तन साफ किए।

ख) यहां महाजनपद के नगरों की दो मुख्य बातें लिखी हुई हैं। तुम ऐसी दो-तीन और मुख्य बातें लिखो -

- नगरों में बड़े बाज़ार थे जिनमें कई चीज़ों की दुकानें थीं।
- नगरों में सिक्कों से व्यापार होता था।
-
-
-

6. आज के नगरों की कौन सी समस्याएं तुम्हें महाजनपदों के महानगरों में मिलीं?

7. क) महाजनपद के समय का एक चित्र पृष्ठ 70 पर है। इस चित्र का वर्णन पूरा करते हुए 6-7 वाक्य लिखो - *'चित्र में एक बहुत बड़ा महल और दूसरी बड़ी इमारतें दिख रही हैं। महल की दीवारें ऊंची हैं और उनमें* ....

   ख) इस चित्र और पृष्ठ 74 के चित्र में क्या समानता और क्या अंतर हैं ?

8. तुमने सिंधु घाटी के शहरों के बारे में पढ़ा था। उन शहरों और महाजनपद के महानगरों में क्या समानताएं दिखीं और क्या अंतर दिखे? इन बातों की तुलना करो -

	सिंधु घाटी के शहर	महाजनपद के महानगर
क. शहर किन नदियों के किनारे बसे थे		
ख. शहरों में किन-किन चीज़ों का व्यापार होता था		
ग. लिखाई		
घ. व्यापार में सिक्कों का उपयोग		
ङ. कारीगर		

९. नए प्रश्न नए विचार

महाजनपदों का समय एक बहुत ही रोचक समय था। तब बड़े-बड़े बदलाव आ रहे थे और लोगों के मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे थे। इन सवालों के कुछ उदाहरण तो तुमने पिछले पाठों में पढ़े थे। राजा पुरुजित सोच रहा था, "यज्ञ क्यों करना चाहिए?" श्रावस्ती में रंगू बासंती से पूछ रहा था, "दुख कैसे दूर किया जा सकता है?" तुम इस पाठ के उपशीर्षकों को पढ़ो तो पता लगेगा कि और किस-किस तरह के सवाल उन दिनों लोग पूछते थे।

क्या तुम्हारे मन में भी ऐसे प्रश्न उठते हैं? तुम इन प्रश्नों के बारे में क्या सोचते हो – चर्चा करो।

मरने के बाद क्या होता है?

तुम्हारी ही उम्र के नचिकेत नाम के एक बालक की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। शायद तुमने भी सुनी होगी। नचिकेत के मन में सवाल उठा, 'मरने के बाद हमारा क्या होता है?' उसने सोचा कि यमराज तो मृत्यु का देवता है। उसी से पता करना चाहिए। नचिकेत सीधे यमराज के पास गया उन से प्रश्न पूछने! ज्ञान पाने की इच्छा में वह बालक उस भयानक देवता से डरना भी भूल गया! नचिकेत ने यमराज से पूछा, "मरने के बाद हमारा क्या होता है?"

यमराज इस कठिन प्रश्न का उत्तर नहीं समझाना चाहता था। यमराज ने उसके प्रश्न को टालने की लाख कोशिश की। उसे खूब लालच दिया, कि "तुझे सोना दूंगा, चांदी दूंगा, गायें दूंगा। मगर तू ये प्रश्न न पूछ। इसका उत्तर तो देवता भी नहीं जानते हैं।" मगर नचिकेत अड़ा रहा और यमराज से उत्तर जानकर ही छोड़ा। नचिकेत की यह कहानी उन दिनों रचे गये **ग्रंथ** 'कठोपनिषद' में लिखी है।

तुम्हें क्या लगता है, मरने के बाद क्या होता होगा कक्षा में चर्चा करो।

ऐसा क्या है जो कभी नहीं मरेगा?

उन दिनों कई लोग जंगलों में **आश्रम** बनाकर रहते थे। उन आश्रमों में वे तरह-तरह के प्रश्नों पर **चिंतन-मनन**करते थे। वहाँ आने वालों से वे चर्चा
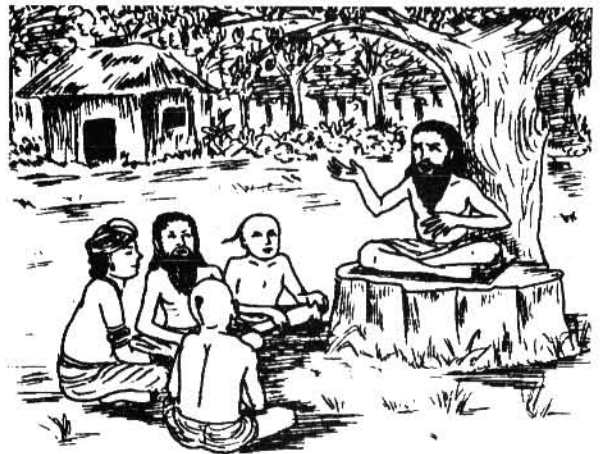
करते थे और अपने विचार दूसरों को सिखाते थे। इस तरह आश्रमों में रहने वाले **ऋषि-मुनि**कहलाते थे। कई राजा भी इस तरह के चिंतन मे आगे थे। इन राजाओं व ऋषियों के विचारों को **उपनिषद्** नाम की पुस्तकों में पढ़ा जा सकता है। याज्ञवल्क्य, आरुणि आदि बहुत जाने माने ऋषि थे।

इन ऋषियों को ऐसी चीज़ की खोज थी जो कभी नहीं मरे और कभी दुखी न हो। उन्होंने ऐसी कभी नष्ट न होने वाली चीज़ को "आत्मा" या "ब्रह्म" कहा। वे यह भी मानते थे कि आत्मा या ब्रह्म को ठीक से जानने पर ही हम अमर हो सकते हैं। आत्मा को जानने के लिए तपस्या करनी ज़रूरी है।

तुमने आत्मा और तपस्या के बारे में क्या-क्या सुना है – बताओ।

परिव्राजक

कुछ और ज्ञान खोजने वाले लोग थे जो एक जगह नहीं रहते थे। वे घर-बार **त्यागकर**गांव-गांव, जंगल-जंगल, शहर-शहर घूमते रहते थे। इन्हें **परिव्राजक**(यानी घूमने वाले) या **भिक्षु** (यानी भीख मांग कर खाने वाले) कहा जाता था। ऐसे परिव्राजकों में वर्धमान महावीर, गौतम बुद्ध, मक्खली गौशाल और अजित केशकंबलिन बहुत प्रसिद्ध हुए।

संसार के झंझट से कैसे छुटकारा पायें? (वर्धमान महावीर)

वर्धमान महावीर एक गणसंघ में जन्मे थे। तीस वर्ष की उम्र में वे अपने घर परिवार को छोड़कर परिव्राजक बन गये। उनके मन में यह प्रश्न था "संसार के जन्म और मरण के झंझट से हम कैसे बच सकते हैं?" कई वर्ष चिंतन और घोर तपस्या के बाद महावीर को अपने प्रश्नों का उत्तर सूझा।

महावीर ने लोगों को यह शिक्षा दी कि हम दूसरे जीवों को जो दुख पहुंचाते हैं, इससे हम पर **पाप** का बोझ होता है। इसलिए जहां तक संभव हो किसी प्रकार के प्राणी को चाहे वह छोटे से छोटा कीड़ा क्यों न हो, दुख नहीं पहुंचाना चाहिये, और हिंसा नहीं करनी चाहिये। अपने पुराने पापों के बोझ को उतारने के लिए हमें अपने शरीर को कष्ट देकर घोर तपस्या करनी चाहिये। इस तरह हम पाप का बोझ हटा सकते हैं और इस संसार से छुटकारा पा सकते हैं।

महावीर हमेशा घूमते रहे और लोगों को अपने विचार समझाते रहे। कई लोग उनकी बातों को मानने लगे। इस प्रकार **जैन मत** की शुरुआत हुई।

दुख क्यों होता है? दुख से छुटकारा कैसे मिलेगा? (गौतम बुद्ध)

गौतम बुद्ध भी महावीर की तरह एक गणसंघ में पैदा हुए थे। उन्होंने पाया कि चारों ओर लोग दुखी हैं और एक दूसरे से लड़ रहे हैं। वे सोचने लगे, "इस दुख से छुटकारा कैसे पा सकते हैं?"

ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजने गौतम भी अपना घर परिवार छोड़कर एक परिव्राजक बन गये। कई वर्ष चिंतन करने के बाद उन्हें अपने सवालों का उत्तर सूझा।

गौतम बुद्ध का कहना था कि बहुत अधिक इच्छा के कारण ही दुख होता है। अगर हम अपनी इच्छाओं को काबू में कर सकते हैं तो दुख से भी

गौतम बुद्ध

छुटकारा पा सकते हैं। इच्छाओं पर काबू पाने के लिए हमें **संयम** से रहना चाहिये और दूसरों को भी दुख नहीं पहुंचाना चाहिए। इस तरह बुद्ध ने जो विचार फैलाया वह **बौद्ध मत** कहलाया।

रिक्त स्थानों को भरो-

——— आश्रम बनाकर रहते थे जबकि ——— घूमते रहते थे।

याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों के विचार ——— नाम की पुस्तकों में लिखे हैं।

वर्धमान महावीर द्वारा चलाया गया मत ——— मत के नाम से प्रसिद्ध है, जबकि गौतम बुद्ध द्वारा चलाया गया मत ——— मत के नाम से जाना जाता है।

नचिकेत किस प्रश्न का उत्तर जानना चाहता था?

ऋषियों को किस चीज़ की खोज थी?

महावीर ने क्यों कहा कि हमें किसी जीव को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए?

बुद्ध ने दुख से बचने का क्या उपाय बताया?

तुम ने भी कई घूमते रहने वाले साधू महात्माओं को देखा होगा। वे क्या करते हैं और क्या कहते हैं, कक्षा में चर्चा करो।

तुम्हारे घर के लोग ऐसे साधु महात्माओं से क्या पूछते हैं? पता करो।

बुद्ध और महावीर जैसे कई और परिव्राजक हुये जो अपने-अपने मतों का प्रचार करते थे। उन दिनो राजाओं से लेकर मज़दूरों तक सब तरह के लोग इन परिव्राजकों से अपने प्रश्न पूछते थे और चर्चा करते थे। वे क्या पूछते थे और क्या चर्चाएं होती थीं चलो एक कहानी में पढ़ें।

कहानी - कौतूहल शाला

श्रावस्ती नगर के बाहर घने पेड़ों से घिरा एक उपवन था। यहां पेड़ों के नीचे चबूतरे और कमरे बने थे। यह थी श्रावस्ती नगर की "कौतूहल शाला" (यानी लोगों के **कौतूहल** को शांत करने की जगह) यहां तरह-तरह के विचार के लोग - पंडित, ऋषि और भिक्षु आकर अपने विचार सुनाते थे। शहर के लोग आकर उन्हें सुनते थे और उनसे प्रश्न पूछते थे।

क्या यज्ञ करना चाहिये?

एक दिन रंगू और बासंती कौतूहल शाला गये। वहां जगह-जगह चर्चाएं चल रहीं थीं। एक पेड़ के नीचे एक राजकुमार एक ऋषि से पूछ रहा था कि क्या यज्ञ करना चाहिए? ऋषि राजकुमार को समझा रहे थे -

"यज्ञ तो करना चाहिये। उसमें सैकड़ों जानवरों की बलि भी देनी चाहिए। उससे **पुण्य** मिलेगा और तुम स्वर्ग में जाओगे। मगर जब यह पुण्य स्वर्ग में खप जायेगा तो तुम वापस यहीं

जन्म लोगे। यज्ञों से मिले पुण्य खत्म हो जाते हैं।"

राजकुमार, "तो क्या करना चाहिये?"

ऋषि, "उपनिषदों में कहा है कि वे मूर्ख हैं जो यज्ञों को ही सब कुछ मानते हैं। तुम्हें तपस्या करके अपनी आत्मा का ज्ञान पाना चाहिये।"

राजकुमार, "क्या मुझे अपना राजकाज छोड़कर तपस्या करनी चाहिये?"

तब वहां खड़े एक परिव्राजक ज़ोर से बोल उठे, "मैं इस ऋषि की बात नहीं मानता। आत्मा नाम की कोई चीज़ नहीं है। मरने पर हमारा शरीर तो मिट्टी में मिल जाता है। उसके बाद कुछ नहीं बचता है। इसलिए जब तक हम ज़िंदा हैं खूब खा-पीकर सुख से जीना चाहिए। तपस्या और पाप-पुण्य के झंझट में नहीं पड़ना चाहिए।"

रंगू को यह बात बहुत मज़ेदार लगी। बासंती भी सोचने लगी कि हम जब मर जाते हैं उसके बाद क्या सचमुच कुछ बचता है?

ऋषि के विचार में इनमें से कौन-कौन सी बातें सही होंगी।

1. यज्ञ करना चाहिए 2. यज्ञ नहीं करना चाहिए 3. यज्ञ से पुण्य मिलेगा 4. यज्ञ में पशुओं की बलि नहीं होनी चाहिए 5. यज्ञ से मिला पुण्य खत्म हो जायेगा 6. आत्मा का ज्ञान पाना ही सबसे बड़ी बात है

परिव्राजक को इनमें से क्या बातें ठीक लगती ?

1. यज्ञ करने से कोई पुण्य नहीं मिलेगा।

2. आत्मा जैसी कोई चीज़ नहीं है।

3. जब तक जीवित हो सुख से जियो।
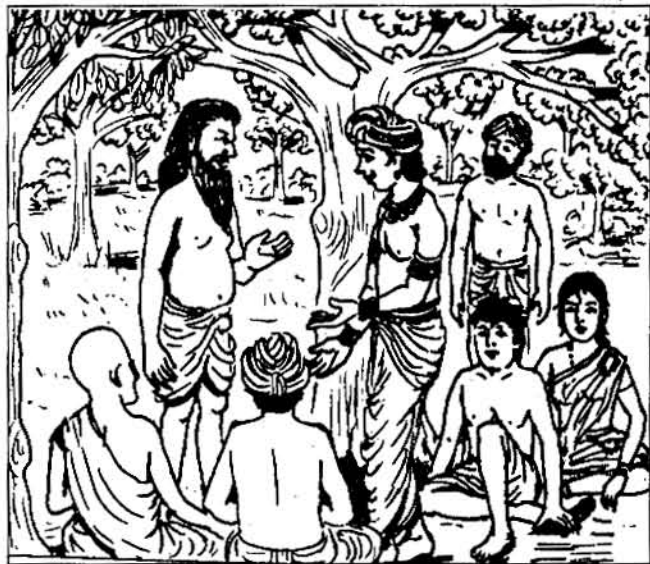
"तपस्या करो - ज्ञान प्राप्त करो"

सच्चा यज्ञ क्या है?

रंगू और बासंती कुछ देर बाद एक दूसरे पेड़ के नीचे पहुंचे। वहां सिर मुंडाये एक भिक्षु बैठे थे। वही राजकुमार उनसे पूछ रहा था–

"हे भिक्षु मैं यज्ञ करना चाहता हूं। कोई कहता है कि यज्ञ करने से पुण्य मिलेगा। कोई और कहता है, पाप पुण्य कुछ नहीं होता। आपका क्या विचार है? क्या यज्ञ करना चाहिये? सच्चा यज्ञ कैसा हो?"

भिक्षु बोले, "हे राजकुमार यज्ञ में सैकड़ों जानवरों को दुख पहुंचाकर उनकी बलि देते हो। किसानों से जानवर और अनाज लेकर उन्हें दुख पहुंचाते हो। दूसरों को दुख पहुंचाने और हिंसा करने से पुण्य कैसे मिलेगा?

"तुम्हारी प्रजा में कितने लोगों के पास काम धंधा नहीं है। कितने लोग भूखे हैं और दुखी हैं। तुम सबसे पहले उन लोगों के लिए काम धंधों

का इंतज़ाम करो। किसी से यज्ञ के लिए ज़बरदस्ती बलि मत लो। जो मिले उसे भी लोगों में बांट दो। बेकारी, ग़रीबी और दुख दूर करना ही सच्चा यज्ञ है राजकुमार! इसी से तुम्हें पुण्य मिलेगा और तुम सुखी होगे।"

रंगू और बासंती को भिक्षु की यह बात अच्छी लगी। बासंती बोली, "अगर सारे राजा ऐसे करें तो कितना अच्छा होगा।"

भिक्षु ने राजा से क्या करने को कहा? और क्या करने का मना किया?

क्या अच्छे काम के फल अच्छे होंगे?

एक और भिक्षु पेड़ के पास खड़ा था। वह राजा से बोला, "अरे तुम्हारे करने या न करने से कुछ फर्क नहीं पड़ता है। जो तुम्हारे भाग्य में है वही होगा। न तुम अच्छे कामों से अपना सुख बढ़ा सकते हो न ही बुरे कामों से तुम्हारा कुछ बिगड़ेगा। जो होनी में है सो तो होगा ही।"

इस तरह कई अलग-अलग विचार सुनकर राजा कौतूहल शाला से लौट गया।

तुम्हें क्या लगता है – राजा ने कौन सा विचार माना होगा और क्या किया होगा? कक्षा में चर्चा करो।

क्या दूसरे भिक्षु की बात तुम्हें ठीक लगी –

क्या वास्तव में बुरे काम या अच्छे काम से कोई अंतर नहीं पड़ता है? तुम अपने आसपास के उदाहरणों को ध्यान में रखकर चर्चा करो।

क्या जन्म से कोई ऊंचा और कोई नीचा होता है?

रंगू और बासंती अब अपने घर की ओर चल पड़े। कौतूहल शाला में इतनी तरह की बातें सुनकर वे सोच में डूबे हुए थे। घर के रास्ते में उन्हें एक दोस्त मिल गया। उसने बताया कि वह गौतम बुद्ध से मिलने जा रहा है। उसने रंगू और बासंती को भी साथ आने को कहा। "बस यहीं पास में जेतवन में बुद्ध ठहरे हैं। उनकी बातों को सुनकर तुम्हें अच्छा लगेगा।"

रंगू और बासंती जेतवन पहुंचे तो वहां का शांत **वातावरण** उन्हें पसंद आया। एक जगह बुद्ध बैठे थे और उनके चारों तरफ कई लोग बैठे थे। उनमें कई ब्राह्मण भी थे। रंगू और बासंती भी एक ओर बैठ गये।

एक ब्राह्मण युवक बोलने लगा, "हे बुद्ध, मैं श्रावस्ती नगर का आश्वलायन हूं। हे बुद्ध, हमने सुना है कि आप कहते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय,

वैश्य और शूद्र सब जातियां समान हैं। मगर हमारे पूर्वजों ने कहा है कि ब्राह्मण ही सबसे ऊंचे हैं क्योंकि वे भगवान के मुंह से पैदा हुये हैं।"

बुद्ध बोले, "मगर हे आश्वलायन, बच्चे अपनी माँ के पेट से जन्म लेते हैं, चाहे जो भी जाति के हों। तो यह कहना ठीक नहीं होगा कि ब्राह्मण भगवान के मुंह से पैदा हुये हैं।"

आश्वलायन, "हे बुद्ध, हमने सुना है कि आपके **अनुसार** कोई भी जाति के मनुष्य को **मोक्ष** मिल सकता है। ब्राह्मण तो यह मानते हैं कि वे सबसे ऊंचे हैं और उनको ही मोक्ष मिल सकता है। इसके बारे में आपको क्या कहना है?"

बुद्ध, "हे आश्वलायन, अगर कोई ब्राह्मण चोरी करे या हत्या करे, क्या उसे पाप नहीं लगेगा – क्या वह नरक नहीं जायेगा?"

आश्वलायन, "हां हे बुद्ध, चोरी या हत्या करने वाला चाहे वह ब्राह्मण हो या शूद्र वह नरक में ज़रूर जायेगा।"

बुद्ध, "अगर कोई शूद्र, कोई पाप न करे और अच्छे आचरण करे तो क्या वह स्वर्ग नहीं जायेगा?"

आश्वलायन, "हां बुद्ध, अच्छे आचरण करने वाला, चाहे वह किसी भी जाति का हो - स्वर्ग जायेगा।"

बुद्ध, "हे आश्वलायन तो जन्म महत्व का नहीं है। आचरण ही महत्वपूर्ण है। सभी लोग अच्छे आचरण से मोक्ष पा सकते हैं।'

रंगू और बासंती को ये बातें बहुत अच्छी लगीं।

फिर वे जेतवन में और लोगों से भी मिले। कई लोग अपने घर बार छोड़कर बुद्ध के शिष्य बन गये थे। इन्हें बौद्ध भिक्षु कहा जाता था। बौद्ध भिक्षुओं का एक **संगठन** था जो **बौद्ध संघ** कहलाता था। संघ में कोई ऊंचा या नीचा नहीं माना जाता था। हर भिक्षु को, चाहे वह संघ में आने से पहले ब्राह्मण रहा हो या शूद्र, समान अधिकार मिला हुआ था। बौद्ध संघ में औरतें भी थीं – और सब मिलजुल कर सारे काम करते थे।

बुद्ध और आश्वलायन किस बात पर चर्चा कर रहे थे?

वाक्य पूरा करो-

- ***आश्वलायन का कहना था कि ब्राह्मण सबसे ऊंचे हैं क्योंकि -***
- ***बुद्ध का कहना था कि जिसका - —— अच्छा है उसी को - —— मिलता है।***

अभ्यास के प्रश्न

1. छोटे जनपदों के समय तक यज्ञों को बहुत महत्व दिया जाता था। पर बाद में ऋषि-मुनियों और भिक्षुओं ने किन बातों को ज़्यादा महत्व दिया? सिर्फ पांच वाक्यों में लिखो।
2. वर्धमान महावीर के अनुसार हिंसा करने और दूसरों को दुख पहुंचाने से हम पर क्या असर पड़ता है?
3. क) गौतम बुद्ध के अनुसार हम अपना दुख कैसे कम कर सकते हैं?
   ख) क्या उस समय ऐसे परिव्राजक थे जो तपस्या करने, संयम रखने जैसी बातों को नहीं मानते थे? वे दुख-सुख के बारे में क्या सोचते थे?
4. बुद्ध ने यह बात सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिए कि ब्राह्मण जन्म से सबसे ऊंचे नहीं हैं?
5. यह किसने कहा कि इच्छाओं पर काबू रखने से हम दुख कम कर सकते हैं?
   इस प्रश्न का उत्तर पाठ के किस उपशीर्षक में मिलेगा?
6. इन शब्दों को अपने वाक्यों में उपयोग करो -
   अनुसार , त्याग, कौतूहल, आचरण।

10. राजा अशोक

तुम्हारे विचार में एक अच्छे राजा में क्या-क्या गुण होने चाहिये? क्या तुमने किसी अच्छे राजा के बारे में सुना है?

इन दो चित्रों को तुम कई बार देखते हो। क्या तुम बता सकते हो कि ये किस के चित्र हैं, और तुम इन्हें कहां-कहां देखते हो?
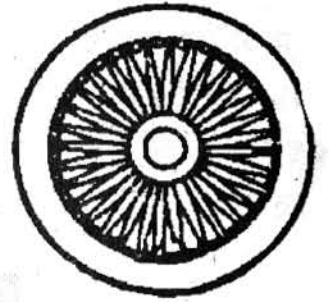
मगध का राजा अशोक

बहुत पुराने समय में, यानी गौतम बुद्ध की मृत्यु के 200 साल बाद एक राजा हुआ था। उसका नाम था अशोक। राजा अशोक मगध राज्य का राजा था और उसकी राजधानी थी पाटलिपुत्र।

राजा अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह कई लंबे, सुन्दर, चमकाये हुये पत्थरों से बने खंभे गढ़वाए। खंभों पर उसने अपने संदेश खुदवाए। खंभों के ऊपरी सिरे पर कहीं बैल, कहीं हाथी तो कहीं सिंह बने थे।

अशोक के कुछ खंभों पर चार सिंहों की मूर्ति थी। सिंहों की मूर्ति के नीचे एक चक्र बना होता था। उसी मूर्ति का चित्र तुम भारत सरकार के नोटों और कागज़ातों पर देखते हो और वही चक्र तुम भारत के **राष्ट्रीय** झंडे के बीचों बीच बना देखते हो।

राजा अशोक की निशानियां आज भी भारत की निशानियां मानी जा रही हैं।

राजा अशोक में ऐसी क्या खास बात होगी कि उसे आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है और याद किया जाता है? दो तीन कारणों का अंदाज़ा लगाकर बताओ।

बहुत बड़ा और शक्तिशाली राज्य

अशोक जब सिंहासन पर बैठा - तब उसका राज्य बहुत लंबा-चौड़ा था। उसके पिता बिन्दुसार ने दक्षिण भारत के कई हिस्सों को जीत लिया था।

उसके दादा चन्द्रगुप्त मौर्य उत्तर और पश्चिम के हिस्सों पर कब्ज़ा कर चुका था।

चंद्रगुप्त मौर्य ने सिकंदर के सेनापति सेल्यूक्स निकेटर को हरा दिया था और इस तरह यूनानी राजाओं की शक्ति को बढ़ने से रोका था।

क्या तुम्हें याद है कि यूनानी लोग भारत की तरफ क्यों आए थे?

अशोक के दादा, चंद्रगुप्त मौर्य को राज्य जीतने और बढ़ाने में चाणक्य नाम के एक चतुर पंडित ने मदद की थी। चाणक्य की मदद से चंद्रगुप्त ने अपने विशाल राज्य में शासन करने का पूरा इंतज़ाम किया था।

इस तरह अशोक को अपने पिता और दादा से बहुत विशाल और शक्तिशाली राज्य मिला था। अशोक ने भी एक बड़ा युद्ध लड़कर पूर्वी हिस्से में पड़ने वाले कलिंग नाम के एक **स्वतंत्र** जनपद को हराया और उसे अपने राज्य में मिला लिया।

तुम मानचित्र 7 में देखो कि आज के भारत के लगभग पूरे भाग पर और उसके बाहर के हिस्सों पर भी अशोक राज्य करता था।

अशोक के राज्य में आज के कौन-कौन से देशों के हिस्से आते थे? आज के भारत के जो इलाके अशोक के राज्य में नहीं थे उन्हें पेंसिल से रंगो।

क्या इससे पहले किसी राजा का राज्य इतना बड़ा था? पिछले पाठों के नक्शे देखकर बताओ।

क्या तुम सोच सकते हो कि बड़ा राज्य होने की क्या कठिनाइयां हैं और क्या-क्या फायदे हैं?

अशोक का राज्य था तो बहुत बड़ा, पर उन दिनों बहुत से इलाकों में जंगल थे। जंगलों में कहीं-कहीं शिकारी **कबीले** रहते थे। और कहीं-कहीं जंगलों में थोड़ी बहुत खेती करने वाले लोगों की बस्तियां थीं।

दूर-दराज़ के इलाकों में राजा के अधिकारी

जहां-जहां गांव व शहरों की घनी बस्तियां थीं वहां-वहां राजा ने अपने अधिकारी और कर्मचारी **नियुक्त** किए थे। वे अपने-अपने इलाके के किसानों, कारीगरों, व्यापारियों से लगान वसूल करते थे। राजा की आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देते थे। राजा के खिलाफ **विद्रोह** की बात सोचने वालों की ख़बर राजा तक पहुंचाते थे जो दूर पाटलिपुत्र में रहता था। राज्य के दूर-दूर के हिस्सों में **तैनात** अधिकारियों पर भी राजा नज़र रखता था।

उसके चार राजकुमार राज्य के चार भागों में रहते थे। उत्तर में तक्षशिला, पश्चिम में उज्जयिनी, दक्षिण में सुवर्णगिरी और पूर्व में तोसली नाम के नगरों में राजकुमार रहते थे। इन नगरों को नक्शे में देखो। इन नगरों से राजकुमार आस-पास के इलाकों की देख-रेख करते थे।

अशोक के कुछ बड़े अधिकारी राज्य भर में दौरा करते रहते थे और शासन का काम देखते थे। इन्हें **महामात्र** कहा जाता था।
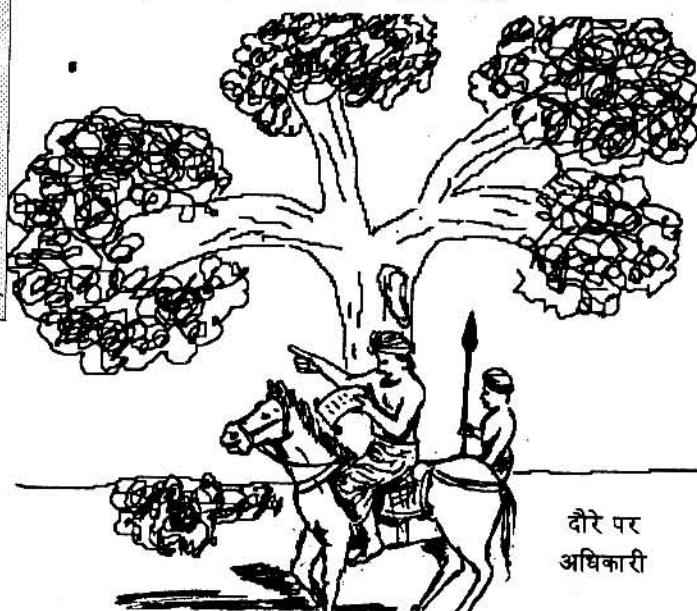
दौरे पर अधिकारी
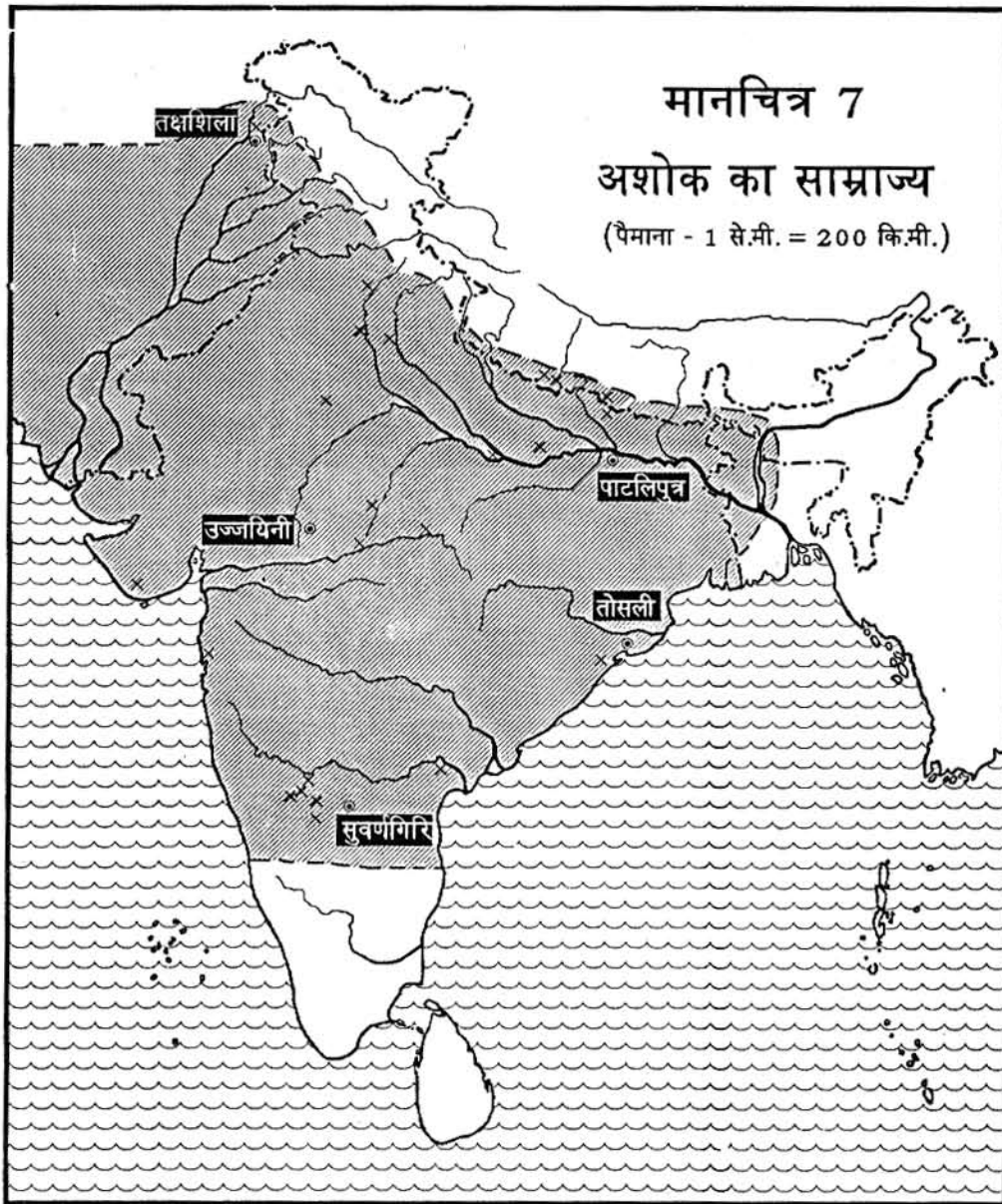
संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	
शहर	⊙
अशोक के शिलालेख मिलने वाली जगह	×
अशोक का साम्राज्य	

> एक लंबे चौड़े राज्य को अपने वश में रखने के लिए, अशोक ने क्या क्या किया था? इनमें से कौन सी बातें आज भी की जाती हैं?

अशोक खुद अक्सर राज्य में दूर-दूर की जगहों का दौरा करता था। अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह चट्टानों पर या खंभों पर वहां के अधिकारियों व लोगों के लिए अपने संदेश भी खुदवाए ताकि लोग उसकी बातों पर ध्यान दे सकें। वह लोगों की बोलचाल की भाषा यानी **प्राकृत** भाषा में ये संदेश खुदवाता था। चट्टानों व खंभों पर खुदे उसके संदेशों से हम आज अशोक के समय की कई बातें जान सकते हैं।

अशोक का राज्य शक्तिशाली था। एक लंबे-चौड़े राज्य के लाखों लोगों से लगान वसूल की जाती थी। सैकड़ों छोटे-बड़े अधिकारियों, कर्मचारियों, सैनिकों और सेनापतियों को वेतन देकर सेवा में रखा जाता था। राजा का हुकुम सबसे ऊपर था।

कर्णाटका राज्य में मिला अशोक का शिलालेख

पर, ये वो बातें नहीं हैं जिनके लिए मगध का राजा अशोक आज भी याद किया जाता है।

वह याद किया जाता है क्योंकि उसने राज्य की शक्ति के अलावा लोगों की भलाई की बात सोची, शान्ति और दया की बात सोची।

एक आखिरी लड़ाई

अशोक ने एक ऐसा फैसला किया जो आमतौर पर कोई राजा नहीं करता। उसने कलिंग जनपद को युद्ध में हराने के बाद तय किया कि वह भविष्य में जहां तक हो सके और कोई युद्ध नहीं लड़ेगा।

कलिंग जनपद के युद्ध में अशोक ने जो खून खराबा और तकलीफ़ देखी थी उससे वह बहुत दुखी हुआ था।

अशोक ने युद्ध की तबाही पर बहुत विचार किया। शत्रु को खत्म करके उसका राज्य जीतने पर राजा खुश होते हैं और गर्व करते हैं। पर अशोक का मन दुख और शर्म से भर उठा था। उसने सोचा कि युद्ध से लोगों को दुख पहुंचता है इसलिए वह युद्ध छोड़कर

ऐसे काम करेगा जिससे लोगों की भलाई हो। उसने अपने विचार एक संदेश के रूप में चट्टानों पर खुदवाए -

"राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग को जीता।

"1,50,000 लोगों को देश-निकाला दिया गया और 1,00,000 से भी ज्यादा लोग मारे गये।

"इससे मुझे बहुत दुख हुआ। यह क्यों? जब एक आज़ाद जनपद हराया जाता है वहां लाखों लोग मारे जाते हैं: और बंदी बनाकर अपने जनपद से बाहर निकाल दिए जाते हैं। वहां रहने वाले ब्राह्मण-भिक्षु मारे जाते हैं।

*"ऐसे किसान जो अपने बंधु-मित्रों, दास और मज़दूरों से **नम्रतापूर्ण** बर्ताव करते हैं – ऐसे लोग युद्ध में मारे जाते हैं और अपने **प्रियजनों** से बिछुड़ जाते हैं।*

"इस तरह हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं बहुत दुखी हूं। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।

"मैं मानता हूं कि धर्म से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं यह बातें खुदवा रहा हूं ताकि मेरे पुत्र और पोते भी युद्ध करने की बात न सोचें और धर्म फैलाने की बात सोचें।

कलिंग विजय के बाद अशोक के मन में क्या भाव उठे?

उन दिनों और कौन लोग अहिंसा और दया के विचारों को फैला रहे थे?

अगर अशोक का राज्य ताकतवर दुश्मनों से घिरा होता – तब भी क्या अशोक युद्ध न करने का फैसला करता?

तुम्हारे विचार में अशोक की नीति की क्या अच्छाइयां हैं?

अशोक का धम्म

आओ जानें की युद्ध छोड़कर अशोक कौन सा धर्म फैलाने की बात कर रहा था? अशोक जो धर्म फैलाना चाहता था उसमें किसी भगवान या महात्मा या पूजा पाठ या यज्ञ आदि की बातें नहीं थीं।

अशोक सोचने लगा था कि उसकी प्रजा उसके बच्चों के समान है। पिता अपने बच्चों को अच्छी बातें सिखाता है और उनकी भलाई की कोशिश करता है। वैसे ही राजा को भी अपनी प्रजा को सही व्यवहार की बातें सिखानी चाहिए और उनकी भलाई की कोशिश करनी चाहिए।

अशोक देखता था कि लोग यज्ञों में पशुओं की बलि से दुखी हैं, मज़दूरों और दासों को भूख और तंगी के अलावा मालिकों की मारपीट, डांट भी सहनी पड़ती है। उसने देखा कि धर्म के बारे में अलग-अलग विचार हैं और इनको लेकर बहुत झगड़े, बहस और मनमुटाव होते हैं। समाज में लोग एक दूसरे से झूठ बोलते हैं, धोखा देते हैं, और धन

की छीना-झपटी में लगे हैं।

अशोक ने जब इन बातों पर विचार किया तो उसे लगा कि एक राजा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी प्रजा को जीवन के बारे में सही राह दिखाए। उसने इस काम के लिए अलग से अधिकारी रखे जिन्हें **धम्म-महामात्र** कहा गया। उनका काम था कि वे गांव-गांव नगर-नगर जाकर लोगों को सही **व्यवहार** की बातें बताएं। उसने कई खंभों और चट्टानों पर अपने संदेश खुदवाए।

आओ अशोक के कुछ संदेश पढ़ें–
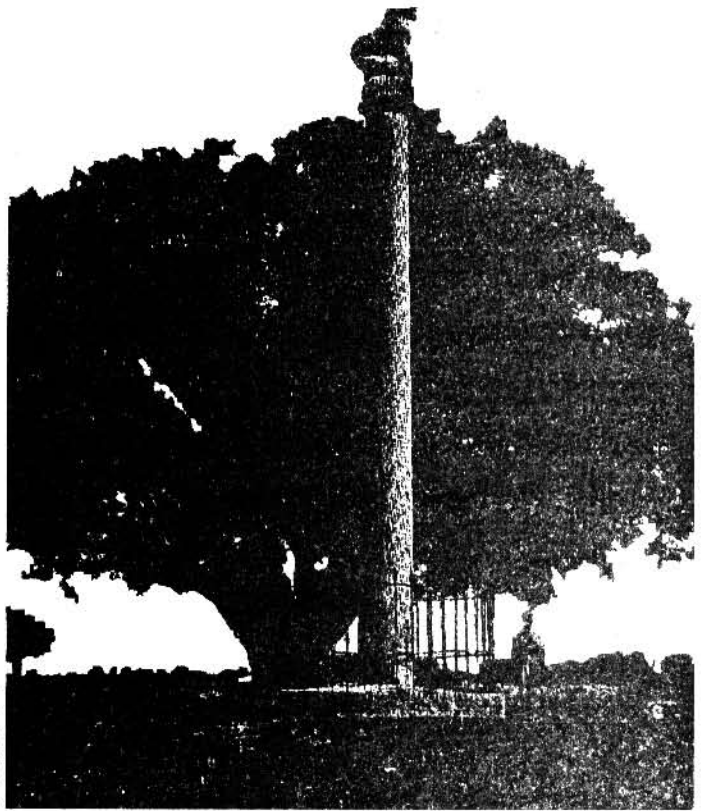
बिहार राज्य में बना अशोक का एक स्तंभ

1. "यहां किसी जीव को मारा नहीं जाएगा। और उसकी बलि नहीं चढ़ाई जाएगी। पहले राजा की रसोई में सैकड़ों हज़ारों जानवर रोज़ मांस के लिए मारे जाते थे। पर अब सिर्फ तीन जानवर मारे जाते हैं, दो मोर और एक हिरण। ये तीन जानवर भी भविष्य में नहीं मारे जाएंगें।

*2. "लोग तरह-तरह के **अवसरों** पर तरह-तरह के **संस्कार** करते हैं। जब बीमार पड़ते हैं, जब लड़के-लड़कियों की शादी होती है, जब बच्चे पैदा होते हैं, जब यात्रा पर निकलते हैं आदि। महिलाएं खासकर बहुत से ऐसे बेमतलब के संस्कार करती हैं।*

ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलने वाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलता है। वे क्या हैं? वे हैं, गुलामों और मज़दूरों से नम्रता से व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव-जंतुओं से संयम से व्यवहार करना, ब्राह्मणों और भिक्षुओं को दान देना आदि।

*3. "अपने धर्म के **प्रचार** में संयम से बोलना चाहिए। अपने धर्म के गुणों को बढ़ा-चढ़ा कर कहना या दूसरे धर्मों की बुराई करना दोनों ग़लत हैं। हर तरह से, हर वक्त दूसरे धर्मों का आदर करना चाहिए।*

"अगर कोई अपने धर्म की बढाई करता है और दूसरे धर्मों की बुराई करता है तो असल में वह अपने धर्म को नुकसान पहुंचाता है। इसीलिए एक दूसरे के धर्म की मुख्य बातों को समझना और उनका सम्मान करना चाहिए।

अशोक अपनी प्रजा को क्या-क्या बातें सिखाना चाहता था? चर्चा करो।

अशोक ने अपने संदेशों को अपने अधिकारियों के हाथ दूसरे राजाओं के दरबार में भी पहुंचाया और उनसे दोस्ती की। उसके अधिकारी मिस्र, यूनान और श्रीलंका के राज्यों तक उसके संदेश लेकर गए।

अशोक खुद बौद्ध धर्म को मानने लगा था। उसने बौद्ध संघ और बौद्ध भिक्षुओं के **मठों** की सहायता की। वह बुद्ध के जन्म स्थान भी गया। (लुंबिनी वन नाम की यह जगह आज नेपाल देश में है।) वहां उसने लुंबिनी गांव के लोगों पर से बलि नाम का कर हटा दिया।

बौद्ध धर्म को मानते हुये भी अशोक ने राज्य के सभी धर्मों को दान दिया और सहायता दी। उसने अपनी प्रजा से भी बार-बार यही कहा कि वे सभी धर्मों की बातें सुनें और किसी धर्म का अपमान न करें। उसने लोगों से ब्राह्मणों और भिक्षुओं दोनों को दान देने के लिए कहा।

अशोक लोगों को अच्छी बातें सिखाने के साथ-साथ उनकी भलाई के लिए कई काम करना चाहता था। उसने लोगों की भलाई के लिए कई जगह सड़कें बनवाई, उनके दोनों तरफ छायादार व फलदार पेड़ लगवाए, हर आधे कोस पर कुंएं बनवाए और यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालाएं बनवाई। वह अपने राज्य का धन इस तरह लोगों की मदद करने के लिए खर्च करना चाहता था।

अशोक अपने से पहले आने वाले राजाओं से किन बातों में अलग लगता है?

तुम्हें अशोक में ऐसी क्या बातें नज़र आई जिनके कारण आज भी उसे याद रखा जाना चाहिए?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. राजा अशोक के ऐसे दो फैसले बताओ जो हिंसा को कम या खत्म करने के लिए किए गए थे।
2. अशोक ने युद्ध छोड़ने के बाद लोगों पर अपना प्रभाव बनाने की किस तरह कोशिश की?
3. क्या युद्ध छोड़ने के बाद अशोक एक कमज़ोर राजा बन गया? अपने विचार समझा कर लिखो।
4. पृष्ठ 68 और पृष्ठ 90 के मानचित्रों की तुलना करते हुए बताओ कि दोनों में बताई बातों में क्या अंतर हैं?
5. शिकारी मानव के समय से लेकर अशोक के समय तक बहुत समय बीता।

   क) इस बीच क्या-क्या हुआ, सही क्रम में जमाओ-

   सिन्धु घाटी के शहर, बुद्ध, खेती की शुरुआत, महाजनपद, अशोक, शिकारी मानव, छोटे जनपद, पशुपालक आर्य।

   ख) इनमें से कौन सा समय सबसे ज़्यादा आज जैसा लगता है और क्यों?

मध्य प्रदेश में अशोक के शिलालेख और खंभे पर लेख

सीहोर जिले में बुदनी से रेहटी जाने की सड़क पर एक गांव है **नपटी तलाई**। इस गांव के पीछे जो पहाड़ और जंगल है उनके बीच एक गुफा है। गुफा की दीवार पर शिकारी मानव के चित्र बने हैं। उसी दीवार पर एक तरफ राजा अशोक का एक संदेश लिखा हुआ है। यह आज भी साफ दिखाई देता है।

इस जंगल भरे इलाके में राजा अशोक का संदेश क्यों और कैसे आया होगा? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि पहाड़ी पर बौद्ध भिक्षुओं के रहने की जगह बनी हुई थी। **स्तूप** भी बने थे। कमरों और स्तूपों के टूटे-फूटे पत्थर और फर्श अभी भी बचे हुए हैं। शायद राजा अशोक का कोई राजकुमार या महामात्र नर्मदा किनारे रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के पास आया था और राजा का संदेश लाया था।
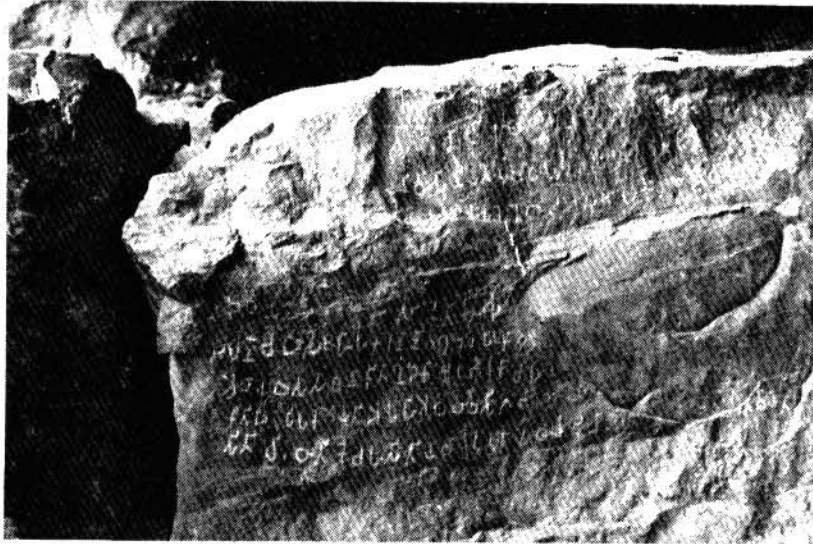
नपटी तलाई का शिलालेख

ऐसा ही एक और शिलालेख जबलपुर के पास **रूपनाथ** नाम के गांव में मिला है।

तुमने **सांची** के बारे में ज़रूर सुना होगा। तुममें से कईयों ने सांची के प्रसिद्ध स्तूप देखे भी होंगे। इस स्तूप की शुरुआत अशोक के समय में ही हुई थी। यहां पर एक बहुत ही ऊंचे चमकीले खंभे पर अशोक का संदेश खुदा है। इस खंभे पर चार शेरों वाला अशोक चिन्ह रखा हुआ था। यह चिन्ह अब एक संग्रहालय में रखा हुआ है।

12. विदेशों से व्यापार और सम्पर्क

राजा अशोक की मृत्यु के लगभग 50 साल बाद यूनानी राजाओं ने उत्तर-पश्चिम में अपना शासन जमाया। ये वो लोग थे जो **यूनान** से सिकन्दर और सेल्युकस के साथ आए थे और **मिस्र, ईरान** और **अफगानिस्तान** में आकर बस गए थे।

इस बीच दक्षिण भारत में सातवाहन वंश के राजाओं ने अपना अधिकार जमाया। कुछ समय बाद पश्चिम भारत पर शक वंश के लोग और उत्तर पश्चिम पर कुषाण वंश के लोगों ने अपना अधिकार जमा लिया। कुषाण और शक **मध्य एशिया** और **चीन** से संबंध रखते थे।

इस तरह के राज्य बनने से भारत, यूनान, रोम, मिस्र, ईरान, मध्य-एशिया और चीन के बीच खूब लेन-देन चलने लगा। भारत से माल लेकर व्याप.ारी उन देशों में जाते, वहां की बनी चीज़ें यहां लाते। उन देशों के व्यापारी भी यहां आते थे।

संसार के मानचित्र में इन सब जगहों को ढूंढ लो। ध्यान रखना यूनान के लिए ग्रीस शब्द का प्रयोग होगा; और रोम आज इटली नाम के देश की राजधानी है।

सिक्के

इस व्यापार के कारण यहां की कई चीज़ों पर विदेशों का भी असर पड़ा। उदाहरण के लिए सिक्के बनाने का नया तरीका।

ये देखो यूनानी और कुषाण राजाओं के सिक्के - किसी पर राजा का चेहरा बना है तो किसी पर राजा की पूरी आकृति बनी है और साथ ही कुछ लिखा भी है। ये सिक्के सोने या चांदी को पिघलाकर और सांचों में ढालकर बनाए जाते थे। इन राजाओं के सिक्कों को देखकर दूसरे राजाओं ने भी सांचे में ढालकर सिक्के बनाने शुरू किए; इससे पहले सिक्के बनाने का तरीका दूसरा था। तुमने महाजनपदों के समय के सिक्कों के चित्र पृष्ठ 71पर देखे हैं।

क्या वे इन सिक्कों से अलग दिखते हैं? वर्णन करो।

महाजनपद के सिक्के चांदी के बनते थे।चांदी की चादर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता था। फिर उन टुकड़ों पर राजा अपना ठप्पा लगवाता था।

यूनानी सिक्के

कुषाण सिक्का

मूर्तिकला

भारत में मूर्तियां बनाने के ढंग पर भी विदेशी कलाकारों का असर पड़ा। यह देखो मथुरा क्षेत्र में बनी बुद्ध की मूर्ति।

इस समय गन्धार के कलाकार भी बुद्ध की मूर्तियां बनाते थे। यह उनके द्वारा बनाई गई एक मूर्ति देखो।

मथुरा शैली की मूर्ती

गन्धार शैली की मूर्ती

कोई फर्क दिखाई दिया?

मूर्ति के कपड़ों की चुन्नटें कहां के कलाकार ज़्यादा दिखाते थे?

बालों के घुंघरालेपन को कहां के कलाकार ज़्यादा उभारकर बनाते थे?

क्या तुम्हें और भी कोई फर्क दिख रहा है?

यह फर्क कैसे आया? भारत के उत्तर पश्चिम में गन्धार के पास यूनान, रोम और मिस्र के कलाकार आकर बसे थे। इन लोगों ने भारत के लोगों को अपनी मूर्तिकला सिखाई और भारतीय मूर्तिकारों से उनकी कला सीखी। गन्धार के कलाकार वैसी मूर्तियां बनाने लगे जैसी यूनान व रोम के कलाकार बनाते थे।

हफ्ते

आजकल हम महीनों को सप्ताह में बांटते हैं, और सप्ताह को सात दिनों में। हर दिन को सूर्य, चन्द्रमा और ग्रहों के नाम से बुलाते हैं। जैसे-रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार ...... पर ऐसा हम हमेशा से नहीं करते आये हैं। यह प्रथा हमने यूनानियों से सीखी। इससे पहले दिन गिनने के और तरीके थे। क्या तुम्हें इन तरीकों के बारे में पता है?

धर्मों का आदान-प्रदान

यह वो समय भी था जब भारत से बौद्ध श्रमण और ब्राह्मण मध्य एशिया और चीन गए और उन्होंने

विचार वहां के लोगों के बीच फैलाये। इसी समय ईसा मसीह का एक शिष्य इसाई धर्म का प्रचार करने रोम के व्यापारियों के साथ दक्षिण भारत आया। उसका नाम संत थॉमस था।

कुल मिलाकर यह ऐसा समय था जब दूर-दूर के देश के लोगों ने एक दूसरे से संपर्क स्थापित किया, व्यापार किया, चीज़ों, विचारों और रीति रिवाज़ों का आदान प्रदान किया।

आयुर्वेद

इन्हीं दिनों बीमारी और **चिकित्सा** का व्यवस्थित अध्ययन किया जाने लगा। लोगों को क्या-क्या बीमारियां होती हैं, अलग-अलग बीमारियों के क्या-क्या लक्षण हैं, उनका क्या इलाज हो सकता है - आदि बातों का अध्ययन करके पुस्तकें लिखी जाने लगीं। चरक नाम के एक महान वैध्य ने 'चरक संहिता' नामक पुस्तक इसी विषय पर लिखा। इस तरह के प्रयासों से **आयुर्वेद** नाम की चिकित्सा का तरीका बना। इसमे बीमारियों से कैसे बचें और स्वस्थ जीवन कैसे बिताएं - इस विषय पर लिखा है।

व्याकरण

भारत के सबसे महान चिंतकों में से पाणिनि एक हैं। पाणिनि ने भाषाओं का बहुत गहराई से अध्ययन किया और एक बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी जिसका नाम है, 'अष्ठाध्यायी'। यह पुस्तक संस्कृत भाषा के व्याकरण पर है - इसमें शब्द कैसे बनते हैं, वाक्य कैसे बनते हैं आदि विषयों पर लिखा है।

अभ्यास के प्रश्न

1. मौर्य वंश के बाद शासन करने वाले वंशों के नाम बताओ।
3. भारत से किस दिशा में जाने पर यूनान व रोम मिलेंगे?
7. विदेशों के असर से भारत में
   क) सिक्के बनाने में क्या फर्क आया? ख) मूर्ति बनाने में क्या फर्क आया? ग) दिन गिनने में क्या फर्क आया?
8. भारत से कौन-कौन लोग दूसरे देशों को जाते थे और क्यों?
9. अलग-अलग समय के सिक्कों की अपनी पहचान होती है। क्या नीचे दिए चित्रों में से जनपदों के सिक्के व कुषाण वंश के सिक्के अलग छांट सकते हो?

10. कौन सी मूर्ति मथुरा के मूर्तिकारों ने बनाई है और कौन सी गन्धार के मूर्तिकारों ने? पहचानो!